उत्तराखड के वनो में

(निबध)

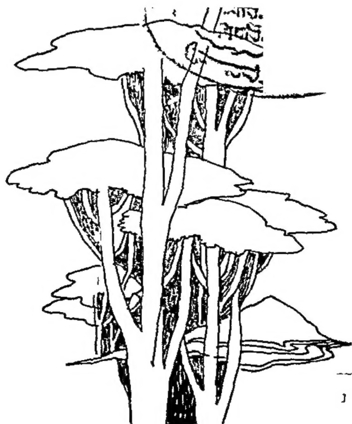
प्रस्तुत पुस्तक हिंदी अकादमी, दिल्ली, के
आर्थिक सहयोग से प्रकाशित



ज्ञान भारती
4/14 रूपनगर दिल्ली 110007

उत्तराखंड के वनों में

सुदर्शन सिंह रावत



ज्ञान भारती
4/14 रूपनगर
दिल्ली 110007
द्वारा प्रकाशित

सर्वाधिकार
श्री सुदर्शन सिंह रावत ● मूल्य 30 00

प्रथम संस्करण
1989

शुक्ला प्रिंटिंग सर्विस
दिल्ली 53 में मुद्रित
[387 1 11 589/G]

UTTARAKHANDA KE VANON MEIN (Essays)
y Sudarshan Singh Rawat Rs 30 00

प्रस्तावना

ं- से भरपूर आध्यात्मिक और धार्मिक तीर्थस्थलों और
ल। की पावन भूमि उत्तराखंड म ज मे और पले श्री सुदर्शन
की यह पुस्तक 'उत्तराखंड के वनो म' उनके अथाह ज्ञान-
उनके गहन अध्ययन का परिणाम है। बचपन से ही
। ी प्रवृत्ति के रहे हैं। सघन जगलो, दुर्गम गिरि कदराओ
कर प्रकृति के नाना प्रकार की वनस्पति के सपर्क म रहना
त। रहा है। इ ही यात्राओ के दौरान इनका सपर्क
। और सिद्ध पुरुषो से भी होता रहा है, और उनके सपर्क मे
ेने अथाह ज्ञान भी अर्जित किया है। इसी का परिणाम है कि
की लेखनी से इस तरह की दुर्लभ पुस्तक प्रकाश मे आ

।। समय ये लोग' एक लेख है, जिसमे आजादी के बाद भारत
। के बावजूद उत्तराचल के लोगो को ठग विद्या मे माहिर
ी ी किस प्रकार भ्रमित कर ठग रहे हैं, इसका सटीक
। किया गया है।

। बोक्साड लेख मे श्री रावत ने कार्बेट नेशनल पार्क और
के बारे मे कई रहस्यमय अनूठे और अनजाने तथ्यो का
कथ। है। यह लेख अपने ढग का अनूठा और अद्वितीय है।
प्रतिभा और जिज्ञासा इस लेख मे बहुत सुदर ढग से
+।

'शिकारी की मौत' लेख म जो मात्र लेख ही नहीं, एक कहानी भी है बहुत प्रभावशाली ढग से लेखक ने एक भोटिया कुत्ते का अद्‌भुत साहस और पराक्रम के साथ दो बाघा के साथ लडने की अविस्मरणीय कहानी लिखी है जो रोचक भी है और ज्ञानप्रद भी।

हिमपात' लेख म लेखक न बफ पहाडो म क्या-क्या प्रभाव डालती है इसका सटीक और सुदर चित्रण किया है। शीतोष्ण और समशीतोष्ण प्रदेशा म बफ का क्या प्रभाव होता है लेखक न इस पर विशेष खोज की ह और उसके अनुभव इतने सटीक और सजीव है कि लेखक का लोहा मानना पडता है।

लुहाचौड के जगल मे' लेखक की कहानी के रूप म जगलो मे रहनवाले अनेक जानवरा की प्रवृत्तियो व उनके क्रिया-कलापो का एक सुदर वत्तात है। यह लेख बालापयोगी भी है और वयस्को के लिए भी समान रूप से ज्ञानवद्धक है।

अपनत्व की अटूटता' की कहानी बहुत ही मार्मिक है और यह नेपाली डोटियालो के जनजीवन पर आधारित है, जो अपने देश से बहुत प्रेम करते हैं। भारत म रहते और काम करते हुए भी ये हमेशा देश के बारे म सोचते रहत हैं।

'विद्या की जडी' लेख एक ज्ञानपूर्ण और विद्यार्थियो के लिए पथ प्रदशक के रूप मे है। इस लेख मे बहुत सुदर ढग से बताया गया है कि विद्यार्थियो के लिए मेहनत के अलावा कोई विकल्प नही है। उन्ह मेहनत करनी ही होगी। ऐसी कोई जडी नही होती, जिसे पाकर विद्यार्थी पास हो सकें।

अपना घर' कहानी मे लेखक ने उन तथ्या को सटीक ढग स उभारा है, जो मानव के साथ उनके जीवन म घटित होती रहती है। कभी कभी गलतफहमिया के कारण या दूसरे लोगो के बहकाये जान के कारण परिवार से दूर रह रहे व्यक्ति के प्रति अपने ही परिवार क लोग गलत धारणा ले बठते हैं।

इस कहानी मे यह तथ्य विशेष रूप से उजागर होता है कि कई बार पति-पत्नी के मन मे भी सदेह की दरार पड जाती है जिसके

कारण उनका सुखमय 'अपना घर' एक दु खमय घर मे परिणत हो जाता है और मानव जीवन के लिए यह स्थिति फिर बहुत घातक सिद्ध होती है।

श्री रावत की यह पुस्तक निस्सदेह हिंदी जगत् मे अपना स्थान बनायेगी। सघन जगलो, पवतो, साधु और सतो के बीच रहकर उन्होने अपना अधिकाश समय व्यतीत किया है, और उन्हीं अनुभवो के आधार पर यह पुस्तक आधारित है। मैं रावत जी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हू।

—डॉ० हीरालाल बाछोतिया

प्रवक्ता
सामाजिक विज्ञान एव मानविकी
रा० शै० अनुसधान एव प्रशिक्षण परिषद
नयी दिल्ली

क्रम

अपनत्व की अटूटता

असूज वृद्धावस्था के अंतिम चरण में था। स्यूसी के तराई भाग में धान की फसल पक चुकी थी। ग्रामीण युवतियां खेत खलिहानों में उल्लास और ममभरे गीतों का गान कर रही थीं। उनके कोकिल कंठ से प्रसारित लय पहाड़ी प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य में नया निखार उभारती थी। गीत सुख और दुःखमय जीवन के प्रतीक थे। मैं भाव-युक्त होकर सड़क के किनारे खड़ा मधुर लय का रसपान कर रहा था। धीरे-धीरे मधुर लय प्राकृतिक सौंदर्य में विलीन हो गयी। युवतियों के गीत मन पर छप गये।

मैं उस ओर चल पड़ा, जहां एक लड़का वर्तुल श्वेत शिला पर बैठा धान काटने वालों की ओर मुंह किये सिसकियां भर रहा था।

मैंने पूछा, "क्या साहब, रो क्यों रहे हो ?"

लड़का मौन रहा।

मैंने पुनः पुचकारते हुए कहा, "क्यों जी, आप क्यों रो रहे हो ?"

लड़के ने झट से उत्तर दिया, "नवयुवतियों के मधुर लय और मम-भरे गीतों ने मुझे अपने देश की याद दिला दी। इसलिए मन उदास होकर नयनों में जल भर आया, बाबू जी!

"मनुष्य परदेश में स्वतंत्र रहकर कितना ही ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत कर रहा हो और नित चुपड़ी रोटियों का स्वाद ले रहा हो, परंतु उतना आनंद कहां जितना स्वदेश में रहकर सादा जीवन व्यतीत करने, रूखा सूखा खाने व ठंडे पानी के पीने से प्राप्त होता है, बाबू जी!"

पुन आह भरते हुए लडके ने लबी सास ली और कहा, " अहा ! प्रकृति की गोद मे सजी मखमली घास से ढकी ऊची नीची डाडी वाठिया, तितलिया के सुदर पखा जसे फूला से सजी सीढीनुमा कदरीली घाटिया वागाना म उगी बेलिया नदी तटा म मछुआरा की लबी ता‍न व डाडा के सिरा पर सुबह का सपनीली घाम, अहा ! गारो के गले म वजती घटिया की भनकार व खेता म दौडते बडे बैला के खावरा की रनरणा हट, एकाएक ऐसे दश्य मन को लूटकर आखा के आगे तसवीर से उतरते चले आते हैं, वाबू जी ! क्या कह, मे तो अभागा हू जा विरान मुल्क म आ पहुचा। नसीव नसीव की बात है अपन देश की रूखी सूखी रोटी ही सही, जो मन म मीजकर पट भर देती है वाबू जी !

वह मनुष्य नहीं, जिसे अपनी ज मभूमि से मोह नहीं। कुछ भी हो देश तो अपना ही प्यारा लगता है वाबू जी ! म ता इस समय मिलिटरी म होता देश की खातिर मरता और लडने भिडनेवाले जवाना के मन म देशप्रेम का जादू भर देता। यहा तो कुछ भी काम नहीं मिलता सिवाय खेता मे हल चलाने या सडक के किनार रोडी कूटने के ! "

छोटे लडके की बाते सुनकर म धक रह गया। पूछा, घर कहा है ?"

जवाब मिला नपाल म।"

"अच्छा तो तुम छोट डोटी हो ?

"जी हा मैं छोटा डोटी हू। लोग मुझे बूढ़ा पुकारते ह। सुना है आपने, नपाल म कुडल का सेत्रपाल बहुत प्रसिद्ध है।'

"परिवार म कितन सदस्य हो ?" मन पूछा।

' अब मुझे पता नही, जब मैं दस साल का था ता पारिवारिक कम-जोरी के कारण एक मेठ के साथ इस मुल्क म आ पहुचा। मुझे याद नही, सिवाय छाटे भाई के जिसकी याद हमेशा मरी आखा म सावन-भादा जैसा नीर वहाती रहती है, वाबू जी मा बाप हाते ता अवश्य मेरी खाज करते।"

"यहा किसके साथ रहते हो ?"

"देखा, सामनेवाला सफेद मकान, खेता मे खडा वह व्यक्ति जो फसल निहार रहा है उसका हईया हू।"

"अच्छा ता घर जाना चाहते हो ?"

लालसा जागकर दब जाती है, बाबू जी जाऊ ! कैसे, रास्ता भूले हुए कई साल बीत चुके हैं।

डोटी नेपाल का रहनेवाला जो इलाके के कर्मचारियो से तग आकर बहुत दिनो के लिए पडिडा म आ बसा था। वह लाह और पीतल के टूटे हुए बतनो की मरम्मत भी करता था। उसके सबध मे मैंने लडके से पूछा "क्या तुम डोटी को जानते हो ? वह तुम्हारा निकट सबधी है।

'नही बाबू जी, कहा रहता है डोटी ?"

"नयार के पास मास्टर जी के मकान म वह लोहार और सुनार का काम करता है। तुम्हे उससे मिला दू ? सुना है वह कल ही नेपाल से आया है।'

'जी हा।"

लडका बडी उत्सुकता से मेरे साथ मुश्किल से चार कदम चला था कि उसे खलिहान से आवाज सुनायी पडी—"बूढे, धान का थैला घर ले चल।"

उसके चेहरे पर उदासीनता की झलक बिखर चुकी थी।

"अच्छा बूढे मैं चला कल दिवस होते ही यहा घूमने आऊगा।" मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा।

"बाबू जी, नमस्ते।"

'नमस्ते भया ! ' कहकर मैं भी घर की राह पर चल पडा।

दूसरे दिन पौ फटते ही सब लोग चारो ओर खलिहानो म धान माडते दृष्टिगत होने लगे। मैंने सोचा, क्यो न स्यूसी की ओर चला जाऊ शायद कही बूढे लडके से मुलाकात हो जाय।

सूर्य की लाल रश्मियो से प्राकृतिक वातावरण मनमोहक हो उठा। मैंने स्यूसी की राह ली और चल पडा। कुछ ही कदम चला था कि देखा, बूढा लडका हाथ मे पीतल का बर्तन थामे डोटी के मकान की ओर

अग्रसर हो रहा था।

"बाबू जी नमस्ते !"

"नमस्ते बूढे," मैंने मुसकराते हुए कहा, "अरे कहा जा रहे हो?"

डोटी के मकान तक।"

क्या काम है?"

देखा यह पीतल का टूटा बर्तन, इसकी मरम्मत करवाने आया हू, बाबू जी !"

मैंने जोर से आवाज दी, "डोटी, डोटी बहिना, क्या अभी तक स्वप्न की दुनिया म खोये हो?

डोटी ने चारपाइ से निद्रा अवस्था म अपनी भाषा म कहा, मैंई उठि, उठि बहिना।

'तुम्हारा भाई बहिना" मैंने कहा।

'बैठोई बठोई इति, इतना' कहकर डोटी चारपाई से उठकर बाहर भपर के पास आकर कहने लगा बाबू जी, मेरे घर म एक लिफाफा आयो है बहिना मैंई सोच म पड गया हू।"

"क्या लिखा है डोटी? मैंने पूछा।

'बाबू जी लिफाफे के अदर एक छोटा क्वीलू का टुकडा और सूखी लकडी का एक टुकडा भेजा है। साथ म लिखा है जिस दिन तुम घर से गये थे उसके दूसरे दिन बडा लडकाओ भी एक मेठ के साथ इस मुल्क म आयो। मेठ वापिस आ गया है पर लडका न आया। तुम्हारे और लडके दु:ख म मैं क्वीलू और सूखी लकडी जसी। क्या करू बहिना, भगवान ही मालिक च हो बहिना।

कुछ ही क्षणो बाद डोटी ने अपना भपरा तयार किया और टूटे हुए बर्तन की मरम्मत कर दी।

मैंने डोटी से वृद्ध लडके का परिचय कराया। डोटी अच्छी तरह हिंदी भाषा नहीं जानता था, इसलिए मैंने उसकी मातृभाषा म कहा, डोटी बहिना, तुम्हार गाव काओ की नाम च?'

की नामच बहिना?' डोटी ने पूछा।

लोग मुझे बूढ़ा कहते हैं, डोटी।' लडके ने कहा।

"की यही बूढ़ा," डोटी विस्मित होकर हस पड़ा, "वहा बूढ़ा, बहिना।"

"जब मैं दस साल का था तो किसी कारणवश यहाँ आ पहुँचा। डोटी, मेरी एक कहानी है जो कहानी बनकर रह गयी।"

मैंने कहा, "डोटी, क्या तुम इसका गाँव जानते हो?"

डोटी विस्मय मे बूढ़ लड़के के मुह की ओर एकटक होकर देखने लगा। मानो उसे देखकर डोटी को अपने खोये हुए लड़के की याद आ गयी हो और वह उसे जानता हो।

पिता की नाम करी बहिना ?" डोटी ने पूछा।

'मैंने नही जानता डोटी, सुना है, पिता जी इसी मुल्क म लोहार और सुनार का काम करते है।"

डोटी ने बूढ़े लड़के के हाथ म पीतल का बर्तन देते हुए कहा 'बहिना, कहीं बहिना से मैंई आऊ, थेले म धान देई।'

बूढ़ा चला गया। डोटी अपने खोये हुए लड़के की याद म खो गया। उसे ऐसा महसूस हो रहा था, मानो वही उसका खोया हुआ लड़का हो और वह उसे जानता हो।

नाटे कद के डोटी ने मुझसे कहा, "बहिना, लड़का ऐसा मानो मेरी लड़के की सूरत ठम।"

मैं सब कुछ समझ रहा था, डोटी उसको देखकर इतना व्याकुल क्यों हुआ।

सध्या का वातावरण मन पर जादू सा छा गया। समय बीत चुका था। मैं पैदल पच्चीस मील आगे प्राकृतिक क्षेत्रों का भ्रमण करने निकल पड़ा। प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने म मैंने काफी समय व्यतीत किया। सौभाग्यवश जब कभी स्यूसी की ओर पहुचता तो बूढ़े लड़के की आवाज को बैलों व खेतों के मध्य गूजते सुनता या शतीर ढोनेवालो के बगल म चिलम पीते देखता।

तभी वह कहता, 'बाबू जी, आ गये न, जरूर कुछ लाये होंगे।' मैं उसे एक सिगरेट की डिब्बी देकर टाल देता। बूढ़ा लड़का प्रमुदित हो उछल पड़ता। बोलता 'बाबू जी, आप मेरे अपने हो न तभी तो मुझे

एक सिगरेट की डिब्बी दे जाते हो।"

'नही बूढे, ऐसी बात नही क्या डाटी से मुलाकात की ?" मैंने उसकी बात काटते हुए कहा।

'अवसर नही मिला बाबू जी, फिर मिलूगा। अब मुझे दृढ विश्वास है कि मैं अपना मुल्क अवश्य देखूगा और मुल्क की खातिर फौज म भर्ती होऊगा !" उसकी वाणी मे अमत व नयना म दिव्य ज्योति झलक रही थी। लडके की भावनाओ व मेरे मन की प्रेमभरी प्राकृतिक भावना के बीच प्रेम का एक अटूट सा तार जुड गया।

स्यूसी के तराई भाग म खग्ग चल रही थी। फसल कही नामाकित भी न थी सिवाय पूव दिशा के। मोटर मे बैठकर मैं पडिडा की ओर चल पडा। मैंन प्रमुदित हो मोटर म बाहर दृष्टि दौडायी। देखा, बूढा लडका पीठ पर भारी पिटठू कसे पडिडा की ओर आ रहा था। मैंन आवाज दी, 'बूढे !' मोटर की गति म धीमापन आया और तत्क्षण मोटर घूमस्थल पर आ खडी हुई।

मोटर म उतरकर मैं नीच की ओर जा पहुचा, जहा पर डोटी टूटे हुए बतनो क लिए मपर स आग धौंक रहा था।

खडा होकर बोला बाबू जी, नमस्ते !"

मैं डोटी स बाता म गुथा हुआ था, तभी क्षणभर म बूढा लडका आ पहुचा। उम देखकर डोटी उदास हो गया। बोला, बूढे कहा जा रहे हो ?'

आपके पास कुछ दिना क लिए, मन हैडया का काम छोड दिया।"

निकट सबधी हो तो क्या हुआ, यह परदेश क विराना मुल्क ठहरा।'

बूढा मन म गम सा गया।

म सब कुछ सुन रहा था, मेरे बाबा जी की तुम्हारी जसी सूरत है। जब बाबा घर स भागा था तो मेरी एक छोटी-सी तसवीर उनकी जेब म रह गयी।

तसवीर का नाम लेते ही डोटी की आखे उभर आयी। डोटी ने अदर जाकर लोहे ताबे व पीतल के टुकडो मे भरा एक धूल से सना सदूक खोला और मोम के मैले थैले से एक मैली-सी तसवीर निकाल लाया। परतु तसवीर म चेहरा साफ नजर आता था। डोटी ने तुरन्त मन ही मन म लडके की शक्ल से तसवीर का मिलान किया। तसवीर लडके की थी, जो कई सालो से उससे वचित था।

अनायास ही बूढे लडके के मुह म उभर आया, 'डोटी! ऐसा मुल्क मे मिलता है न खूबसूरत हार घुणधाडी कौडी का झुम्मा। मेरे बाबा कहा करते थे कि मै तुम्हार लिए भी लाऊगा।"

घुणधाडी कौडी का झुम्मा सुनकर डोटी के हृदय म लडके की वात्सल्य जीवन की वह अमिट छाप उभर आयी, जिसके प्रति उसका हृदय अहर्निश सिसकता रहता था। उसकी प्रेमतपित दृष्टि लडके के मुख पर टिक गयी। बूढे लडके के हाथ पर बचपन मे आग से जला एक चिह्न भी था। अब डोटी लडके को भली भाति पहचान गया कि यह मेरा खोया हुआ पुत्र है। बूढे लडके को गले मे लगाकर डोटी फूट फूट-कर रोने लगा।

बूढे लडके न करुण स्वर म कहा, 'बाबा मने इस मुल्क मे रहकर बहुत दु ख पाया।'

डोटी ने विह्वल होकर कहा, 'बेटा स्वदेश मे पूज्य जननी को छोडकर परदेश मे जो दूसरे की मा की नि स्वार्थ सेवा करने मे समर्थ हो, उसका जीवन सघर्षमय ही नही बल्कि जीवनभेदक भी है।"

'बाबा, अपन स्वाभिमान को भूलकर जो मनुष्य जीवन रूपी सघर्षों मे हारकर परदेश म परदेशी पत्तलो पर खाना और स्वजनो का छोड-कर परदेशी स प्रीति करना सीख गया हो उसका जीवन सार्थक नही, निरर्थक है। वह उस जननी का पुत्र नही, कुपुत्र है। मैं तो बच्चा था, इसलिए इस मुल्क मे आ पहुचा।'

वार्तालाप का सघर्ष समाप्त हुआ। डोटी ने रोते हुए कहा, बाबू जी! आप ही तो मेरे ईश्वर हो, जो आपने मुझे मेरे खोये हुए पुत्र से मिला दिया। भगवान आपको चिरायु दे, बाबू जी!!" डोटी ने मम-

मेरे शब्दों को सुनकर मैं आत्मलीन होकर उदास हो गया व नैनों से अपनत्व की अटूटता देखकर नीर छलकने लगा।

मैंने गंभीर लंबे स्वर से कहा, "सहयोग या योग था डोटी, तुम्हारा मताप तप गया।"

डोटी मुझे रोकना चाहता था परंतु मैं रुका नहीं, क्योंकि दूर का सफर था और समय कम था।

मैंने मुसकराते हुए कहा, "मुझे जाने दो डोटी, देर हो रही है।

शिकारी की मौत

मुझे उत्तम नस्ल के कुत्ते पालने का गहरा शौक था। कुत्तों की जाति में सबसे उत्तम नस्ल, भोटिया नस्ल का कुत्ता पाया जाता है। अन्य नस्ल के कुत्तों की अपेक्षा भोटिया कुत्ता शारीरिक रूप में बड़ा खूखार व शक्ति में हिंसक पशु बाघ से कम जबरदस्त नही होता। बाघ भोटिया कुत्ते पर चोरी छिपे हमला करता है। अकस्मात् यदि दोनों में घोर द्वन्द्व हो जाये तो यह फैसला करना मुश्किल हो जाता है कि कुत्ता हारेगा या बाघ। भोटिया कुत्ते की खूखार व प्रबल शक्ति के आगे कभी कभी हिंसक पशु बाघ को मात खानी पड़ती है या जान से हाथ धोने पड़ते है। भोटिया कुत्ते की आवाज में इतनी गर्जना होती है कि छोटे छोटे कुत्ते ही नही बल्कि छोटे बड़े जंगली जानवर दुम दबाकर भाग खड़े होते है।

विशेषकर उत्तराखंड में पर्वतीय वन क्षेत्रों के लोग जो सघन जंगलों के मध्य गांव बनाकर बसे है वे लोग अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बछियों व फसल को हानि पहुंचाने वाले जंगली जानवरों से रक्षा के लिए भोटिया कुत्ता को पालते है। भोटिया लोग—जो पर्वतीय क्षेत्र में दूर-दूर जहां अब भी मोटर-मार्ग नही है उन स्थानों तक अपनी भेड़ बकरियों की पीठ पर सामान लादकर ले जाते है। ये भोटिया लोग अक्सर अर्द्धरात्रि में अपना रास्ता नापते है। इसलिए भेड़ बकरियों की रक्षा हेतु ये लोग भोटिया कुत्ते पालते है। इन्ही भोटिया लोगों से उत्तराखंड के पर्वतीय लोग भोटिया कुत्ते के बच्चे खरीदते हैं।

मेरा एक अपना मोटिया नस्ल का जबरदस्त कुत्ता था। इस पिल्ले को मैंने ढिकाला वोवमाड म माटिया दादा स पचास रुपये म खरीदा था। उस समय यह छोटा बच्चा था। बचपन से ही मैं उस 'शिकारी' के नाम ग पुकारता था और आखिरकार बाद म 'शिकारी' के नाम स विख्यात हुआ। शारीरिक शक्ति म शिकारी अद्वितीय और रग रूप मे बडा भयकर लगता था। दूर दूर के ग्राम्य क्षत्रा म उसके खूखारपन की बडी धाक थी। क्या मजाल कोई व्यक्ति या जाव रात्रि के मध्य गाव मे आ आये। इसलिए मैं इसको हमेशा लाहे की एक मोटी जजीर से बाधकर रखता था। जब कभी मुझे जगली जानवरा का शिकार करना होता ता म शिकारी को अपन साथ ले जाया करता था।

शायद आप उत्तराखड स अपरिचित हा। उत्तराखड म तोलियू डाडा एव कूरली फाट का सघन वन बहुत प्रसिद्ध है। जानवरो म घुईड, काखड, बारहसिंगे शैल जगली सूअर भालू व बाघ बहुतायत स पाये जात हैं। घुईड काखड, बारहसिंगे व शैल इस जगली क्षेत्र म वस लोगा की फसल को अधिक क्षति पहुचाते है। बाघ व भालू का आप जगल म चरते भेड बकरियो व गाय बछियो के मध्य आसानी से देख सकत है। यह एक अतिशयोक्ति नही है। आप बाघ व भालू का इस प्रकार देख सकते हैं, जिस प्रकार आप अपन घर म बिल्ली को भ्रमण करते हुए देखत है। यह बात सत्य है। इस क्षेत्र म बस लोग इन हिंसक पशुआ से नही डरते और न ही हिंसक पशु मनुष्य पर आक्रमण करते ह। क्योंकि बचपन से इनका परस्पर मेलजाल मनुष्य से होता है। बाघ बकरिया का सफाया अवश्य करता ह। जगल के मध्य कोई भेड बकरी या गाय-बछिया अपने साथ के पशुआ से बिछुड जाय तो उस जानवर को ढूढना नही पडता। ग्वाला समझ जाता है कि उसे बाघ ने मार दिया है।

जगल का विस्तार बडा व सघन हाने से खोय हुए जानवर का ढूढना बडा कठिन है। दक्षिण दिशा म यह जगल कालागढ जगल के तराई भाग से मिला है। आगे सपाट भावर का मदान है। दूसरी ओर पूव म मदरासों व सुहाचौड क जगल स सबधित है, शेष भाग उत्तर म

दीवा जगल स मिला ह । कालागढ म कालागढ डाम के बनन एव डाम मे पानी की वढोतरी से ढिकाला बोक्साड के सघन जगला स इस कूरली फाट व तोलियू डाडा की ओर शेर व अ य व य प्राणिया का आगमन शुरू हो गया था।

इसी तोलियू डाडा के मध्य वसे लोगा स मेरा एक गहरा सबध था और अब भी है। एक बार मेरे कुछ सवधिया न मुझे अपन शुभ काय म सम्मिलित हाने के लिए तालियू डाडा आन का आमत्रित किया। म उस काल गाव म था। एक सप्ताह पश्चात मैं अपने शिकारी को साथ लेकर तोलियू डाडा की ओर चल पडा। कुतूहलभरी नमदा एव गहरे नीले रग की पवतमालाआ का सौरभमय दिव्य आकार मन को प्राकृतिक सौंदय म डुबा रहा था। प्राकृतिक दृश्या का रसपान करता, नदी-नाला एव भयकर पत्थर घाटिया को पार करता हुआ म सध्याकालीन समय पर तालियू डाडा जा पहुचा। पैदल यात्रा बडी प्रमादमय एव रमणीक थी। मेरे शिकारी म सबसे बडी यह विशेषता थी कि वह दूसरे गाव मे जाकर बहुत अच्छा स्वभाव बरतता था, फिर भी लोग उसके खूखारपन से डरते थे।

असूज का महीना था। उस समय पवतीय क्षेत्र में मौसम बडा सौरभमय रहता है। प्रकृति का हर जोव उस मौसम मे अपने पूण यौवन मे झूमता दष्टिगोचर होता है। उस मौसम म ग्रामीण कृषक लोग रात्रि को अपन समस्त पालतू पशुआ के साथ खतो म गोट बनाकर रहते हैं। उत्तराखड के पवतीय इलाका मे गोट बनान का एक बहुत ही पुराना रिवाज है। गोट करने से जानवरा के मलमूत्र स खेतो की उपजाऊ शक्ति बढती है। इस प्रकार गोट बनाने से गहू की फसल म खाद डालने की आवश्यकता नही पडती है। दूसरी बात, इस मौसम म धूप बडा तेज पडती है। कडी धूप से बचने के लिए ग्रामीण कृषक लोग अरुणोदय से पहले ही खेतो मे हल जोतकर यथासमय बैला का आराम देत है या खाली खेता म चरने के लिए छोड दत ह।

तीसरे दिन म और मेरे मित्र श्री तूफान शिकार खेलन के लिए कूरली फाट के जगल की ओर अग्रसर हुए। श्री तूफान अपने जमाने मे

प्रथम श्रेणी के निशानेबाजों में आते थे। पलक झपकने में ये दौड़ते हुए जंगली जानवरों व उड़ती हुई चीलों को जमीन पर ढेर कर देते थे। हम दोनों व्यक्ति आधा मील आगे जंगल में प्रवेश कर चुके थे। आखों के आगे कंटीली झाड़ियां थीं। झाड़ियों के पीछे एक घुईड चोर नजरों से करवटें बदलते भाग निकलने की कोशिश ही कर रहा था कि श्री तूफान ने गोली दागी और गोली लगते ही घुईड जमीन पर धराशायी हो गया। घुईड के जमीन पर धराशायी होने के उपरांत बाघ अपनी भयंकर गर्जना से जंगल को रौंदने लगा। कुछ समय पश्चात धीरे धीरे बाघ की भयंकर हुंकार कानों से दूर दूर होती चली गयी। मैंने समझा, शायद गोली घुईड के वक्षस्थल को पार करती हुई सीधी बाघ पर जा लगी। कुछ व्याकुलता प्रकट करते हुए हमने मन में विचार किया, अब तो बाघ अवश्य गांव में कुछ न कुछ अपशकुन करेगा। यह बात सत्य है कि यदि बाघ पर बेकसूर प्रहार किया गया तो वह क्रोध में आकर भयंकर घातक सिद्ध होता है। मृतक घुईड को हम दोनों महाशयों ने साल की एक लंबी बल्ली पर बांधा और तिरछा लटकाकर ले आये। प्राणमुक्त घुईड को देखकर शिकारी प्रफुल्लित होकर नाचने लगा। सब गणमान्य अतिथियों ने घुईड का शिकार खाया और शिकारी ने पेट भरकर बचे हुए मांस का स्वाद लिया।

बाघ एक शक्तिशाली हिंसक पशु है। छल कपट विद्या में बाघ अन्य हिंसक पशुओं की अपेक्षा ज्यादा चतुर है। इसकी घ्राण शक्ति बड़ी प्रबल होती है। दूसरे दिन बाघ ने अर्धरात्रि के मध्य गोठ में जाकर चार बकरियां व तीन भेड़ों का खून पीकर मौत के घाट उतार दिया। ग्वालों ने एक बकरी को बाघ के मुंह से छुड़ा दिया था। मुंह से छूटे हुए शिकार को बाघ कभी नहीं छोड़ता। वह उसे प्राप्त करने के लिए बार-बार प्रयास करता है चाहे शिकार को प्राप्त करने में भले ही उसकी जान चली जाय।

दिन ढल चुका था। निशा सुंदरी काला कंबल ओढ़ दूर कहीं पहाड़ की चोटियों व नदियों की गहरी सपाट कंदरीली घाटियों के ऊपर अपना काला ओढ़ना बिछाती चली आ रही थी। धीरे धीरे जंगलों में

निवास करनेवाले भुनभुनो के अप्रिय शब्दों से निस्तब्धता भी सहम उठ चुकी थी। केवल प्राकृतिक सौंदर्य में एक ही शोर वाह-वाह गूंज रहा था। कापुल पाको, कापुल पाको, इस निस्तब्धता मे इस पक्षी की मम-भरी मीठी आवाज वन्य प्रदेशो मे किसी किसान की विरही व [illegible] की याद दिला रही थी। रजनीकात की शीतल किरणें धीरे-धीरे प्रकृति के सजीव प्राणियो से आखमिचौनी खेल रही थी, जगली गाव होने के कारण चारो तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा छाया हुआ था। रात्रि भोज करने के पश्चात् मैं और शिकारी बगले मे जाकर सो गये। कुछ ही क्षणो म मै गहरी निद्रा के स्वप्नलोक में खो गया। अधरात्रि का पहर रहा होगा। शिकारी भयकर आवाज मे भूकने लगा। मेरी निद्रा टूट गयी और मैं जाग गया। मैंने सोचा, शायद बाघ यहा आ पहुचा है। मैंने चारो ओर दृष्टि दौडायी। देखा तो चाद की स्वच्छ किरणें अधरात्रि के युगलगणो के साथ किलोलें कर रही थी। निस्तब्धता मे गाटियारो का केवल एक शब्द गूज रहा था—वाह वाह!

उस रात बाघ ने एक बूढी गाय का खून पिया और गाय को कलमट में ले जाते समय छोड गया था।

उत्तर दिशा म भोर का तारा अपनी दिव्य ज्योति के साथ उदित हो चुका था। साथ ही रजनीकात भी पवतो के पीछे सुबह होने का आह्वान देने जा छिपा था। रात खुलने मे थोडी देर बाकी थी। गोट से तीन गोटियार मेरे पास बगले मे आये और कहने लगे, 'साहब, आज बाघ को अवश्य मौत के घाट उतार दिया जाय। आपका शिकारी कब काम आयेगा।"

कुछ समय पश्चात् पौ फट गयी। भगवान भास्कर भी उदयगिरि पवत से उदित हो चुके थे। गाव के प्रत्येक व्यक्ति के मुह पर उदासीनता की लहर छा चुकी थी। तब मैंने गाववालो को समझा बुझाकर एक स्थान पर एकत्रित होने को कहा। लोग एकत्रित हुए और मैंने एक योजना बनायी

"कलमट के पास जो साल का बडा पेड है, उस पेड पर पच्चीस या तीस फुट की ऊचाई के बीच मचान लगाया जाय और जिस स्थान मे

गाय मेरी पडी है, उस स्थान से किसी भी दिशा म दो फुट गहरा, तीन फुट चौडा और पाच फुट लबा एक खडडा बनाया जाये। जब हम मचान पर चढ जायेंगे तो गाव का कोई भी व्यक्ति अपने घर से बाहर आने की कोशिश न करे, जब तक कि हम आप लोगो को घर से बाहर आने को न कहें।"

सब ग्रामवासी मेरी इस बात पर सहमत हो गये। ग्रामवासियो ने मिलकर कुछ ही क्षणो म साल के वृक्ष पर मचान तैयार कर दिया और भूमि पर ढेर हुई गाय से बीस फुट की दूरी पर खड्डा बनाया, जैसा हम बनाना चाहते थे।

भगवान भास्कर पर्वतो की धार पर डगमगा रहे थे और मेरे दिल की धडकनो की गति म दुद्धष शका आने लगी कि अब शिकारी की क्या दशा होगी। भगवान न करे शिकारी बाघ की करवट म आ जाये, नही तो मारा जायेगा। डर की हीन भावना को मन से हटाने के लिए मैंने अपने मन को सुदृढ किया और शिकारी के गले पर एक मजबूत लोहे का नुकीला काटेदार मोटे चमडे का पट्टा बाध दिया। इस चमडे के पट्टे को कुत्ते के गले मे बाधने से बाघ कुत्ते को नही मार सकता है और न ही जबरदस्त कुत्ते को लडाइ मे परास्त कर सकता है, क्योकि बाघ अपना जबरदस्त हमला किसी भी जानवर के गदन पर करता है। इस लिए पटटा कुत्ते का एक प्रकार का जिरह बख्तर था।

भगवान भास्कर का उदगार विलीन हो चुका था—निशा की आशा बाकी थी। मैंने और मेरे मित्र श्री तूफान ने समय से पूर्व ही रात्रिभोज का आयोजन किया और शिकारी को भी पेट भरकर भोजन करवाया। मेरा भोटिया कुत्ता सब कुछ समझता था। मूक पशु होने के नाते वह हमसे कह नही सकता था। मैंने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कलमट के पास ले जाकर बनाये गये खडडे म रख दिया और ऊपर से सूखी घास व पेड की छोटी छोटी टहनियो से ढक दिया ताकि बाघ यह न समझ सके कि यहा मेरा कोई घातक बैठा है। यह कार्य करने के तत्काल बाद मेरे मित्र श्री तूफान ने राइफल म गोली भरी और दोनो व्यक्ति पेड के ऊपर बने मचान पर जा बठे। मचान साल की घनी पत्तियो से आच्छा-

दित था और मचान पर दुबकी लगाये हमें काफी समय बीते गया। रजनीकांत की कर निकर धवल दिव्यद्युति मे बिखर चुकी थी। प्राकृतिक वातावरण मनमोहक था परतु मेरे लिए एक अजीब नीरस दृश्य था। मैं मन ही-मन आतुर सताप से घुट रहा था और गला सूख रहा था।

यदि शिकारी मारा गया तो मेरे जीवन की एक अगाध चोट होगी। मैंने शिकारी को एक बच्चे की तरह पाला है। बस, इतना ही सोच पाया था कि दूर अद्ध अधकारमय गहरे कटीले कलमट मे एक चितकबरा ढेर सा लुढकता दृष्टिगत हुआ। मैंने मन मे अनुमान लगाया, शायद वह खूख्वार बाघ ही हो सकता है। धीरे-धीरे काला चितकबरा ढेर नजदीक आता दिखायी पडने लगा। रात्रि के समय बाघ की आखो म चमक की बडी प्रबलता होती है। इसलिए बाघ से नजर मिलाना मुश्किल हो जाता है। बाघ मरी हुई गाय से पचास फुट की दूरी पर आकर टकटकी लगाय खडा हो गया। मेरे मित्र श्री तूफान ने मेरी ओर आखो मे सकेत किया— 'गोली मार दू।' यदि उस काल बाघ को गोली मार दी जाती तो बाघ एक ही गोली खान पर जमीन म ढेर हो जाता। परतु अक्ल और शारीरिक माद्दे की कमी से गोली न चल पायी। हमने देखा, बाघ बडी निर्भीकता से मरी हुई गाय की ओर अग्रसर हुआ और नजदीक आकर एकदम रुक गया। शायद उसे कुत्ते की गध महसूस हो गयी थी। बाघ ने इधर उधर अपनी दृष्टि दौडायी। परतु क्रोध के नशे म चूर होने के कारण वह मरी गाय पर झपटा और धीरे धीरे उसे गहरे कलमट की ओर लुढकाने लगा। उस समय शिकारी बाघ को खाई से दुबकी लगाकर निहार रहा था। तब तक वह बाघ पर नहीं झपटा। पता नहीं, शिकारी को क्या करना उचित रहा होगा या वह शायद अपना दाव देख रहा हो। बाघ ने मरी गाय का एक जोर का झटका दिया और गाय सीधी खाई के किनारे पर जा पडी। ठीक हुआ कि गाय गड्ढे में नही गिरी नही तो शिकारी को चोट आ जाती। तभी बाघ धमाके से गाय के ऊपर मास खाने के लिए चढ बैठा। शिकारी ने खड्डे से बाघ के ऊपर घातक छलाग लगा दी और पलक झपकते ही

बाघ पर टूट पडा। बस, फिर क्या था, दोना दैत्याकार पशुओ म घमासान युद्ध छिड गया। बाघ और शिकारी घातक पराक्रम से लड रहे थे। दोनो का रूप बडा भयकर लग रहा था। मानो दो भूखे बाघा के बीच शिकार को प्राप्त करने के लिए लडाई छिडी हो। हम कुत्ते को पूर्ण शक्ति से लडत देख रहे थे। मुझे कुत्ते के निडर साहस पर बडी प्रसन्नता हुई कि कुत्ता बेधडक होकर बाघ का मुकाबला कर रहा है। क्या मजाल कि बाघ उसे जमीन पर चित कर दे। कभी-कभी बाघ रणस्थल छोडने का प्रयास करता। परतु कुत्ता उसे अपनी प्रबल शक्ति से गार देता। दोनो का द्वद्व बडा आकषक लेकिन भयभीत करन वाला भी था। जुते खेत म घुटने घुटन तक गहरे खडडे हो गये थ। कुत्ते का साहस उत्तेजित करने के लिए हम दोना ने मचान के ऊपर से शोर मचा दिया। शोर सुनकर कुत्ते के अथाह साहस एव शक्ति का ठिकाना न रहा। एक घटे तक बाघ और कुत्ते के मध्य भयकर युद्ध जारी रहा। इस अवस्था मे बाघ पर गोली चलाना उचित न था, क्याकि जिस तरफ निशाना साधा जाता उसी ओर कुत्ता टारगेट बनता। एक बार तो कुत्ते ने बाघ को अपने नीचे दबोच लिया और मुह से गभीर अवस्था में बाघ के ऊपर प्रहार किया परतु बाघ बाघ ही था, उसका मुह व आगे पीछे के पजे लडाई के समय एकसाथ मार करते हैं और कुत्ते का मुह और अगले पजे लडाई मे काम करते हैं। इसलिए बाघ फिर बडी फुर्ती से उठ खडा होता। यह एक आश्चय की बात थी। बाघ ने कुत्ते को ऐसा दाव मारा कि कुत्ता सिर के बल खडडे मे जा गिरा और साथ ही बाघ खडडे मे कुत्ते के ऊपर धमक पडा। फिर दोना में भयकर लडाई शुरू हो गयी। मचान के ऊपर से मैं और मेरे साथी श्री तूफान देख रहे थे कि कुत्ता कुछ परास्त-सा होता चला जा रहा था और बाघ का खूख्वारपन भी ढल रहा था। दोना की इस अवस्था का देखकर मेरे मित्र को एक बार खाली फायर करना पडा। शायद फायर की आवाज सुनकर बाघ घबरा गया और भाग निकलने के लिए पूरी ताकत से छलाग लगाने की कोशिश करता जान पडता था। बाघ पद्रह फुट ऊची छलाग मार सकता है। ऊची व लबी छलाग लगाने मे बाघ कम जबरदस्त नही होता।

बाघ ने एक लंबी छलांग लगायी और भयंकर गर्जना करता हुआ एक पेड़ के छायावाले कलमट में जा गिरा। शिकारी खड्डे से बाहर खेत में चक्कर लगाकर भौंकने लगा।

प्रकृति का घना व शांत वातावरण मन में डर की भावना को उत्तेजित कर रहा था। फिर भी हम साहस कर निर्भीकतापूर्वक मचान से नीचे उतर आये। नीचे उतरकर हमने कुत्ते को बड़े प्यार से पुचकारा और देखा कहीं बाघ ने कुत्ते पर अपने जहरीले नाखून तो नहीं मार दिये। हमने कुत्ता ठीक अवस्था में पाया। तत्काल हमने घर की राह ली और घर जाकर थोड़ा धूम्रपान करके लेट गये। पर इस अवस्था में नींद भी कैसे आती। विश्राम अवस्था में लेटे लेटे भोर हो गयी।

सुबह की श्यामल ज्योति ने गांव में लोगों के मुंह की उदासीनता को हटा दिया। बहुत संख्या में लोग हमें और शिकारी को देखने के लिए बंगले में एकत्रित हुए, जहां हम तीनों ठहरे हुए थे। फिर भी हमें संदेह था कि बाघ धोखे से मार करेगा। इसलिए बाघ को मारे बिना चैन न लिया जाये। दोपहर के भोजन के पश्चात मैं थी तूफान व शिकारी गाय बछिया व बकरियों के साथ बड़े चौड़े खेतों की ओर चल पड़े। खेतों की छोर पर घना जंगल लगता था। हम भी खेतों के उसी छोर की तरफ चल पड़े। उस तरफ झाड़ियों में अपने दो बच्चों के साथ छुपी बाघिन ने एक बकरी को जोर का झटका देकर कलमट में खींच दिया। शिकारी भी गोली की तरह बाघिन पर धमक पड़ा। दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। बाघिन इस जबरदस्त कुत्ते के साथ युद्ध न करती परंतु उसे डर था कि कहीं कुत्ता उसके बच्चों को न मार दे। मां की ममता की कोई सीमा नहीं होती। बच्चों की रक्षा के लिए बाघिन शिकारी से लड़ रही थी। दुर्भाग्यवश मां को कुत्ते के साथ अकेला लड़ते देखकर बाघिन के बच्चों से न रहा गया और दोनों बच्चे रणस्थल पर आकर कुत्ते से मुकाबला करने लगे। एक बच्चा आगे से और दूसरा बच्चा पीछे से कुत्ते पर वार करने लगे। परंतु बच्चे होने के नाते वे भयंकर कुत्ते का मुकाबला न कर पाये और लड़ते लड़ते बाघिन का एक बच्चा मर गया। बाघिन एक बच्चे को साथ लेकर गुर्राती हुई जंगल

की ओर भाग गयी।

तमाशा समाप्त हुआ। बाघिन के मरे हुए बच्चे को हम घर ले आये। घर लाकर मगूदास ने उसकी खाल निकालकर बगल के पास सुखाने के लिए बास के एक डंडे पर खड़ा कर दिया। उस रात बाघ और बाघिन ने गाव वालों को इतना अधिक परेशान किया कि सुबह होने पर भी लोग घरों से निकलने में भयभीत हो रहे थे। इस अवस्था का निपटान के लिए हमने मजबूर होकर बदूक से हवाई फायर किये। तब कहीं लोग अपने घरों से बाहर निकले।

मैंने कई बार अनुभव किया, जब कभी मेरे निजी व्यक्तित्व में उदासीनता आ जाती है, तो मैं समझता हू या तो मेरे ऊपर कोई संकट आ गया है या कोई हानि अवश्य होगी। खेतों में हल चलाते कृषकों को देखकर मुझे अचानक अपने घर की याद आ गयी और उदासीनता ने मन पर अपना अस्तित्व जमा लिया। मैं समझ गया, आज अवश्य कोई खतरा सामने आने वाला है। मैं उदासीनता की गहराई में डूब गया।

दिन का भोजन करते समय मेरे मित्र श्री तूफान ने मुझे उदास देखकर कहा 'क्या आज इतने उदास क्यों हो ?'

मैंने गभीर स्वर में उत्तर दिया, "तबियत कुछ खराब सी लगती है, इसलिए मन उदास हो गया।'

सही बात मैंने श्री तूफान को नही बतायी। मैंने उन्हें राइफल में गोली भरने को कहा। श्री तूफान ने राइफल तैयार की और कहा "चलो खेतों की ओर चलें, किसी जगली जानवर का शिकार करेंगे। तब मैंने श्री तूफान जी को वास्तविक बात बता दी "आप होशियार रहिए कहीं हम जान से हाथ न धोने पड़े। मेरी उदासी यही व्यक्त करती है।'

मेरे भावात्मक शब्दों को सुनकर श्री तूफान मद शब्दों में बोले, "यह आप क्या कह रहे है! इस प्रकार की घटना कभी नही घट सकती है।'

गिरारी हमारे साथ साथ चल रहा था। मैंने फिर श्री तूफान को सचेत किया, "आप होशियार रहिए। दोस्त! समय समय की बात है,

समय के बराबर शक्तिशाली कोई भी नहीं होता है।"

लोग खेतों में अपने कृषि कार्य में संलग्न थे। कोई हल चला रहा था तो कोई अपनी गाय बछियों व भैंसों के लिए घास काट रहा था। हम उनसे वार्तालाप करते हुए जंगल के ऊपरी चौड़े मेंड पर जा खड़े हुए। पता नहीं, दुश्मन कब से शिकारी की ताक पर झाड़ियों में घात लगाये बैठे थे। गलती इतनी हुई कि शिकारी हमसे सौ मीटर आगे सीधा खेत की छोर पर जा पहुंचा। हमारी आंखों पर पर्दा पड़ते ही दोनों बाघ और बाघिन खूंखार ढंग से शिकारी पर टूट पड़े। बस, तब पाषाण हृदय वाले दैत्याकार पशुओं में विकराल युद्ध छिड़ गया। अब शिकारी दो बाघों से लड़ रहा था। इसलिए शिकारी अपनी जान पर खेलता नजर आ रहा था। हम भयवाउल से हक्बका गये और अपने मुखारबिंदु से एक भी शब्द न निकाल सके। आधे घंटे तक हम बहागी की हालत में तीनों हिंसक पशुओं का घोर संघर्षमय अकल्पित तमाशा देख रहे थे। कुछ चेत में आने पर मैंने जोर का शोर मचाया था। कृषक लोग अपना कारोबार छोड़कर अपने साथ हथियारों को लेकर घटनास्थल के नजदीक एकत्रित हो गये मैंने चिल्लाकर श्री तूफान को गोली चलाने का आदेश दिया, परंतु श्री तूफान घबराहट से इतने व्याकुल हो गये थे कि गोली न चला पाये। लोगों ने 'वाह वाह' का बड़ा शोर मचाया परंतु सब कुछ निरर्थक था। कुत्ता साहस और प्रबल शक्ति से लड़ रहा था और बाघ व बाघिन अपने खोये हुए बच्चे का बदला लेने में जुटे हुए थे। कई बार बाघिन शिकारी के नीचे दब जाती। कभी बाघ गिरता कभी कुत्ता। बाघ फुर्ती से उठकर फिर भिड़ जाता। इनकी भयंकर लड़ाई सात खेतों तक जारी रही। तमाम छोटी छोटी सभी प्रकार की जंगली घासनुमा झाड़ियां व पौधे टूटकर तहस नहस हो गये।

एक प्रबल शक्ति दो भयंकर शक्तियों से लड़ रही थी। मैं सब कुछ देख रहा था। कुत्ता परास्त होता चला जा रहा था। मैं सब कुछ समझ रहा था कि शिकारी अब मारा गया। मैंने चिल्लाकर श्री तूफान से गोली चलाने को कहा। कुत्ते की दुर्दशा देखते हुए श्री तूफान की आंखों में आंसू छलक आये और उन्होंने निशाना जमा दिया। गोली बाघिन के पेट में

जा लगी और आहत बाघिन अचेत होकर जमीन पर गिर पडी। कुत्ते का दुर्भाग्य इतना ही हुआ कि कुत्ता बाघ के साथ बाघिन के ऊपर से लड रहा था। बंदूक की आवाज सुनकर बाघ भागना चाहता था, किंतु शिकारी के तेज दांत बाघ की गर्दन को बुरी तरह जकड चुके थे। वह कुत्ते का आखिरी दाव था इसलिए बाघ रणक्षेत्र से भाग न पाया। कुत्ते के नीचे हतचेत पडी बाघिन ने प्राण त्यागते समय अपने तेज नाखूनों से शिकारी का पेट फाड डाला। शिकारी का मुंह बाघ के गले से छूट गया और वह करुणामय आवाज में कराहता जमीन पर चित हो गया। हिंसक पशु बाघ घायल अवस्था में भाग निकला। गांव के सब लोग मृतक बाघिन व शिकारी के पास गये। शिकारी की मृत्यु के शोक में मैं और साथी श्री तूफान भाव विह्वल होकर रो पडे। मैंने कहा, 'मैंने शिकारी को बच्चे की तरह पाला था। मैं शिकारी के बिना नहीं रह सकता हूं।' मेरे दुःख की सीमा न रही। करुणापूर्ण मन से गांव वालों ने मुझे दिलासा देते हुए कहा, 'मन में दुःख मत करो साहब जो होना था, हो गया है। आपका शिकारी मरा नहीं, वह जिंदा है। शिकारी की निर्भीक वीरता अविस्मरणीय रहेगी, जब तक उत्तराखंड के इस तोनियू डांडा व कूरली कांठे के सघन वन में हिंसक पशु बाघ विचरण करते रहेंगे।'

हृदय में दुःख यौवन में था। उस काल प्रकृति का सौंदर्यमय शांत वातावरण भी काटने खाने को आता था। उदासीन मन और चक्षु ज्योति से ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रकृति भी शिकारी के मृत्यु शोक पर नयन-नीर छोड रही हो।

अनायास ही मेरे दुखित हृदय में उभर आया, अहा ! कुदरत का खेल निराला है। होनी बलवान है प्रकृति की गोद में न अब शिकारी का खेल होगा और न अब शिकारी से मेरा मेल होगा।'

घटनास्थल पर एकत्रित लोगों ने दुःख के साथ शिकारी को दफना दिया। मैं उस स्थान पर खडा खडा फूट फूटकर रोने लगा।

शिकारी को दफनाकर हम सब व्यक्ति गांव की ओर चल पडे। घर पहुंचकर मैंने भोजन नहीं किया। शिकारी के मृत्यु शोक में रात्रि

भोज छोड़ना पड़ा। गाव वालो ने मुझे बहुत समझाया, परन्तु मेरा मन न माना। मेरी आखो के आगे केवल शिकारी का सजीव चित्र घूमता नजर आता और मैं शोकाकुल होकर मौन हो जाता।

दूसरे दिन मैंने अपने कधे पर अपना एक लबा थैला लटकाया और खाली हाथ तालियू डाडा से अपने घर की ओर चल पड़ा। गाव वाले मुझे शिकारी के बदले में कुछ देना चाहते थे, परन्तु मैंने लेने से इन्कार कर दिया। मेरे गाव छोड़ते ही गाव में सन्नाटा छा गया। दो मील तक मुझे छोड़ने के लिए मेरे साथी श्री तूफान व चाचा कैप्टेन भूपेंद्र आये। वे मुझे नदी पार छोड़ आये। उन्हे घर वापस जाता देखकर मैं फूट फूटकर रोने लगा। मैंने उनसे इतना ही कहा 'शिकारी का खेल और मेरा मेल अब कभी नहीं होगा।"

अकस्मात अब जब कभी मैं उस नस्ल के कुत्ते को देखता हू तो शिकारी का सजीव चित्र मेरी आखो के आगे दुम हिलाकर नाचने लगता है। तब मैं भावविभोर होकर नेत्र मूद लेता हू। अब केवल एक लालसा है, सफेद भोटिया घोड़ा रखने की।

ढिकाला वोक्साड मे

समय अधिक गुजर चुका था। न भाटिया घोडा ही खरीद पाया और न भोटिया कुत्ता ही। शिकारी के वियोग मे हृदय म दु ख यौवन मे था। सोचा, हृदय म सुख का यौवन कैसे लाऊ। इसलिए मेरा आपा विचलित था। सोचा, समय आन दो, एक बार ढिकाला वोक्साड जाकर सुप्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट के एक मात्र याद दिलाने वाले बगला को निहारा जायेगा और साथ ही शिकारी की याद भुलाने के लिए वही से भोटिया कुत्ते का एक पिल्ला लाया जायेगा।

समय प्रकृति का आचरण करता हुआ धीरे धीरे ढलता गया और मैं भी समय की प्रतीक्षा मे समय ढालता गया। ऋतु शीतकालीन न थी। पतझड का यौवन भी वृद्धावस्था मे आकर समाप्त हो चुका था। शनै शन यौवनी अपने यौवन यागवल्ल से नव उमगित सौंदय मे विक सित होने लगी, साथ ही प्राकृतिक सौदय हर प्राणी का अपन यौवन भोग के लिए विचलित करने लगा था। धरा का यौवन यौवनी के यौवन से मेल कर बैठा और प्रकृति के मनमोहक सौदय को निहारकर मेरा हृदय यौवनी के यौवन से सपक जोड उठा।

प्रकृति का उभरता यौवन मुझे विचलित कर रहा था। मेरा विचलितपन एक ही बात का सकतक था, केवल ढिकाला वोक्साड को निहारने का। नियमानुसार धीरे धीरे प्रकृति का यौवन ढलता जा रहा था और मेरे मन म पतझड आता जा रहा था। सोचा, 'समय आ चुका है। चलू, ढिकाला वाक्साड को।

समय बीत चुका था। प्रकृति के नियमानुसार ग्रामीण क्षेत्र में खेतों की जुताई का कार्य आरंभ हो गया, इसलिए ढिकाला बोक्साड का सिद्धत स्थगित करना पड़ा। समय लौट आया क्योंकि खेतों में जुताई का काम समाप्त हो आया। प्रकृति का संकेत कर्मयोगमय था इसलिए ढिकाला बोक्साड के लिए यथासमय योजना बनायी। बड़े सोच विचार से योजना का योग निकाल सोचा, सिद्धत को सफल बनाने का श्रेय कौन लेगा, परंतु श्रेय का भागीदार कोई न बन सका। नयन-लोचन व हृदयमोचन प्रकृति का सौंदर्यरूपी यौवन भी निखरता चला जा रहा था। हृदय में उभार आया। एकांत में ही ढिकाला बोक्साड का सिद्धत करना ही श्रेयस्कर होगा। चाहे वह सुखमय हो या दु:खमय।

मोटरमार्ग निकट निर्मित होने से दूसरे दिन में प्रातःकाल के मोटर में बैठकर तराई भाग वाले वन के चिमठा नामक स्थान के समक्ष उतर गया। अधलोट जंगल का नीरस वातावरण निहारने से आँखें के आगे काले रंग के प्रतिबिंब छाने लगे। मेरी शारीरिक व मानसिक उत्तेजना शिथिल होने लगी और मैं मानसिक और शारीरिक संतुलन खो बैठा।

कदम आगे बढ़ने से विरत हो गये। मुझे हतोत्साह देखकर अचानक पीछे से आकर एक वृद्ध महात्मा ने कहा, "आप अभी इतना घबरा गये कि जो समझ से बाहर है और यदि सामने शेर आ खड़ा होता तो ? काम हिम्मत का है।" मैं स्वयं मन में सोचने लगा होनी का होना और कालचक्र दोनों का सहयोग कुछ करके मुझे वियोग में डालना चाहता है। वास्तव में जंगल का वातावरण उतना भयंकर न था जितना कि जंगल में छोटी-छोटी वन कंदराओं के अंधकारमय खोकों में उगे बौने व कंटीली झाड़ियों का, क्योंकि शेर, बाघ, भालू, चरक, चीता और अन्य किस्म के हिंसक पशु ऐसे स्थानों में निवास करते हैं। साल के गगनचुंबी दरख्त तो सतयुगी पुरुषों के [illegible] वृक्षों को निहारने से ऐसा प्रतीत होता [illegible] मानो ये विशाल दरख्त ही कभी योगी पुरुष रहे हों, जो अपने तपोबल से अब वृक्षरूप धारण करके

मानव हित कर रहे हैं। कपरीली झाड़ियों से भागते छोटे व सजीव तो वयोवृद्धों के मुख से सुने जिम कार्बेट के अचूक निशान की याद दिलाते थे।

मुखामुख कठिनाइयों को परास्त कर हम ढुमडा पहुचे। हिंसक पशुओं में शेर, बाघ, चरक भालू, सूअर व जंगली हाथी जंगल के सभी भागों में पाये जाते हैं परंतु जंगली हाथियों के लिए ढुमडा बहुत ही प्रसिद्ध है। इस स्थान में रामगंगा और मदाल नदी का संगम होता है इसलिए जल पीने के कारण जंगली हाथियों का यह स्थान बहुत भाता है। ब्रिटिश शासनकाल में ब्रिटिश सरकार ने इस स्थान (ढुमडा) में जिम कार्बेट के लिए जंगल में निवास करने के लिए एक बंगला बनाया था, जिसे भारत सरकार के वन विभाग ने नया रूप देकर बदल दिया है जो अब रेंजर चौकी के नाम से प्रसिद्ध है। जिम कार्बेट के साथी कुछ ग्रामीण वयोवृद्ध कहते थे कि जिम कार्बेट ढुमडा और काला ढुंगी में ही अधिक समय व्यतीत करते थे।

ढुमडा की रेंजर चौकी में जंगलात के कुछ कार्यरत लोगों से हमारी भेंट हुई। उनके पास रुककर कुछ क्षणों के लिए हमने विश्राम किया और बाद में वन के रास्ते के बारे में पूछताछ करके खिनावली की ओर अग्रसरित हो गये। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते, आत्मा रोने लगती। शेर, भालू, बाघ व चरक के भय से नहीं बल्कि जंगली हाथियों के भय से, जंगली हाथी बड़े दुष्ट होते हैं।

रामगंगा पार करके हम बड़ी चतुराई से डरावने कला-कागल करते हुए खिनावली पहुचे। खिनावली पत्थरों से भरपूर एक निर्जन स्थान है। इसको खिनावली रोखड़ भी कहा जाता है। इस स्थान की चारों दिशाओं में वृक्ष महात्माओं की तरह तप करते जमघट लगाये खड़े थे, मानो योगी हजारों वर्षों से योग साधना में लीन एक पांव पर खड़े हों। इस स्थान से हिंसक पशुओं की खबर आसानी से ली जा सकती थी क्योंकि यह स्थान दूर तक खुला हुआ था और हमारी दृष्टि भी हमें प्रत्येक वन्य जीव से अवगत करा सकती थी। वन का विचित्र व भयंकर वातावरण हमें आगे बढ़ने से रोकता था, गहरे स्रोत, कपरीली

बेलिया, बान दरख्त व मालू, वृक्ष की लबी लताओ को निहारकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो भगवान दुष्ट मानव को उसकी मत्यु के पश्चात् उसे सजा देने के लिए इ ही कदराओ म तुच्छ जीव के रूप म ज माता होगा।

समय प्रबल था और हम निबल थ। शारीरिक सुरक्षा करत हुए हम रोखड पार करके जसे ही चढती राह पर चढने वाल थे कि दूर वन-कदरा मे दो शेरो की भयकर दहाड सुनायी दी। शेरो की हुकार से ज्ञात होता था कि पचानना म परस्पर द्वद्व छिडा हुआ था जो एक प्रत्यक्ष प्रमाण ह। विश्वविख्यात शिकारी जिम कार्बेट न इसी जगल मे वासित होन के नात इस बात का निरीक्षण किया कि जब दो शेरा म परस्पर द्वद्व छिड जाये तो शेर क्रोधवश होकर छत्तीस फुट की ऊची छलाग लगान म सफल हो जात है।

बस, फिर क्या था! हमे अपनी जान के लाले पड गय। शेरो की भयकर हुकार म जगल का शात वातावरण कोलाहल म बदल गया। जगली जानवरो मे भगदड मच गयी। पक्षियो का कोलाहल मन को और भी भयभीत कर रहा था। स्थिति बडी गभीर व नाजुक थी। सोच विचार हृदय म चल बसा था। दृष्टि ने सोच विचार का स्थान ले लिया था। शेरो के भय और जगल के अशात वातावरण स हम ऊची राह पर तेजी से कदम बढाते हुए मानसिक व शारीरिक कष्ट का परास्त कर मुडापाणी ग्राम म पहुचे।

भगवान भास्कर का तमतमाता उदकार शात होकर जगलो के ऊच शिखरा को लाघ चुका था। केवल लालिमा व्योम मे छायी थी। हमन परस्पर विचार विमर्श किया, रात्रि-विश्राम इसी ग्राम म होगा। आगामी सिद्धात उषाकाल। सध्या की बेला थी, वृद्ध महात्मा ने कहा, 'अब आप सुरक्षित स्थान म पहुच गये हैं। मैं आपके लिए रात्रि विश्राम का गाव म प्रबध करने क लिए जा रहा हू। आप कुछ देर यहीं खडे रहें।"

वृद्ध महात्मा चले गय। मैं अपरिचित स्थान म खडा अपरिचित-सा लग रहा था। समय अधिक हो चुका था। वृद्ध महात्मा की प्रतीक्षा म

मैं बेचैन हो रहा था परंतु वृद्ध महात्मा का कहीं नाम नहीं। सोचा, अपरिचित से परिचित होना निश्चित था। मन में भाव भरा नहीं, 'आप कौन ?' फिर सोचा, 'कौन-सा भय किसका, मनुष्य का या भगवान का ? न जाने किस भेष में मिल जाये भगवान, संकट तो टला।

जैसे-जैसे निशा का तम छाता चला आ रहा था, वैसे-वैसे मैं भी रात्रि विश्राम के लिए बेचैन होता जाता, क्योंकि जंगली क्षेत्र वाले ग्रामों में अनजान व्यक्तियों को रात्रि विश्राम के लिए स्थान नहीं दिया जाता है। कुछ कारणवश परिचय होने पर तब ग्राम प्रधान ने मेरे लिए रहने का विशेष प्रबंध किया और एक विशेष रात्रिभोज का भी आयोजन किया। धीरे-धीरे भोग काल का समय बीता। बाहर निशा का घना काला तम समस्त भूखंड को घेर चुका था। रात्रि के युगलगण भी सो चुके थे। वार्ता समाप्त कर मैं भी विश्राम करने लगा। जैसे ही नींद मुझे स्वप्नलोक में भ्रमण के लिए आमंत्रित करने लगी थी कि अचानक जोर से ठोकने की आवाज सुनायी पड़ी। मेरी स्वप्निल नींद सब विलीन हो गयी और मैं भ्रम से भयभीत होकर चारपाई पर लेटा भय से कांपने लगा। मैं सोचने लगा, 'अजीब तमाशा होता है इन जंगली क्षेत्रीय ग्रामों में, क्या ध्येय रहा होगा इन लोगों का यहां बसावट करने का ?' फिर रुक रुककर वही ध्वनि। ज्ञात होता था जैसे कोई दरवाजे के पास आकर ध्वनि परीक्षण कर रहा हो। अजीब सी आवाजों का था समावेश, लगता था, मानो क्या रह गया है अब शेष ! रात भर अनोखी बोलियां विचित्र और मानव जैसी भी। कौन से जीव होंगे, मनुष्य या जंगली पशु या कोई रातवसरू चिड़िया या रात्रि के योगी पुरुष या रात्रि के युगलगण ? निशा ढलने दो, उषाकाल किसी विद्वान ग्रामीण से इस विषय में ज्ञान प्राप्त कर समाधान करना है।

भयपूर्ण निशाकाल समाप्त हो गया। तब मुख उषा का देखा। नाश्ता करने के पश्चात मैंने ग्राम प्रधान से कहा, "क्या आप किसी विद्वान वयोवृद्ध से मेरी मुलाकात करवा सकते हैं ? मैं उनसे किसी विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।

कुछ ही क्षणों में प्रधान जी ने एक वयोवृद्ध को लाकर मेरे सम्मुख

बिठा दिया। मैंने कहा, "वयोवृद्ध, रात्रि काल मे मैंने सुनी अजीब, बडी विचित्र, बडी डरावनी आवाजें। आपसे क्या कहू, जो कहा नही जाता, कई प्रकार की आवाजो का समावेश।"

मेरी बात सुनकर वयोवृद्ध मुसकराते हुए बोले, "साहब, जगली गाव है। उल्लू, भूत, डायन, चुडैल, अहेडी जिन व फीडू आदि कई प्राणी है जो निशाकाल मे अजीब व विचित्र आवाजें निकालते ह। उन्ह रात्रि-निशाचर भी कहते है। शायद आपने वे आवाज सुनी और डर गये होगे। उनका वास निजन स्थाना मे अधिक रहता है विशेषत घने जगलो म, जैसे यहा।"

विवादग्रस्त विषय छोडकर मैंने कहा, "आदरणीय, आपको मेरे साथ ढिकाला और बोक्साड के सिद्धत पर चलना हागा। मैं उस क्षेत्र से अनभिज्ञ हू। विशेष रूप से आप जस विद्वान वयोवृद्ध से उस क्षेत्र के बारे मे मनोवाछित जानकारी प्राप्त करना चाहता हू। क्योकि आपका समस्त जीवन इसी प्रकृति की लीला म फला फला है इसलिए आपका ज्ञान मेरे लिए श्रेयस्कर हागा।"

वयोवृद्ध बोले, "शुभ काय में देर क्या ?"

वयावद्ध के स्वस्थ शरीर को निहारकर मेरा चित्त भरमा गया। सोचने लगा कदमूलो का देश है तो निजन, परतु रहनेवालो ने अच्छा किया है अपना स्वास्थ्य-सृजन।

मैंने कहा, "आप मुझे प्रत्यक्ष स्थान म अवगत करते हुए ढिकाला मे बाक्साड ले चलो, वहा दो दिन भ्रमण कर फिर यथास्थान पर लाट आयेंगे।"

वयोवद्ध बोले, "अवश्य। भोजन तैयार है, भोजन कर लो, तत्पश्चात ढिकाला चौट की ओर प्रस्थान करेंग।"

हमने यथासमय भोजन किया और बडी उत्सुकता से ढिकाला माग नापने लगे।

डर से मन विचलित हो रहा था। मैंने कहा, "वयोवृद्ध, वनमार्ग बडा विकट है। कोई खतरा तो मोल नहीं लेना पडेगा।"

दैत्याकार वन चटटानो का विकृत आकार और भयकर मनराधक, [illegible]

वातावरण म भीमकाय स्ररना का फलाव निहारकर अनगिनत कल्प नाआ का मन जनी वारार उप असहाय अबला की तरह माग द रहा था। लगता था मानो हिमक पशुआ म नासकर शेर अजगर व जगला हाथिया का यही आनद भवन हा।

वयावद्ध वाल हा वास्तव म प्रकृति ने जिनका जन्म दिया है उनक रहने व खान के लिए सब कुछ किया है। घबराओ नही यहा आप का पहली बार सिद्धत हुआ है इसलिए आपका कहना उचित है। मुझे ता इस प्रकार महसूस हा रहा है जस आपको अपने ग्रामीण क्षेत्र के स्वाश्र वातावरण म। साहब शेर व अन्य हिमक पशुआ स उतना खतरा नही है जितना कि जगला हाथिया का। सामना करेंगे, मं उपाय साधक हू।

अक्सर देखा गया है कि जगली क्षेत्र में निवास करनेवाले ग्रामीण खतरनाक स खतरनाक हिंसक पशु का आसानी म मुकाबला कर लेते ह।

धीरे धीरे वन माग तय हाता जाता और वयोवद्ध मुझे जगल क हर स्थान से परिचित कराते जाते। रुककर वाले, " सामन जा गहरा काली कन्दरा है उसके नीचे चौडे स्थान पर एक बार शेर और अजगर में घमासान लडाई छिडी हुई थी। मुझे ज्ञात नही है, दाना म लडाई का क्या कारण था। अजगर शेर का सिर अपने मुह म डालकर शेर का साबुत निगलना चाहता था परन्तु शेर शेर ही था। शेर न अपन तज नाखनो स अजगर के जबडे फाड दिय। परिणाम यह हुआ कि शेर और अजगर का रणस्थल म स्वगवास हा गया।

प्राय देखा गया है कि यदि शेर और अजगर की अकस्मात जगल म भेट हा जाय ता य हिंसक पशु अपनी जान की हिफाजत क लिए एक दूसरे का घातक चाट पहुचाते ह विशेषत जब अजगर को बड जानवर का शिकार करना हा ता वह जमीन म अपने लबे शरीर की कुडलिया बनाक अपना मुह छिपा देता है और दुर्भाग्यवश यदि किसी जगली जानवर का पाव अजगर के अपने शरीर द्वारा बनाये गये कुडला म पड

जाय तो अजगर उस जानवर के पाव को इतनी ताकत से कस देता है कि जानवर अपना पाव छुडा नही पाता और फिर धीरे धीरे अजगर अपना मुह जानवर क पास ले जाकर उसे साबुत निगल देता है। प्राय ऐसा भी देखा गया है कि हाथी, जिराफ व गेंडा को छोडकर अजगर अन्य सभी छोटे जगली जानवरो को अपना शिकार बना देता है।"

मैंने कहा ऐसा भी होता है जगलो मे ?'

वयोवृद्ध बोले 'हा, कई बार ऐसी घटनाए देखने म आती है विशेषत घने जगलो मे। जो व्यक्ति जगलो के वातावरण स दूर और अनभिज्ञ हो उन्हे क्या ज्ञान कि जगलो म किस प्रकार जीवन व्यतीत करना पडता है, जगली जानवरो से अपनी सुरक्षा कैसे की जाती है, कौन से हिंसक पशु की क्या प्रवृत्ति होती है उनसे अपने को कैसे बचाया जा सकता है। रुको मत, बढते चलो। मैं तुम्हे उस स्थान से अवगत कराऊगा जहा मैं एक बार अजगर का शिकार होने से बच गया।'

काफी आगे चलकर वयोवृद्ध ने बताया, सन् 1945 मे यह घटना घटी। सामने जो झाडियो से भरपूर दो घाटियो का सगम चौडे है, उस स्थान पर चिरान का काम चल रहा था। मैं काम समाप्त कर वहा से कुछ दूर कुजकठोली झाडियो के पास जा पहुचा। न जाने कब से वहा अजगर अपना मुह खोले पडा था। भाग्यवश मेरी दृष्टि अजगर के मुह पर जम गयी। यदि मेरी दृष्टि अजगर के खुले मुह पर न पडती तो अजगर अवश्य मुझे निगल देता। मैं बडी फुर्ती स जमीन पर पडे छोटे छोटे लकडी के फटे अजगर के मुह म डालता गया जब तक अजगर ने अपना मुह बद न कर दिया। फिर फुर्ती से भागकर दूर एक पेड की आड म खडा होकर अजगर को निहारता रहा। जगलात के कायरत लोग मुझे देखकर हक्काबक्का गये। मैं उनको आवाज देकर कुछ कह ता न सका क्योकि डर के कारण कुछ समय के लिए मेरी आवाज लोप हो गयी थी। उनके पास जाकर मैंने बडी देर बाद उनको सारी घटना का विवरण दिया जैसा मेरे साथ घटित हुआ था। तब वहा से सब लोग भाग निकले।

'दूसरे दिन अब चीलें जगलात के उस स्थान से कुछ दूरी पर

मडराने लगे तो मुझे ज्ञात हुआ कि अजगर मर गया है क्योंकि जब अजगर किसी चीज को निगल लेता है तो उसको पचाने के लिए अजगर पेड पर गोल फदे मारकर अपने शरीर को जोर से कसता है। निश्चय ही अजगर ने वैसा किया होगा और लक्डी के फटे अजगर का पेट फाड-कर बाहर निकल गये होंगे। इसलिए अजगर का मरना स्वाभाविक था।'

मने कहा आपने तो बडे साहस और वीरता का काय किया।'

वयोवद्ध बोले माहस और वीरता का क्या काय किया। अक्सर जगलो मे लोग इसी तरीके को अपनाकर अजगर स अपनी आत्मरक्षा करत है। घने जगलो मे लोगो के साथ इस प्रकार की कई घटनाए घटती रहती है।'

समय मध्याह्न का था। वयोवृद्ध बोले "निहार लो, यही है ढिकाला चाड।

वास्तव मे लगता था विराट वैरागिया का देश, ढिकाला चौड योगिया के योग साधना स्थान-सा विदित होता था। मानो योगियो का योगलोक और देवो का देवलोक यही स्थान हो। सपूर्ण वन म निजनता का वास मन मे अनोखी दुनिया की कल्पना करने को आतुर करता था।

कुछ समय पश्चात हम बोक्साड के इलाके म प्रवेश कर ग्राम चौरापाणी पहुचे। मैन वयोवद्ध से कहा, प्राचीनकाल म बाक्साड, बोक्साडी विद्या के लिए समस्त उत्त-ाखड म प्रसिद्ध था। कहते हैं, जो मनुष्य यहा आता था, वह अपन घर से हाथ धो बैठता था। इस क्षेत्र मे बोक्सू जाति के लोग बोक्साडी विद्या का जाप किया करते थे। इसलिए इस क्षेत्र का नाम बाक्साड पडा।

वयोवृद्ध बोले 'सभी लोग यही कहते है।'

मैन पूछा, 'वयोवृद्ध, बोक्साडी विद्या के बारे म कुछ ज्ञान है आपको?

वयोवृद्ध बोले, 'ज्ञान तो मुझे नही है। वयोवृद्धो के मुह से मैने भी ऐसा ही सुना है जैसे आपने सुना है।

" कहते है, बोक्सू जाति के लोग बोक्साडी विद्या को योग-साधना के बल से अपने बोक्सू देवता से प्राप्त करते थे। इस विद्या के प्रताप से वे लोग अपना रूप बदलकर शेर और बाघ बन जाते थे। इन्ही वनो मे एक विशेष घास की जडी मिलती है। वे उस घास की जड का खाते थे और फिर मनुष्य रूप धारण कर लेते थे। यह भी कहा जाता है कि यदि उनको वह घास की जडी खाने को न मिली या जडी खाना भूल गये तो वे शेर और बाघ के रूप मे जगलो मे विचरण करते रहते थे। धीरे धीरे वनो मे हिंसक पशुओ के आचरण से उनमे भी हिंसक प्रवृत्ति आ जाती थी और वे नरभक्षी बन जाते थे। कहते हैं, बोक्सू अधिकतर स्त्रियो को ही अपना शिकार बनाते थे और पुरुषो से भय खाते थे। यह भी कहते है कि जो पुरुष उनको मारने की कोशिश करते थे, बोक्सू छल कपट से उन्हे भी अपना शिकार बना देते थे। ऐसा कुछ उन लोगो के विषय मे कहा जाता है। यह बात कहा तक सत्य है, इसके विषय मे कुछ कहा नही जा सकता है। वास्तव मे वयोवृद्धो के मुह से मैंने भी बोक्सू जाति के लोगो के विषय मे इस तरह की कई कहानिया सुनी है जो सत्य भी हो सकती है इसमे कोई सदेह नही।

" यह भी कहा जाता है कि जैसे ही भारत मे अंग्रेजी शासन लागू हुआ धीरे धीरे ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिकारियो की देख रेख मे उत्तराखंड मे जनता द्वारा होनेवाली गतिविधियो का पता लगाया। फिर धीरे धीरे ब्रिटिश सरकार ने पर्वतीय लोगो के सपर्क से इस विद्या के विषय मे विशेष जानकारी प्राप्त की और साथ ही पैसा का लालच देकर लोगो से उन लोगो का पता लगाया जो बोक्साड विद्या के विशेषज्ञ थे। कुछ अंग्रेज अधिकारियो ने बोक्साडी लोगो से बोक्साडी विद्या की शक्ति का प्रदर्शन करने को कहा। वास्तविकता प्रकट होने पर इस विद्या के कारण अंग्रेजो के मन मे [illegible] उस काल मे अंग्रेज सरकार ने यह निर्देश [illegible] बोक्साडी विद्या का गलत उपयोग या [illegible] का साधना [illegible] पकडा गया तो उसे मृत्युदण्ड दे [illegible] जायेगा। [illegible] अंग्रेज सरकार [illegible] अपनी कूटनीति से बोक्साडी विद्या का [illegible]

पर्वतीय क्षेत्र म अंग्रेजी शासन प्रणाली पर कोई आघात न पहुचे।

" एक बार एक सौ पैंतीस वर्षीय वयोवद्ध न बताया कि अंग्रेज सरकार बोक्साडी विद्या के विशेषज्ञो का सफाया नही करती और व लोग रहते तो देश को स्वतन्त्र करवाने म उनका सबसे बडा योगदान होता। बाद म जो कुछ लोग बोक्साडी विद्या के विशेषज्ञ शेष रह गय थे, अंग्रेजो क भय स उन्होने अपनी बोक्साडी विद्या की पुस्तक जला डाली, जिसके द्वारा वे जाप किया करते थे।

' बाद म अंग्रेज सरकार न अपनी नीति सुरक्षा के लिए एक अच्छे निशानेबाज होने के नाते जिम कार्बेट को उत्तराखड के इन अगम्य व भयकर जगलो म शिकारी क रूप म रखा जो वतमान काल म भी है। उस काल भी रामनगर, कोटद्वार व कालागढ, 'गढवाल व कुमाऊ' के प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र थे, इसलिए कार्बेट इन्ही स्थानो मे अधिक भ्रमण व अपना जीवन व्यतीत करते थे। उत्तराखड के लोगो के सपर्क मे रहने से कार्बेट गढवाली और कुमाऊनी भाषा का अच्छा वक्ता भी बन गया था।

" कुछ वयोवृद्ध जो जिम कार्बेट के सपक म काफी समय तक रहे उनका कहना था कि अंग्रेज सरकार ने जिम कार्बेट को जिस उद्देश्य से इन स्थानो व जगलो म रखा था कार्बेट ठीक उसके विपरीत सिद्ध हुए।

वयोवद्धो ने यह भी बताया कि कार्बेट कहा करते थे—मैं नही चाहता कि मैं शिकारी के रूप म अपना जीवन उत्तराखड के इन अगम्य जगलो मे व्यतीत करू बल्कि एक अद्वितीय निशानेबाज होने के नाते मैं चाहता हू कि मैं सैनिको को राइफल व बदूक चलाने का प्रशिक्षण दू व प्रशिक्षक बनू।'

" वास्तव म देखा गया कि जिम कार्बेट को उत्तराखड क प्राकृतिक सौंदय व जनता से अगाध मोह था इसलिए जिम कार्बेट उत्तराखड की जनता की सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक गतिविधियो में विशेष रुचि रखते थे।

वयोवद्ध बोले ' बोक्साड का इलाका तो बहुत विस्तत है। दृष्टि

दौडाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो यहा योगी ही वास करते हो। कितना भयक्र लगता है ! केवल निजनता का वास है। वास्तव मे बोक्सुओ ने बोक्साडी विद्या का जाप इसी घनघोर वन में किया होगा। एक बार ढिकाला बोक्साड के इस क्षेत्र मे एक नरभक्षी शेर ने घोर आतक मचाकर इन स्थानो को जन शून्य कर दिया था।

' वास्तव मे कितना भयकर लगता है, नरक जैसा ! इतना काला क्या ? कालापन मानो निशा का अतकाल तम जैसा। इस प्रकार भी मानो काली नदी का काला पानी। ऐसा क्या ? क्या अवनि म अबर की घनाच्छादित छाया म, अवश्य इसी स्थान म शेर ने स्त्री की हत्या की होगी ! हा, वन अजब ढका है पवतमालाओ की छाया मे। यही शेर ने पहले एक स्त्री को अपना शिकार बनाया था। बाद मे वन की सघनता के कारण शेर न कई खरक चराने वाली बालाओ और स्त्रिया को मौत के घाट उतार दिया था। अजब तमाशा दिखायी देता था उस काल।

" कई शिकारी शेर की प्रतीक्षा म मचाना पर बैठे बेचन दिखायी देते थे। कही जिवाला का बाजार लगा रहता था कही बकरिया की ताद दिखायी देती, कही कटिया की मार्मिक आवाज सुनायी पडती थी कही कुछ नही और कही सब कुछ, फिर भी शेर को किसी से मोह नही था। सब करतब बेकार कर देता था शेर। समस्या बडी उलझनमयी बन गयी थी। शेर को मारने के लिए कई योजनाओ के पुल बनत और वही योज-नाओ के बने बनाये पुल यथासमय टूट जाते और शेर हर अवस्था मे साफ ! इस दुखात नाटक का अत सपन्न करने के लिए लाग काला-ढूगी जाकर जिम कार्बेट को बुला लाये। कार्बेट साहब ने उन स्थाना का निरीक्षण किया, जिन स्थाना मे शेर नि शक भ्रमण किया करता था। कई दिना तक कार्बेट साहब इस काय मे सलग्न रहे। बाद म उन्होने शेर को मारने के लिए कई प्रयत्न किये, परतु शेर कार्बेट का धोखा देकर वन म लोप हो जाता था और उनको मौत का आह्वान द जाता। जब शेर कार्बेट के हर अचूक निशाने को चूक कर देता तब उन्होने काठ के पिंजरे म भैंस की एक कटिया रखी। कई दिना तक कटिया पिंजरे म

मौत के दिन गिनती रही पर शेर न पि
दिया। फिर पिंजरे में एक बकरी रखी
देखकर ही दूसरी दिशा में जाकर लोप ह

"उस काल बड़ा मुश्किल हो गया।
पाकर स्त्री की हत्या कर जाता और
कटकडाती बिजली के समान लोप हो जा
जगल का श्मशान बना दिया। जिम क
क्योंकि उनको स्वय अपने जीवन से हाथ
हो गया।"

वयोवृद्ध ने यह भी बताया, "जब
लात के बगले में दरवाजा बंद करके दा
समय बाहर दरवाजे के पास शेर उनक
जैसे ही जिम कार्बेट अपनी बदूक हाथ
तो शेर एकदम लोप हो जाता था। कई
की घटनाए घटा करती थीं। कहते हैं,
मौत भी शिकारी पशु के द्वारा होती है उ

फिर कार्बेट ने शेर को मारने के
शेर कार्बेट की गंध महसूस कर जगल
बडी गभीर हो गयी। शेर को मारने के
का परीक्षण किया जाता परंतु शेर सब

"एक दिन कार्बेट ने जगलो म ख
बुलाकर एक योजना बनायी। योजना
हँसकर बोले— स्त्रिया पर ही शेर आ
तुममे से कोई पिंजरे म बैठ जाय तो मैं शे
दूगा।' सब डर गये। जान सबको प्यारी
पडना चाहता था। दैवयोग से कोई मर

'जब सब अचभित अवस्था में एक
अनायास ही एक वयोवृद्ध बोले— पिंजरे
तयार नहीं होगा, साहब, ऐसा किया

गर की दिशा से ही मुह पर
गयी। शेर पिंजरे को दूर स
। जाता था।

रा शेर का मारना। शेर मौका
धन जगल म बादलों के बीच
ता था। शेर के डर कारतव न
र्बेट भी दुख म उदास हो गये
धान का एक बडा खतरा पदा

कभी जिम कार्बेट अपने जग
हर का भोजन करते थे तो उस
ी ताक म बठ जाता था और
म उठाने की कोशिश करते थ
ग़ार कार्बेट के साथ इस प्रकार
शिकार करने वाले मनुष्य की
गे सत्य है।

लए कई खड खाले दिये परंतु
। लोप हो जाता था। समस्या
लिए नये नये उपायों व शस्त्रा
स्त्रास्त्र सफल सिद्ध होता।
व चराने वाले कुछ लोगो का
बडी भयभीतमय थी। कार्बेट
क हमला कर रहा है। यदि
र को आसानी से धराशायी कर
ग़ी आग के मरड म कोई नहीं
जाय तो वह दूसरी बात है।
-दूसरे का मुह ताकते रहे तो
म बठने को तो कोई भी व्यक्ति
ाय कि एक वृद्ध व्यक्ति का
े घना मैं

पुतला बनाकर उस पुतले को किसी वृद्ध के वस्त्र पहनाकर पिंजरे में रख दिया जाये। उसके साथ एक भैंस की कटिया भी रख दी जाये। विशेषत: कटिया की मार्मिक आवाज सुनकर शेर पिंजरे पर आयेगा और आसानी से आपके अचूक निशान का शिकार बन जायेगा।'

"योजना कारगर थी। जिम कार्बेट कार्य-सिद्धि के लिए तैयार हो गये। साहब, नीचे जो समतल चौड़ा भाग दिखायी दे रहा है वहां पिंजरा बड़ी मजबूती से पेड़ से बांधकर रख दिया गया। सब प्रकार से सुरक्षित। तत्काल बूढ़े का पुतला और कटिया पिंजरे के अंदर रख दिये गये। कार्बेट साहब रात दिन शेर को निशाना बनाने के लिए अवसर ताकते रहते परंतु शेर इतना होशियार निकला कि कई दिन तक पिंजरे के पास फटका तक नहीं। काफी समय बाद एक रात को कुछ जंगली जानवरों ने शेर के आगमन का संकेत दिया। कार्बेट निशाना साधे सावधान हो गये। ठीक रात्रि के मध्य शेर पिंजरे की ओर लपका, कटिया और बूढ़े के पुतले को देखकर शेर ने एक ऐसी दहाड़ मारी कि जंगल का समस्त वातावरण बेचैन और वन्य जीवों में असंतोष व्याप्त हो गया। एक घंटे के बाद शेर फिर दिखायी दिया, शांतपन में, फिर तेजी से पिंजरे की ओर लपकता और फिर एकदम रुक जाता। अजीब करतब करता था शेर। हिंसक पशुओं में एक विशेषता यह भी होती है कि वे जब मारक करतब करते हैं तो या तो सुबह के चार बजे के समय या फिर जब दिन ढल जाने पर गहनतम अंधकार छा चुका हो या रात्रि के मध्य में। उषाकाल होने में कुछ समय रहा होगा। शेर ने छलांग लगायी और पिंजरे पर जा धमका। पिंजरा बंद होने के कारण कटिया और बूढ़े के पुतले के साथ शेर कुछ भी हरकत करने से वंचित रह गया। पिंजरे को तोड़कर कटिया को ले जाने का प्रयास जैसे ही शेर ने किया, अपना ऊंचा मस्तिष्क देकर कार्बेट के अचूक निशाने को शेर ने सिर बीच ले लिया और भयंकर गर्जना के साथ ऊंची छलांग लगाकर धराशायी हो गया। बंदूक की गोली के धमाके से समस्त जंगल के वातावरण में विचलितता छा गयी।

"लोग भय से मुक्त हो गये थे। उन्हें यह दृढ़ विश्वास हो गया था

कि नरभक्षी शेर मारा गया है। शांति का वातावरण फिर लौट आया। फिर लोग अपने जंगलात के कारोबार मे एकजुट होकर काम करने लगे। जंगलो में खरक चराने व बबूल काटने वाले लोगो के कारोबार में फिर से एकरूपता आने लगी। साहब, एक सप्ताह गुजरा होगा शेर ने फिर दो घसियारियो को मौत के घाट उतार दिया। कार्बेट ने फिर शेर के स्वभाव का निरीक्षण करना शुरू कर दिया। निरीक्षण करने में कार्बेट ने काफी समय व्यतीत किया और यह सिद्ध किया कि नरभक्षी शेर नही मारा गया है। उस काल तक शेर ने कई खरक चराने वाली स्त्रियो को मौत के घाट उतार दिया। कार्बेट शेर को मारने के लिए योजनाओ के पुल बनाने और यथासमय योजनाओ के पुल टूट जाते।

"समय दुखांत नाटक खेल रहा था। फिर एक बार जंगलात के कारोबार मे नीरसता छा गयी। उस काल जंगली हाथियो ने भी घोर उग्रता फैला दी और साथ ही जंगली सूअरो ने उग्रता को और भी बढावा दे दिया। जिम कार्बेट हताश हो गये। हिंसक पशुओ के भय से नही, बल्कि उनके उग्रवाद के कारण। जो नरभक्षी शेर था वह जंगल के अन्य क्षेत्र में स्त्रियो की हत्याए करने लगा। कार्बेट सोचने लगे, क्या बात है, शेर स्त्रियो का ही अधिक दखल पहुचा रहा है। बड़ी अजीब मार कर रहा शेर। क्या करूं? इस दुखांत नाटक का समापन किस विधि से करना होगा?

"समय बहुत गुजर चुका था। कार्बेट ने शेर को मारने के लिए बहुत प्रयास किये परंतु शेर को धोखा न दे सके। तब एक वयोवृद्ध ने जिम कार्बेट को एक उपाय बताया— साहब, जब शेर स्त्रियो को ही अधिक दखल पहुचा रहा है तो आप किसी स्त्री के कपड़े पहनकर गीत गाते हुए उस दिशा मे बढो जहा शेर भ्रमण कर रहा है। जैसे ही शेर तुम्हे स्त्री समझकर खाने को आयेगा, तुम शेर को गोली मारकर चौकस बिछा देना।'

"कार्बेट बोले—'जनाबेआला सब सिद्धियां आजमा चुका हूं। क्या करूं मेरे सब कर्तव्य विफल और शेर हत्याए करने में सफल हो जाता है।' फिर योजना बनायी गयी। कार्बेट एक ग्रामिका घसियारी के पास

गये और उससे कहा— क्या तुम कुछ समय के लिए मेरा साथ दोगी ?'

" गायिका घसियारी ने कार्बेट से पूछा—'कैसा साथ, कितने समय के लिए ?'

" कार्बेट ने हंसते हुए कहा—'तुम्हें और मुझे मिलकर शेर को मारना है।'

" 'कैसे ?' गायिका घसियारी ने पूछा।

" कार्बेट ने घसियारी से कहा—'जिस दिशा में शेर हुंकार मारेगा उस दिशा में हम दोनों भेष बदलकर जायेंगे। सुनो, भेष इस प्रकार का, तुम्हारे शरीर के कपड़े मैं पहन लूंगा और तुम अपने दूसरे कपड़ों को पहन लेना। इस विधि से शेर मरी गंध महसूस नहीं कर पायेगा। तुम आवाज को बिना रोके गीत गाते हुए आगे बढ़ते रहना। मैं तुम्हारे पीछे स्त्री भेष में तुम्हारे कंधे पर बंदूक रखकर तुमसे सटकर चलता रहूंगा। जैसे ही शेर तुम्हें खाने के लिए आयेगा मैं शेर को गोली का निशाना बनाकर धरा पर बिछा दूंगा। ठीक है न तैयार हो ?'

" उस काल से निपटने के लिए गायिका घसियारी कार्य सिद्ध करने के लिए तत्पर हो गयी।

" काफी दिन बीत गये। शेर के विषय में कुछ पता न चला कि शेर किस दिशा में आराम फरमा रहा है। समय भी बीतता जाता था और समयानुसार कार्बेट और गायिका घसियारी समय को ताकते रहते थे। साहब, नीचे के समतल भाग में पानीघार के पास पड़ा जो भीमकाय चौड़ा पत्थर है, एक दिन अचानक शेर ने उस पत्थर पर बैठकर भयंकर दहाड़ मारी। घसियारी साथ थी। कार्बेट समझ गये, आज नरभक्षी को मौत खींच लायी है। मौत का कालचक्र उसके सिर पर मंडरा रहा है। शेर की दहाड़ से समस्त जंगल में रात जैसी नीरसता फैल गयी। कार्बेट ने जल्दी से गायिका घसियारी के वस्त्र पहने और गायिका घसियारी के कंधे पर बंदूक छुपा रखकर उस गीत की लय छोड़ने का आदेश देकर शेर की ओर बढ़ने का संकेत दिया। घसियारी गीत की सुरीली लय छोड़ती आगे बढ़ती जाती और पीछे से कार्बेट स्त्री भेष में निशाना साधे घसियारी से मिलकर बढ़ते जाते।

' कार्बेट और घसियारी शेर से कुछ दूरी पर थे कि शेर ने क्रोध म आकर उह अपना भयकर रुप दिखाना शुरू किया। शेर का भयकर रूप देखकर गायिका घसियारी घबरा गयी और गीत की लय छोडकर खडी हो गयी।

" कार्बेट के इशारे पर गायिका घसियारी न फिर वही गीता की लय छोड दी। शेर ने गुस्स म आकर उनकी ओर छलाग भरी। शेर नज दीक आ चुका था और जिम कार्बेट भी अपना अचूक निशाना साध चुके थे। उस समय नुकसान इतना हुआ कि शेर को गोली लगते ही शर ने एक लबी छलाग उनके दोस्त के ऊपर मारकर उन्ह मौत के घाट उतार दिया जो अग्रेज थे और घास के गट्ठा के मध्य से शेर की आर निशाना साधे खडे थे। शेर चल बसा, साथ मे जिम कार्बेट के दोस्त को भी ले गया। उस काल जिम कार्बेट मन में सुख और दुख का अनुभव करने म असमथ हो गये।

' शेर मारा गया, कार्बेट न उस क्षेत्र के कई विद्वान वयोवद्धो से शेर की जाच करवायी। कहते है, शेर रूप मे वह बोक्सू था, जिसके विषय म पहले बताया जा चुका है। उस काल से लेकर वतमान काल म शेर न इस तरह की कोई हरकत उस क्षेत्र म निवासित लोगो के साथ नही की क्योकि वतमान काल म न इतने शेर ही रहे और न बोक्साडी विद्या क महान प्रकाड बोक्सू लोग और न जिम कार्बेट जैसे अचूक निशाने बाज हो।"

यदि वतमान काल मे ढिकाला और बोक्साड को निहारें तो उपयुक्त सब कल्पना मानी जायगी, क्योकि ढिकाला बोक्साड आज के वैज्ञानिक युग स मेल खा बैठा है और अपने प्राचीन वातावरण की याद दिलाने मे पूण रूप स असमथ है। सौ वर्षीय वयावद्ध जब ढिकाला बोक्साड के वातावरण को अपन आखा से निहारता है तो इतना कहकर चुप हो जाता है कि समय समय की बात है जहा जाने म लोग कापते थ आज वहा देश विदेश के पयटको का ताता लगा रहता है। केवल जिम कार्बेट राष्ट्रीय पाक को निहारन के लिए ढिकाला मे भ्रमणाथ जाते हैं, बोक्साड म।

लुहाचौड के जगल मे

हर साल दिसबर माह में ग्रामीण क्षेत्रा के ठाठिया लोग लुहाचौड के जगल म चिरान के कार्य पर जाया करते थे। क्योकि उस समय ग्रामीण लाग कृषि के कारोबार से मुक्त हो जाते थे और शेष खाली समय लुहाचौड के विजलित, वन मे चिरान के कार्यों में व्यतीत करते थे। ठाठिया घर लौटते थे फरवरी माह के अत मे, तब ग्रामीण क्षेत्र मे खेता की जुताई का समय आ जाता है। मुझे उन महाशयो से वार्तालाप करने मे अति हर्ष और असीम आनद का अनुभव होता क्योकि ठाठिया जगलो में घटित भयकर घटनाओ का हाल मुझे सुनाया करत और मैं बडी उत्सुकता से ध्यान लगाकर उसे सुना करता था।

वे सुनाया करते थे कि जगलो मे शेर, बाघ, भालू, जगली सूअर, बारहसिंगे और काकड आदि अधिकतायत मे विचरण करते दृष्टिगोचर होते थे। यही नही, कभी कभी तो जगली हाथी भूले भटके व्यक्ति को जान से मार देता था और कभी-कभी तो अजगर के भी दर्शन हो जाते थे। "क्या बताए, साहब, जगल मे घुर्वोड का शिकार करने मे जो आनद प्राप्त होता है शायद ही किसी चीज के मिलने से प्राप्त होता हो। हमने कितने ही शिकार किये। जगली मुर्गिया को कौन पूछे, हम प्रतिदिन वन मुर्गिया का शिकार किया करते थे। एक बार तो हम मर गये थे परतु खेल, खेल बनकर रह गया और हम बच निकले। भगवान न करे, कभी फिर ऐसा मौका आये। कुशल यही रही कि वनराज की दृष्टि हम पर नही जमी। क्या समय था वह, एक तरफ जगली हाथियों

की भयकर चिग्घाड, और दूसरी ओर खूख्वार शेर की दहाड। और झाडियो के बीच हम थे। जब कभी उस भयकर घटना की ओर ध्यान आकर्षित हो जाता है तो रोगटे खडे हो जाते है और श्रोतागण स्थान छोड देते है।'

यह कहकर ठाटिया लोग मुझे लुहाचौड के सघन वन मे भ्रमण के लिए उत्तेजित करते और मेरा मन भी बार-बार लुहाचौड के सघन वन मे भ्रमण के लिए उमड पडता शिकार का असीम आनद प्राप्त करने के लिए नही बल्कि सौंदर्यमय वन के मध्य वन्य जीवो को निहारने के लिए।

वन भ्रमण के लिए मन मे बार बार लालसा जागती परतु मौका तभी मिल सकता था, जब जगल मे चिरान का समय आता।

सौभाग्यवश सन 1968 मे मुझे और चाचा भूपेंद्र को लुहाचौड के सघन वन मे भ्रमण का सुअवसर प्राप्त हुआ। दिसबर माह के प्रारभ मे घर छोडकर हमने लुहाचौड की ओर प्रस्थान किया। साथ मे चले चाचा पीतावर, चाचा नरेंद्र व हरिजन भाई मगू पहलवान। मोटर का बडा अड्डा दो मील दूर सल्डमहादेव में था इसलिए वहा तक पैदल गये क्योकि प्रात काल की मोटर ठीक समय पर उस निश्चित स्थान पहुचा देती है जहा से लुहाचौड का विकट मार्ग नापना पडता है। इस-लिए सुबह की मोटर मे बैठकर हम पाचो महाशय चिमठा के समक्ष उतर गये। इस स्थान मे जगलो मे निवास करने वाले व भावर मे सरक चरनेवाले लोग झोपडी बनाकर निवास करते है। इस स्थान मे वन-विभाग के बगले भी विराजमान हैं। मोटर मार्ग निकट होने के कारण इस स्थान में चाय पानी व राशन की छोटी छोटी दुकान भी हैं। हमें भी जगलात मे कुछ समय व्यतीत करने के लिए इन्ही छोटी छोटी दुकानो से सामलपत्ता खरीदना था और फिर तीन चार मील आगे घनघोर जगल में डेरा डालना था।

चाचा भूपेंद्र के पास दुनाली बदूक थी जो ब्रिटिश शासनकाल से चली आ रही थी। अग्रेजो ने इन्हें इस दुनाली बदूक को नबरदार की हैसियत से दिया था। इसलिए चाचा को इस दुनाली बदूक पर गर्व

था और मुझे भी। उस काल चाचा के कंधे पर लटकती दुनाली बंदूक बड़ी शोभनीय लगती थी, जिस प्रकार तरकस में तीर।

जंगली हिंसक पशुओं के भय से चाचा भूपेंद्र ने ब्रिटिश दुनाली को गालियों से मारा और मगूदास ने जंगलात के लिए समलपता। संपूर्ण सामग्री के साथ तब हमने लुहाचौड़ का विकट मार्ग नापना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में ठेकेदार की जीप हमें लेने के लिए जंगलात की कच्ची सड़क पर आ पहुंची। ठेकेदार को हमारे उस ओर पधारने की सूचना एक ठोटी के द्वारा पहले ही दी जा चुकी थी, इसलिए जीप का आना स्वाभाविक था। जीप में बैठकर हम लुहाचौड़ के सघन वन में पहुंचे।

इस सघन वन को देखने का मुझे पहला अवसर प्राप्त हुआ था। शायद इतना भयंकर व उजाड़ और कोई वन न हो। वन में छोटे-बड़े सभी प्रकार के दरख्त घने व भिपलित रूप से उगे हुए थे। छोटी छोटी कंटीली झाड़ियां व कुजबेलियां तो अनगिनत संख्या में फैली हुई थीं, जिन्हें देखकर हृदय कांप जाता था। वनों में भिपलित कुंज झाड़ियां में ही शेर, भालू, बाघ व चरक-जैसे हिंसक पशुओं के विश्राम गेह होते हैं, इसलिए जंगल का वातावरण बड़ा भयंकर लगता है। इन बीहड़ जंगलों में शेर व जंगली हाथियों का शिकार होना तो बायें हाथ का खेल था। धीरे धीरे दिवस का अवसान समीप चला आ रहा था। ठाठिया लोग चिराई का काम समाप्त कर एकजुट होकर काम काज में जुट गये। यह विशेष जानने योग्य बात है कि यदि ठाठ में ठाठियों की संख्या अधिक हो तो ठाठिया पैरों या घुटनों के बल आटा गोदते हैं। कोई आटा गोदने लगा कोई सब्जी काटने लगा और कोई पानी लाने लगा। कम-से-कम सौ से अधिक ठाठिया लोग रहे होंगे। वे ये दूर मुल्कों के ठाठिया लोग। ठाठियों के कामकाज का ढंग और गीतों की लय किसी अच्छे बाजार व कोलाहलपूर्ण वातावरण की याद दिलाती थी। इस वातावरण में चारों दिशाओं में संध्या की मनमोहक शीतल छवि विमुक्त मालूम पड़ती थी। ठाठ में ठाठियों के ठाठ रहते हैं क्योंकि ठाठ में राशन-पानी ठेकेदार का लगता है ठाठियों का नहीं।

ठाठ में ठाठिया लोग आग को रात दिन ज्वलंत रखते हैं। यह भी

एक विशेष जानने योग्य बात है कि ठाठ म ठाठिया जब स जंगल म अपना डेरा डालते हैं तो ये सबसे पहले वन देवता की पूजा करते हैं। उस काम से जली आग को ठाठिया तब ही बुझाते हैं, जब वे चिरान का काम पूरा करके अपने घरों को लौटते हैं। दूसरी बात, आग और धुए के कारण हिंसक पशु ठाठिया के नजदीक नहीं फटकते है। आग से सभी जाति के हिंसक पशु भय खाते हैं। इस तरह ठाठिया का राज का कम चलता रहता है। धीरे धीरे समय की गति के अनुसार हम भी जंगल के वातावरण में रम गये परंतु हर घडी का ध्यान रखना पडता था।

घटना एक सध्या की है। सब ठाठिया चिराई के काय म सलग्न थे। न जाने जगलात के किस छोर से जगली हाथियो का एक विशाल दल चिरान स्थल तक बेधडक आ घुसा। शायद साथ म उनके छोटे छोटे शिशु भी थे। व थे दैत्याकार जगली हाथी, जो आदमियो को अपने सूड स पकडकर चीर देते है। उस समय मैं और मेरे चाचा भूपेंद्र व मगूदास हुक्का गुडगुडा रहे थे। जगली हाथियो को देखकर हम महाशयो की काठी कपकपा गयी क्योंकि पहले कभी हमने इस प्रकार का मौतनी दृश्य नहीं देखा था। भय के कारण चाचा भूपेंद्र के हाथों से दुनाली बदूक छूट गयी। ठेकेदार व ठाठिया न हमें दिलासा देते हुए कहा, "आप बिलकुल न घबराए हम इनको अभी यहा स खदेड देते है। इन जगली हाथियो पर गोली चलाना मौत को न्योता देना है। साहब यदि इन पर गोली स प्रहार किया जाय तो य घातक सिद्ध होते है।"

मैंने पूछा "इन जगली हाथियों को बिना हथियारो के किस तरह यहा से खदेडा जायेगा?"

पद्रह बीस आदमी हाथ म खाली कनस्तर लिये जोर जोर स बजाने लगे। कनस्तरों की आवाज सुनकर जगली हाथी कुछ हरकत करके अपने बच्चो समेत नौ दो ग्यारह हो गये। ठेकेदार ने बताया कि कनस्तर की आवाज से जगली हाथी बहुत डरते है। यह जगली हाथियो म सबसे बडी खूबी है। भाबर के तराई भागों व जगलो में निवास करने वाले जन कनस्तर बजाकर इन दैत्याकार हाथियो को खदेडते है। यह एक विशेष जानने योग्य बात है।

कुछ समय उपरांत विश्राम स्थल से चाचा भूपेंद्र ने बंदूक से चार भयकर धमाके किये ताकि दुबारा जगली हाथियो का विशाल झुंड चिरान स्थल की ओर बढने का साहस न करें।

चिरान स्थल से भागते समय जगली हाथी क्रोध में आकर बहुत नुकसान कर गये। एक तो शाल के भारी भरकम चिरान के लट्ठों को इधर उधर फेंक गये। दूसरा, पेड के समीप खडी जीप को चार खाने चौबस बिछा गये। यह एक विशेष जानने योग्य बात है कि जगली हाथी चिलबिल पहाडो की चोटियो से उतर जाते हैं, जहा मनुष्य के बस से बाहर की बात है। आपने छोटे बच्चो को पार्क म सीमेंट की बनी ऊची सीढ़ियो के सपाट भाग पर खिसकते देखा होगा। ठीक उसी प्रकार हाथी भी अपने आगे के पैरो के बल दुर्गम पहाडो की चोटियो से घिसकिया खेलकर नीचे उतर जाते हैं।

निशातम शनै शनै घटता चला जा रहा था। व्योम से रजनीकांत की कर निकर बटोही को मार्ग प्रदर्शित करने लगी थी। हमने रात्रि भोज किया परंतु भय के कारण नींद खना गयी। घासफूस के बने छप्पर के अदर लेटे सोच रहे थे, कही दुष्ट हाथी दबे पाव यहा आने के लिए दुबारा हिम्मत न बाध लें। हमारे हृदय मे जगली हाथियो का भय तो छाया हुआ था परंतु तब हम और भी भयभीत हो गये वनराज के भय से, क्योंकि रात्रि में हिंसक पशु अपने शिकार की खोज में वन में विचरण करते हैं। शेर में सबसे बडी विशेषता यह होती है कि वह रात्रि में अपने शिकार पर पजा या दात गाडने के लिए या तो पेड की आड लेता है या पगडंडियो की मोड पर घात लगाकर बैठ जाता है। मैदान व सपाट स्थानो म शेर मार करता कम नजर आता है। शेर की घ्राण-शक्ति बहुत कम होती है क्योंकि शेर के मुह और नाक से बहुत बदबू आती है। बदबू के कारण शेर किसी भी प्राणी की गंध जल्दी महसूस नहीं कर पाता है। हिंसक पशुओ म शेर की शोध शक्ति अवश्य तीव्र होती है।

बडी मुसीबत से रात व्यतीत की। दारुण बेचैन प्रतीक्षा के बाद

सुबह का मुह देखा। भय के कारण ठाठी लोग चिरान स्थल पर जाने के लिए दम नही भर रहे थे परतु दुर्भाग्यवश विश्राम-स्थल के निकट दो साभर और एक बारहसिंगा अपने को गोली का निशाना बनाने की होड में थे। वे बिलकुल हमारे समक्ष आ खडे हुए बिना, आहट। निशाना दागत ही तीनो वन प्राणी नजर बचाकर भाग निकले, शायद उनके फुर्तीलेपन से हमारी आखें भिलमिला गयी, इसीलिए निशाना दागते ही निशाना चूक गया। किंतु पास म बडी बडी कास व बबूल के बीच वे फिर दष्टिगत हुए। हम तीनो व्यक्ति बिना आहट किये उनका पीछा करने लगे, यह सोचकर कि जिस दिशा म वे प्राणी भाग रहे है यदि उस दिशा म मालूलता वृक्ष हो तो उनकी लताओ में बारहसिंगे के विषाण फस जायगे और उनको बिना बदूक की सहायता से मारा जा सकेगा। अक्सर जगला म बारहसिंगा के सीग मालू वक्ष की लबी तारनुमा टह नियो म फस जाते हैं और वे अपने को लताओ के जाल से मुक्त नही कर पाते हैं। प्राय जगलो में शेर को बारहसिंगा का शिकार करना होता है तो वह इस पाणी को उस दिशा में दौडाता है जहा मालू वक्ष का घना जाल फैला होता है ताकि बारहसिंगा के सीग मालू जाल में फस जायें और उसका शिकार हो सके। परतु जिस दिशा में वे प्राणी भाग जा रहे थे उस दिशा म केवल बडे दरख्त और कटीली झाडिया विचित्र रूप से उगी हुई थी।

उन झाडियो से शरीर पर पहन कपडे चिर गये थे। हम भी उन वन्य प्राणियो का पीछा करते हुए दूर निकल गये। वहा और भी भय कर खडहर व सडकीले पानी के स्रोत मिले। वन की भयकरता को देख-कर आखो मे अजीब दश्य पलटन लगे। मन म न तो डर ही था और न खुशी ही थी। अजीब सा लगता था परतु गर-गर' शब्द हमारे कानो तक पहुच रहे थे। हमन गर गर' के शब्दो पर ध्यान पलट दिया। रुक कर आगे बढने की कोशिश की। जसे ही हम आगे बढना चाहते थे कि हमारी दृष्टि सुअरो के एक दगल पर पडा जो पानी पीने के लिए स्रोत की ओर अग्रसर था। कुशल यही रही कि उनकी दष्टि हम महानुभावो पर नही पडी नही तो वे हमें चीर देते। उनका छुर्रा सूअर (सूअरो का

सरदार) बडा खूख्वार नजर आता था और उनके रूप से अधिक भयकर उसके मुह से बाहर निकले दो पैने दात लगते थे। हमने सोचा, चुपके से पेड पर चढकर छुर्या सूअर को पत्थर मार देना उचित होगा। वह अपने सब साथिया को मौत के घाट उतार देगा। छुर्या सूअर म सबसे बडी विशेषता यह होती है कि यदि छुर्या सूअरो को कोई व्यक्ति चुपके से पत्थर मार दे तो वह क्रोध मे आकर अपने सब साथियो को अपन पैने दाता स मारकर चीर देता है और सूअरो का उसी स्थान मे ढेर लग जाता है। अकसर जगली गाव के लोग व जगलो में ठाठिया लोग इसी तरीके से जगली सूअरो का शिकार करते हैं। सूअरो की लबी कतार को देखकर हम उस स्थान से दबे पाव मुड गये। तब खतरा और भी बढ़ गया क्योकि रास्ता विकट था। यह भी भय था कि न जाने शेर किस झाडी मे शिकार के लिए घात लगाये बैठा हो फिर भी आत्मरक्षा के लिए डर से डरावने कला-कौशल करते हुए हम निवास स्थल पर लौट आये। निवास स्थान से कुछ दूर हमने धय धारण करके चार जंगली मुर्गियो का बेधडक शिकार किया। मुर्गिया चार थी और खाने वाले थे सौ से अधिक, इसलिए मुर्गियो के शिकार का स्वाद हम तीनो ने ही लिया—मैंने, चाचा भूपेंद्र और मगू पहलवान ने।

एक सप्ताह हुआ। जगल की अगम्य वन-कदराओ से शेर विराम-स्थल के निकट आ धमका। सब ठाठिया विराम का काम छोडकर लकडी के बने कठघरे मे आकर अपने हैंडी हथियारो को लिये सतर्क हो गये। दो दिन पहले रात मे वनराज की हुकार अवश्य सुनी थी परतु धमकने की खबर से सब अनभिज्ञ थे। शायद आपको ज्ञान न हो, रात्रि मैं शेर कई किस्म की आवाज निकालता है। कभी वन में जाकर परीक्षा करना, शेर कभी बिल्ली की आवाज निकालता है तो कभी वन मे सीटी मारनेवाली चिडिया की सी और कभी इस प्रकार सुनायी पडता है माना दो व्यक्ति परस्पर बातें कर रहे हो और इस प्रकार भी कि मानो पानी की धार बह रही हो रात्रि के मध्य शेर की आंखें इस प्रकार चमकती हैं, मानो बैलगाडी के नीचे सिरो पर जलती लालटेन रखी हो। शेर के लिए हथियार उठाना मौत को न्योता देना है। पचानन को देखकर ठाठिया

हक्बक्का गये। शेर में सबसे बडी खूबी यह है कि वह तब तक किसी पर हमला नही करता, जब तक उस पर किसी का अडप न लगे। शेर को खदेडने के लिए सब ठाठियान एडी चोटी का जोर लगा दिया। कनस्तरो की भन्नाहट और बदूक के धमाको से सपूण जगल गूज उठा, पर सब विफल। एक व्यक्ति ने बताया, "यदि मरे जानवरो की हड्डिया को आग म रखकर जलाया जाये तो शेर उस ओर नही आता है। हड्डियो की बास को शेर अशुभ समभता है। अकसर जगली गाव की घसिया-रिया और जगला में खरक चराने वाले लोग अपने साथ में कुत्ते भी रखत हैं क्योकि कुत्ते को शेर छूत मानता है। कुत्ते का नीच समभकर शेर भाग जाता है और आदमियो पर आक्रमण नही करता है। इसलिए लोग भयकर जगलो में अपने साथ कुते रखते हैं। शेर को दखकर ऐसा प्रतीत होता था कि शेर किसी व्यक्ति को अपना शिकार अवश्य बना लेगा। भगवान ही मालिक था। एक बडा सकट आ खडा हुआ था। यदि उस काल चाचा भूपेंद्र अनजाने में शेर पर गोली दाग देते और गोली चूक जाती तो हमें किस सकट से गुजरना पडता, शायद पाठक अनुमान लगाने म असमथ होगे।

शेर को खदेडने के लिए ठाठियो ने फिर कनस्तरो को बजाना शुरू किया। मैं देख रहा था कनस्तरो की आवाज सुनकर शेर गुर्राहट के साथ अपनी पूछ को जमीन पर जोर से मार रहा था। वास्तव मे क्या सुडौल शरीर व पुट्ठे थे वनराज के! बात सत्य है कि शेर की आखा की चमक और भयकर मौंहो की बलबलाहट व मूछो की मलमलाहट का देखकर लगूर पेडो से नीचे गिर जाते हैं। इतना भयकर रूप किसी अन्य हिसक पशु का नही होता जितना कि वनराज का। ठाठियो ने स्वय को सुरक्षित स्थान मे पाकर कनस्तरो की ध्वनि करना छोड दिया, तब एक ठाठिया ने छिपकर जोर जोर से हूबहू कुत्ते की भौंकने की आवाज निकाली। शेर ने कुत्ते की भौंकने की आवाज सुनी और गुस्से में आकर जमीन की ओर मुह करके इतनी जोर से हुकार मारी कि समस्त जगल काप उठा।] तब वनराज ने छलाग लगायी थी जिसका कोई जवाब नहीं था।

देर याद सोच-विचारकर एक हल ढूढ निकाला कि शेर को बदूक से न मारा जाये बल्कि उसको अन्य तरीके से मौत के घाट उतारा जाये ताकि शेर की खाल का उपयोग हो सके ।

हिंसक दादा भी इसी गाव का रहने वाला था । सूचना पाकर हिंसक दादा भी हमारे सम्मुख उपस्थित हुआ । हिंसक दादा जमाने का हिंसक और अद्वितीय शिकारी था । अब वह वृद्ध हो चुका था । हिंसक दादा ने कहा "श्रीमानजी, अगर आपकी यह अभिलाषा है कि शेर बिना बदूक से मार दिया जाये तो शेर का मारने का दूसरा तरीका मैं आपको समझाता हू । इसी विधि से प्राचीन काल मे ग्रामीण लोग शेर और बाघ का शिकार किया करते थे ।'

इस विषय मे हमने हिंसक दादा का समर्थन किया और कहा, "बताओ दादा ।"

तब हिंसक दादा ने बताया, सबसे पहले कदार की चार-पाच कडिया लाओ । कडियो का जिवाला बनाना होगा । बीच की कडी पर मरे बैल को बाध दो, जिवाले का वजन बीस मन स कम न हो । जब शेर क्रोध मे आकर अपन छूटे हुए शिकार के लिए जिवाले स बैल का झटका देकर ल जान की कोशिश करेगा तो झटका लगते ही बीस मन वजन गिरकर शेर को चार खाने चौक्स बिछा देगा ।"

बस, फिर क्या था ! ग्रामीण जनता न मिलकर एक घटे म शेर से बदला लेने के लिए जिवाला तैयार कर दिया । काय म सलग्न रहने पर समय ढल गया ।

भगवान भास्कर पहाड की धार पर डगमगाते हुए पश्चिम दिशा मे अतर्धान हो चुके थे । सध्या सुदरी विरामदायिनी की प्रतीक्षा म रत थी ।

रात्रि-भोज के पश्चात हम एक दूसरे मकान के ऊपरी भाग वाले कक्ष मे घात लगाकर बैठ गये । उस कक्ष से शेर के लिए लगाया गया जिवाला प्रत्यक्ष रूप स दृष्टिगत होता था । प्राकृतिक वातावरण शात था और समीर ठडी धारा प्रवाहित कर रही थी । मन भय से काप रहा था । कपन के साथ दुनाली बदूक भी हिल रही थी । मध्य रात्रि के शात

वातावरण में सियारों का बासना शुरू हुआ। मैं कुछ समझ रहा था, शायद सियारों का बासना शेर या बाघ को इस ओर आने की सूचना दे रहा है। कुछ झिलमिला सा लगा, आखें बदली कुछ दिखायी पडने लगा। एक सफेद सा ढेर मानो कुछ लुढक रहा हो। मैं आखें फाड-फाड कर उसे निहार रहा था और साथीगण डर से थर्रा रहे थे। हो न हो, वह शेर ही और छलाग लगाकर दरवाजे पर आ धमके। मेरी दृष्टि ने साबित कर दिया कि वह शेर ही है जो अपने शिकार पर पजा जमाना चाहता है। शायद गुस्से में आकर शेर ने बैल को ले जाने के लिए जोर का झटका दिया और झटका लगते ही बीस मन शहतीरों का वजन शेर के शरीर पर जम गया। कुछ क्षणों तक झटपटाहट तो अवश्य सुनायी दी परंतु फिर एकदम शात। फिर मन में एकाएक अतर्द्वद्व उत्पन्न होने लगा। सोचने लगा यह कानो और आखो का भ्रम है। फिर सोचा, हो सकता है बाघ दबा पडा है या शेर या कोई अन्य हिंसक पशु शिकार को लेकर भाग निकला। कुछ समय पश्चात् चारों दबे पाव अदर के कक्ष में लौट गये। सोचा, सुबह झटपटाहट और एकदम शात होने का परिणाम देखेंगे। क्या चीज थी वह ! नींद किस प्रकार आती, सुबह का मुह देखने को तरस रहे थे हम।

कुछ समय पश्चात भयपूर्ण रात समाप्त हो गयी। मैंने धीरे से खिडकी खोलकर जिवाले की ओर झाका। देखा तो जिवाले से नीचे शेर दबा पडा था। तब हम चारों व्यक्ति कक्ष से बाहर निकलकर जिवाले के पास पहुचे। चाचा भूपेंद्र ने बदूक से एक खाली फायर किया। शोर मचाया, 'शेर मर गया है।' तब मृतक शेर के दर्शन करने के लिए ग्रामीणों का ताता जुट गया। लोग मृतक शेर के ऊपर पत्थर फेंकने लगे। उसे मारने के लिए नहीं अपितु यह जानने के लिए कि शेर जीवित तो नहीं है। कुछ समय पश्चात लोगों ने मिलकर मृतक शेर के ऊपर से शहतीरों को हटाया और निर्जीव शेर को खींचकर एक तरफ रख दिया। वृद्ध हिंसक दादा ने दो ज्ञान की बातें हमें बतायी। हिंसक दादा ने बताया कि शेर की असली मूछें टूटकर जमीन पर पड जायें तो शेर जान जाता है कि मेरी मौत अवश्य होगी या मौत होने वाली है। दूसरी बात यह कि

यदि शेर को अचानक गोली मार दी जाये और गोली लगते ही शेर धराशायी हो भी जाये तो जब तक शेर की असली मूछें न टूट जायें तब तक शेर अपने को पूर्ण शक्तिशाली समझता है। शेर की असली मूछें किसी का नहीं मिलती है।

कुछ समय पश्चात् मृतक शेर को हमने गाव के थोकदार को सौंप दिया और तत्काल दिन का भोजन करने के पश्चात लुहाचौड की ओर अग्रसर हुए। दिन ढलने तक हम चिरान स्थल पर पहुच गये। साथ में एक घुवीड को मारकर ले गये। घुवीड का शिकार ठाठियो ने आनद से खाया।

दूसरा महीना भी गुजर चुका था। धीरे-धीरे चिराई के कारोबार मे ढीलापन आने लगा क्योंकि अक्सर ग्रामीण लोग दो माह के लिए जगलो में चिराई का काय करते है और फागुन माह के मध्य अपने खेतो की जुताई करने के लिए घर लौट जाते है। साथ ही जगलो मे धीरे धीरे रूखापन आने लगता है। पतझड के कारण कुछ पेडो के ढाचे नजर आने लगे थे।

वहा भालू और बाघ की लडाई भी देखने को मिली। यह एक जानने योग्य बात है कि मादा भालू और नर बाघ के मेल से चरख पैदा होता है। शायद तभी बाघ और भालू के बीच लडाई हुई थी। कभी-कभी तो भालू डडे से बाघ को जान से मार देता है। इस प्रकार की कई घटनाए देखने म आती हैं। सबसे अधिक रोमाचकारी तो शेर और हाथी का मुखडा भेंट लगा जो देखने मे आकर्षक तो था परतु भयकर भी। कहावत है जान बची लाखो पाये। उस समय ठेकेदार भी हमारे साथ था। चिरान-स्थल से दो मील दूर पश्चिम दिशा मे सुमेणा नाम का एक पानी का बडा स्रोत था जो चारो ओर से बास और जगली झाडियो से मिपलित रूप से घिरा हुआ था।

कभी कभी इस गोज पर शेर और हाथी परस्पर द्वद्व करते नजर आते हैं। हम भी इस स्रोत की ओर अग्रसर हुए। उधर कुछ मात्रा में पेडो के पुरातन पत्ते झड चुके थे इसलिए सूखे पत्ता पर पाव पडने पर पत्ता से पट-पड' की आवाज निकलती थी। चारो लोग दब पाव मौन

होकर जलाशय के पास पहुचे। जलाशय के [illegible] खड पड पाधा व भाडिया का दृश्य बडा भयभीत करने वाला था। किंतु उस दृश्य से अधिक भयकर सूखे बासा की परस्पर रगड [illegible] आवाज थी [illegible] हर प्राणी का जलाशय के पास आन से रोक रही थी। कभी कभी सूखे बासो के परस्पर टकराव के कारण वना मे आग लग जाती है।

कुछ समय पश्चात हम बबूल के बोटा के अदर जा छुपे ताकि किसी हिंसक पशु की दृष्टि हम पर न पड जाय। बबूल के बोटो के मध्य से जलाशय के पास की हर वस्तु पर विस्तृत रूप से गाढी दृष्टि जमाकर अध्ययन किया जा सकता था कि जलाशय की किस दिशा में क्या क्या कार्यकलाप हो रहा है। जलाशय से कुछ दूरी पर सादण का एक लबा वृक्ष था। सोचा, इस वृक्ष की ऊचाई तक पहुच जाना चाहिए। यदि शेर प्यास बुझान के लिए इस जलाशय पर आ पहुचा तो सब जिंदगी से हाथ धो बठेंगे। मौका पाकर हम बडी सावधानी स पेड की ऊचाई तक पहुच गये। हम पड पर चालीस फुट की ऊचाई पर थे खतर से बचन के लिए। शायद आपको मालूम न हो, शेर ऊचाई म बाइस फुट की कार-गर छलाग लगाने मे सफल हा जाता है और यदि दो शेरा मे घोर लडाई छिडी हो तो शेर उस काल छत्तीस फुट की ऊची छलाग लगान में सफल हो जाता है। ऐसा देखा भी गया है। हमने पेड के ऊपर से दृष्टि दौडायी। वहा पानी के स्रोत और बास ता थे ही, परतु सभी प्रकार के छोटे बडे दैत्याकार पत्थरो का जमघट भी लगा था। इन पत्थरो के बीच किसी भी व य प्राणी को नजर म लाना बडा विकट था। मेरा अपना अनुमान है शायद उ ही पत्थरा की ओट म एक हाथी का बच्चा घूमता फिरता निकल आया। हम उसे बदूक का निशाना नही बनाना चाहते थे क्योकि बदूक की भयकर ध्वनि सुनकर एक तो व य प्राणियो म खलबली मच जाती है, दूसरे, इस स्रोत म पानी पीन के लिए कोई भी जगली पशु तैयार नही होता।

तब हमारी दृष्टि उस ओर सिमट गयी जिस ओर से जगली हाथिया का एक विशाल दल बास खाने व पानी पीने के लिए स्रोत की ओर अग्रसर हो रहा था। बास हाथिया का एक सर्वश्रेष्ठ और स्वादिष्ट

आहार है इसलिए वनो मे हाथी बास खाना अधिक पसद करते है। ईश्वर ही जाने, शायद वही कही पत्थरो की आड मे शेर हाथी के बच्चे की ताक मे छुपा हुआ था या जब हम पेड पर चढ चुके थे, उसके बाद वह वहा आया हो। कुछ बताना कठिन है। हाथी का एक प्यारा बच्चा बास खाने के लिए स्रोत के निकट आकर बास बोटा पर अपनी सूड फेरने ही वाला था कि शेर ने बास बोटा की आड से सीधी हाथी के बच्चे के ऊपर छलाग मार अपने तेज नाखूनो से उसको चित कर दिया। बच्चे की करुण चिग्घाड सुनकर दैत्याकार हाथियो का विशाल दल स्रोत पर आ पहुचा। हाथियो के घिराव मे आने से पूर्व ही शेर बास-बोटा की दूसरी तरफ से निकल गया। यह सारा दृश्य हम पेड की चोटी से देख रहे थे। बच्चे को मरा देखकर दैत्याकार हाथियो के विशाल दल मे खलबली मच गयी।

हम मन ही मन सोच रहे थे कि अब क्या होगा। कही हाथी क्रोधवश बिगड गये तो पेडो को उखाडना शुरू कर देंगे और हम बमौत हाथियो का शिकार होना पडेगा। परन्तु कुशल यही रही कि कुछ समय पश्चात शेर हाथियो के घिराव मे आ गया। यदि उस स्थान पर सघन रूप से बास-बोट न होते तो शेर अपनी जान से हाथ धो बैठता। परतु चतुर शेर ने हाथियो को अपने फुर्तीलेपन से चकमा दिया और मौका पाकर छलाग लगायी जिसका कोई अनुमान नही। शेर की भरी छलाग को देखकर हम दग रह गये। शेर हाथियो के विशाल दल पर हमला न कर सका इसलिए दूर झाडियो मे जाकर लाप हो गया। तब हाथियो ने क्रोध मे आकर अपनी सूड से भारी भरकम पत्थरो को उठाकर इतना तीव्रता से फेंका कि कई दरख्तो की हरी व सूखी टहनिया टूट टूटकर धरा पर बिखर गयी। कुशल यही रही कि पचानन हमारी दिशा के बिदु की ओर नही लपका बल्कि हमारे मुह की सीध पर कई गज आगे की ओर अग्रसर हो गया था। यदि हाथी हमारे दिशा बिंदु की ओर उन पत्थरो का फकना शुरू कर देते तो हम सब बेमौत मारे जाते।

हाथियो मे सबसे बडी खूबी यह भी है कि ये जिस दिशा मे शेर की हुकार सुनगे उस दिशा की ओर अपनी सूड से भारी भरकम पत्थरो

को उठाकर बहुत तेजी मे फेंकेंगे ताकि शेर उनकी ओर लपकने का साहस न कर सके।

कुछ क्षणों के बाद हाथियों का दल उस घटनास्थल से उस ओर निकल पड़ा जहा बांस-बोट अनगिनत संख्या मे फैले हुए थे। शायद एक हाथी अपने झुंड से पीछे रह गया था। तब हमारी दृष्टि उसी दिशा पर अटकी, जिस दिशा मे जंगली सूअर व हिरण भिन्न-भिन्न कतारों मे बढते चले आ रहे थे। कहीं कहीं वन मुर्गियों की फड़फड़ाहट व चिड़ियो की चहचहाहट भी सुनायी पड रही थी। कुछ ही क्षण बाद, पेड की ऊंचाई से गर्दन घुमाकर देखा तो दो दैत्याकार हाथी अनुचित रूप से लड रहे थे। द्वंद्व स्थल कुछ सपाट व पत्थरो से भरी ढलवा जगह थी। यह मेरा पहला मौका था जब मैंने अपनी आंखो से हाथियो का घोर द्वंद्व देखा। हाथी अपनी सूंड से सूंड लड़ाकर एक-दूसरे को करवट मे लाने की कोशिश करते परंतु चतुर जानवर अपने बल से एक-दूसरे को चकमा देते। दूर तक उनकी सूंडो की घातक चोट सुनायी पड रही थी क्योंकि वे अपनी सूंडो से ही एक दूसरे का बदन सेंक रहे थे। कभी-कभी हाथी भयंकर चिंघाड मारकर अपने साथियो को बुलाते जान पडते थे तो कभी सूंड से बडे बडे पत्थरो को उठाने की कोशिश करते, किंतु सब व्यर्थ हो जाता था। आखिर एक हाथी ने पेड की विशाल टहनी तोडकर दूसरे हाथी के ऊपर फेंक दी। हम यह देखकर चकित रह गये कि हाथी ने जिस पेड की टहनी को तोडकर अपने प्रतिद्वंद्वी हाथी के ऊपर फेंका था उस टहनी पर एक डरपोक रीछ बैठा हुआ था जो पेड मे छिपकर दोनो दैत्याकार हाथियो का घोर द्वंद्व देख रहा था। जमीन पर गिरते ही रीछ नौ दो ग्यारह हो गया—अपनी दशा बिगाड़कर। यदि उस काल भालू की बुगत को देखकर हम हंस पडते तो हमें जान से हाथ धोने पडते। परंतु क्या वर्णन करें, हमारे दुर्भाग्य से और पहलवान हाथियों के भाग्य से उस दिशा में न जाने शेर कहां से आ धमका। जैसे ही शेर ने भयंकर हुंकार मारी, उसे सुनते ही दोनो पहलवान द्वंद्व छोडकर एकजुट हो गये। ज्ञात होता है कि जंगली प्राणी परस्पर लड़ने पर भी खतरे के समय एकजुट हो जाते हैं।

मगर भयकर प्रबलता से हमे मौत के मुह की ओर धकेल रहा था। नौबत ऐसी आ चुकी थी कि आगे कुआ और पीछे खाई । भगवान की असीम कृपा से कुछ समय के पश्चात छुर्या सूअर अपने एक दल के साथ उसी घटना-स्थल पर आ धमका । तब बचन मन का साथ चैन न दिया । साहस किया । चाचा भूपद्र दुर्या सूअर को निशाने पर लाना चाहते थे परतु सूअर निशाने से बाहर हो जाता था। दुर्या कभी शेर की ओर लपकता, कभी हाथियो की ओर और कभी अपने साथियो पर बिगड पडता । इस दशा म निशाना साधन पर निशाना चूक जाता और हम एक बडी मुसीबत मोल लेनी पडती परतु हुआ यही कि दुर्भाग्यवश छुर्या सूअर शेर के पीछे जा पहुचा । शेर ने नजदीक से भयकर दहाड मारी और दत्याकार हाथियो ने चिंघाड मारी । उनकी भयकर गजना से जगल का वातावरण रौंध गया । शायद शेर के भय स हाथी वहा स भाग गय । ऐसा प्रतीत होता था कि सूअरो का शिकार करन के लिए शेर उनके पीछे हाथ धोकर पडा हुआ था । इसलिए वह वहा तक आ पहुचा था । हम देख रहे थे कि छुर्या सूअर शेर से भिडने का बार बार प्रयास कर रहा था और बाद म आड लेकर वह भिड भी गया । विचित्र तमाशा था ।

मैंने ठेकेदार को सकेत किया—अब छुर्या सूअर को गोली का निशाना बनाना चाहिए। जो सकट सामने आ खडा होगा, उसका समाधान कर लगे। चाहे पूरी रात इसी वक्ष के आश्रय मे बितानी पड । उधर जबरदस्त हमलावर शात न होनेवाले थे। उनके खूखारपन मे दैत्यवृत्ति छा गयी थी। इसलिए गोली चलाना स्वाभाविक हो गया । सोचा, देखते हैं ऊट किस करवट बठता है । साहसी ठेकेदार ने छुर्या सूअर को गोली का निशाना बनाया। गोली लगते ही खूखार छुर्या सूअर ने शेर की पिछली टाग पर अपन छुरे जैसे पने दातो से जबरदस्त वार किया। तब शेर ने क्रोध मे आकर प्रलयकर रूप धारण कर लिया। शेर ने जान की परवाह न कर सूअर के चियड निकालन शुरु कर दिये । छुर्या सूअर के अन्य साथी भयभीत होकर नौ दो ग्यारह हो गय। तब शेर ने बडे सघष के बाद सूअर का शिकार किया, किंतु शेर के

पुट्ठे पर गभीर आघात के कारण वह कुछ घायल सा प्रतीत होता था। यह एक विशेष जानने योग्य बात है कि यदि छुर्या सूअर अपने पीछे के हिस्से को किसी पत्थर या मिट्टी के ढूह या ढुढीयार में छुपा दे और तब शेर छुर्या सूअर पर वार करे तो शेर छुर्या सूअर को किसी भी हालत में नही मार सकता है बल्कि कभी-कभी तो छुर्या सूअर शेर को फाड देता है।

परंतु शेर शेर ही था। क्रोध में शिकार दबाकर बैठ गया और नजर हमारी दिशा में गाड बैठा। अब मौका जान से हाथ धोने का था। क्या करते! चाचा भूपेंद्र ने गोली दाग ही दी। शायद गोली शेर की पिछली टाग पर लगी या गर्दन पर। हो सकता है, गोली चूक भी गयी हो। गोली की आवाज सुनकर शेर उस पेड की तरफ लपककर ऊंची छलाग भरने लगा जिस पर हम चारो छुप बैठे थे। शायद आपको ज्ञान हो या न हो शेर में सबसे बडी एक यह भी विशेषता है कि यदि शेर को गोली मार दी जाय तो वह ठीक उस स्थान पर आकर शिकारी पर हमला कर देता है जिस स्थान से शिकारी ने गोली चलायी होगी। इसलिए जमीन से गोली चलाने वाले चतुर शिकारी गोली चलाकर तुरत अपना स्थान बदल देते है। परंतु हम महाशय तो पेड की शरण मे चुप्पी साधे बैठे थे। पेड की तरफ शेर को छलांग भरते देखकर हमारे होश ही नही उड बल्कि हमे अपनी जान के लाले पड गये। इसलिए डर-निवारण का एक ही हल था—घडी-घडी फायर करना ताकि जान तो बचे।

शायद बदूक की आवाज सुनकर शेर भी घबरा गया और भयकर गर्जना करता हुआ बीहड जगल में चला गया। मेरा अपना खयाल था कि शेर मरा तो नही होगा परंतु घायल अवश्य हो गया होगा। हो सकता है गर्दन पर गोली लग जाने से कुछ दिनो मे मर गया हो। बाद मे इस विषय में हम अपना हाथ नही डालना चाहते थे क्योकि घायल शेर हमारे प्राण ले बैठता।

तदुपरात हमने बदूक से चार पाच खाली फायर किये ताकि मार्ग में अडा हिंसक पशु मार्ग से विचलित हो जाये। उस समय कुछ नही

सूझता था। सोचा, पेड़ से किस विधि से उतरा जाय। कोई सहारा भी नहीं कहीं किसी की आवाज भी नहीं सुनायी पड़ती थी। भाग्यवश कुछ समय उपरांत उस ओर भोटिया लोग अपनी भेड़ बकरियों को चराने के लिए भोटिया कुत्ता के साथ आ पहुंचे। तब प्रमुदित होकर हम पेड़ से नीचे उतर आये और भोटिया लोगों को घायल शेर के बारे में अवगत कराया ताकि कोई भोटिया शेर का शिकार न हो जाय। भोटिया लोग बड़े साहसी और निर्भीक होते हैं। वे लोग सघन वनों की सघनता में अपना जनमाल जीवन व्यतीत करते हैं। वे लोग जंगल में प्रत्येक हिंसक पशु से बेखबर रहते हैं और न कोई हिंसक पशु इन पर वार करता है।

भोटिया लोगों से बातचीत करने के पश्चात् हम चारों महाशयों ने चैन की सांस ली और लंबे लंबे डग भरते हुए चिरान-स्थल की ओर प्रस्थान किया। चिरान स्थल के समक्ष हमने एक चुबीड का जीवन तारण किया जिसको रात में डटकर शिकार खाया।

समय अधिक गुजर चुका था और जंगल में भी चिराई का कार्य समाप्त हो चुका था। ग्रामीण क्षेत्रों के ठाठियों का अपने घर जाने के लिए तांता लग गया। साथ ही हम भी घर लौटना था क्योंकि खेतों में जुताई का समय निकट आ चुका था। दूसरे दिन हम पाचों जनों ने घर जाने के विषय में विचार विमर्श किया और सामान बांधा। तीसरे दिन हम चिरान-स्थल से मोटर अड्डे तक जीप में बैठकर जा रहे थे कि मार्ग में एक अविस्मरणीय घटना घटी, जिसका वर्णन करना कलम के बूते से बाहर है। जब कभी उस घटना की ओर ध्यान आकर्षित हो जाता है तो आंखों के आगे एक महात्मा आ खड़े होते हैं। महात्मा कौन थे भगवान ही जाने।

हिमपात

मैं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए राजधानी चला आया था और कुछ साला के लिए प्राकृतिक सौंदय से ओत प्रोत पहाडी प्रदेश की ओर से मुह मोड लिया था। जब कभी सौंदयमय पहाडी प्रदेश की स्मृति आ जाती थी तो झट से हिमपात का दृश्य आखो मे छा जाता। तब मन प्राकृतिक यौवन भोग के लिए बार बार विचलित हो उठता और मन मे बार बार लालसा जागती तो केवल हिमपात से ढकी पवतशालाओ को विलोकने की।

मौका मिलना बडा मुश्किल था क्योकि परीक्षाओ के दिन नजदीक आ चुके थे। परीक्षा देनी अनिवाय थी। समयगत परीक्षाए समाप्त हुईं और हृदय खुशी स उमगित हो उठा क्योकि अक्सर पवतीय क्षेत्रो मे हिमपात की शुरुआत जनवरी माह के आरभ स होने लगती है और कभी-कभी तो समय की हेर फेर से दिसबर माह म ही हिमपात अपनी प्रकोपमय झलक दिखा देता है। समय बलवान था। ईश्वर की असीम कृपा से मेरी मन इच्छा पूण हुई। मौका जनवरी माह के अतिम सप्ताह मे मिला क्योकि स्वय को योते म आमत्रित किया था इसलिए उस ओर का सिद्धत जरूरी था। हुआ वही। कहावत है— एक पथ दो काज।''

दिल्ली से पहली बस रामनगर (ननीताल) को सुबह के पाच बजे जाती थी। मै प्रात काल जागा, बिस्तरा बाधा और मोटर अड्डे की ओर प्रस्थान किया। यथासमय मैं मोटर अड्डे पर पधारकर ठीक पाच बजे मोटर मे विराजमान हो गया। तत्क्षण मोटर रामनगर (नैनीताल)

की ओर चल पड़ी। बस मार्ग में छोटे बड़े शहरों के बसअड्डों व यात्री विश्राम स्थलों के निकट से घूमती मचलती चलती। समय की ओट के अनुसार बस ठीक बारह बजे रामनगर पहुंच गयी। यहां शीत का प्रकोप अत्यधिक बढ़ा हुआ था क्योंकि दो दिन पहले पर्वतीय क्षेत्रों में घोर हिमपात हुआ था। दूसरे ठंड का प्रकोप बढ़ा रहे थे हरित पर्वतमालाओं के ऊंचे शिखरों पर उगे चीड़ के गगनचुम्बी व बांझ सिलज के बीच दरख्त जो शीतकालीन ऋतु में सदा बर्फ की ओढ़नी लिये रहते हैं।

उधर रामनगर मण्डी का कोलाहलपूर्ण वातावरण ठंडी समीर के चलने से एकान्तमय हो गया था। मोटर अड्डे पर पहाड़ी ग्रामों की ओर जाने वाली मोटर घर घर का शब्द करते हुए यात्रियों की प्रतीक्षा कर रही थी। मैंने भी पनिहार तक का यात्रापत्र लिया और मोटर की पिछली सीट की खिड़की के पास आसन जमा बैठा। ठीक एक बजे मोटर स्यूणी की ओर चल पड़ी।

हिमपात हो भी जाये तो इस जलवायु में पाये जाने वाले फलदार वृक्षों पर हिमपात का काफी कुप्रभाव पड़ता है। मुख्यतः आम, पपीता व केला के फलदार वृक्ष काफी प्रभावित होते हैं। उस साल इन फलदार वृक्षों पर बहुत कम मात्रा में फल दिखायी देते हैं। लोग कहते हैं, पेड़ पाले से जल गये हैं। इसके विपरीत शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में पाये जाने वाले फलदार वृक्षों पर हिमपात का काफी अच्छा प्रभाव पड़ता है। सेब, नासपाती, खुमानी, आलूबुखार, अखरोट, दाड़िम व आड़ू आदि शीतोष्ण जलवायु में फूलने फलने वाले फलदार वृक्ष हैं।

हिमपात के होने से समशीतोष्ण भागों में रबी की फसल उन्नत रूप में पनपती है। केवल शीतोष्ण भागों में रबी की फसल पर हिमपात का कुप्रभाव पड़ता है, जिसे लोग कहते हैं अधिक ठंड के कारण गेहूं की फसल पर कुई लग गयी है।

मोटर से अलमोड़ा व नैनीताल की वन-घाटियों पर जब दृष्टि पड़ी तो गगनधुरी डांडा जैसे कई अन्य पर्वत दूधिया रंग में निखर रहे थे। सरसराती मलयाचली समीर उन आगंतुक वन घाटियों से टकराकर अमृत रस की सी महक महका रही थी। मोटर दीवा जंगल से दूर थी किंतु दीवा दर्रों का जंगल मुंह के आगे ताज-सा नजर आता था। दूर से निहारने पर नंगी डांडा का सपाट पर्वत और दीवा जंगल की गगन चोटियां हिमगिरि के रूप में दृष्टिगत होती थीं।

हिमश्वेतमा में दीवा की छवि विमुक्त मालूम पड़ती थी। प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य हिमश्वेतमा मानव के हृदय को मोह रही थी। भौगोलिक दृष्टि से दीवा जंगल में गुजुडगढ़ी वन-क्षेत्र में उत्तराखंड की सर्वोच्च चोटी है, जो समुद्रतल से आठ हजार फुट से भी अधिक ऊंची है।

उत्तराखंड में गुजुडगढ़ी प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। ग्रीष्मकालीन ऋतु में पर्यटक गुजुडगढ़ी की चोटी पर चढ़कर समस्त गिरिराज की छवि का आंखों से रसपान करते हैं। इस चोटी से सैकड़ों मील दूर के क्षेत्र, जैसे पूरब में समस्त अलमोड़ा एवं नैनीताल, पश्चिम में देहरादून व मसूरी की पहाड़ियां, उत्तर में समस्त हिमालय

पवत, दक्षिण मे नगीना, घामपुर एव मुरादाबाद दूरबीन द्वारा आसानी से निहारे जा सकते हैं।

सौपरवाल की ओर मडिलाडाडा समेत भियार की चाटिया भी दूधिया रग म निखर रही थी। मेरी दृष्टि उन गलशिखरा पर जा अटकी जो प्रकृति को अपने सौंदय स पोत रहे थे। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा क्याकि मोटर-माग दीवा जगल के मध्य स निमित है और मोटर को भी दीवा के जगल स गुजरना था। धीरे धीरे मोटर सडक की कीचडली मिट्टी को सडक के किनारो पर छिडकती जडाऊखाद पहुची। जडाऊखाद मोटर का सब अड्डा है। इस स्थान म राशन, चाय की कई छोटी छोटी दुकानें व भोजनालय भी हैं। मोटर मे बठे यात्री दिन का जलपान इस स्थान म रुककर करत ह। प्राकृतिक सौंदय के मध्य यह एक रमणीय भ्रमण-स्थल भी है।

मोटर स उतरकर मैंने देखा तो जडाऊखाद म मोटरा का पडाव लगा हुआ था। यात्रीगण प्रफुल्लित होकर दीवा की गगनचुम्बी चाटिया को निहार रहे थे। मैंने लोगा से पूछा, "महाशयो, यहा इतनी सख्या म मोटर क्या खडी हैं? बिगड तो नहीं गयी हैं?" महाशया ने बताया कि भारी मात्रा म हिमपात होने के कारण दीवा स लेकर कुठिजा ग्राम तक सडक पूण रूप से ढक सी गयी थी। आज कुछ आशा है कि मोटरें स्यूसी की ओर प्रस्थान करेंगी।

सोचा, घर पहुचने के लिए क्या युक्ति ढूढ निकाल। अब स्वय के लिए एक बडी मुसीबत उत्पन्न हो गयी क्याकि मुझे यथासमय यात्रा में पधारना था और स्वय जसे कई अन्य व्यक्ति मोटर म विराजमान थे जिनको यथासमय घर पहुचना था। क्या करते? सभी यात्रिया ने इस जटिल समस्या पर गभीर रूप से विचार विमश किया और एक युक्ति ढूढ निकाली। सब यात्रीगणा न ड्राइवर महादय से कहा, "सडक पर पडी बफ अब कुछ कम हो गयी होगी। मोटर की लीक नजर तो आ रही होगी। अब मोटर मे बिठाकर कुलिया को ले चले। सडक की लीक पर जहा अधिक मात्रा म बफ पडी दिखायी देगी, कुली उस बेलचा से

साफ कर देंगे ताकि मोटर के चलन में रुकावट न पड़े। ड्राइवर महोदय इस बात पर सहमत हो गये।

कुछ ही क्षणों में मोटर सड़क पर बची-खुची बर्फ को रौंदती हुई धुमाकोट की ओर चल पड़ी। राजकीय स्कूल व सरकारी कार्यालयों की बढ़ोत्तरी एवं अन्य सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण धुमाकोट एक प्रसिद्ध व्यापार केंद्र भी है। इस क्षेत्र में ठंड का प्रभाव और भी अधिक बढ़ा हुआ था क्योंकि बांज व चीड़ के पेड़ों में टकराती समीर तीव्र गति से प्रभावित हो रही थी। चीड़ के पेड़ों में खास खूबी यह होती है कि चीड़ के वृक्ष दूर चलती पवनों और बरसती बरखा को अपनी ओर खींच लेते हैं, चाहे बारिश दो मील दूर क्यों न बरस रही हो। इसलिए ठंड इतनी थी कि उसके ठंडेपन को कोई आंक नहीं सकता था। मैं मोटर के विषय में मन ही मन विचार-विमर्श कर रहा था। कहीं मोटर का गरम शक्तिशाली इंजन इस ठंड की मार से चुप हो जाये तो क्या होगा ? मोटर धीरे धीरे बर्फ के ऊपर से डगमगाती हुई दीवा जंगल के मध्य पहुंची। धन्यवाद उन मोटरचालकों के लिए जो वे निशान दाग देते हैं। मोटर डगमगा रही थी। मुझे ऐसा प्रतीत होता था, कहीं मोटर वन खंडहर में गिर न जाये क्योंकि कभी-कभी बर्फ के बड़े-बड़े ढेले लुढ़क-लुढ़ककर वन के दुर्गम खोकों में जा गिरते थे।

खड़े पेड़ों की दशा देखने व मनन करने योग्य थी। बांझ, कापल व तिलज के छप्परीले बौने वृक्षों के ऊपर बर्फ उस काल तक भी इस प्रकार जमी पड़ी थी मानो प्रकृति के महान कलाकार ने उन वृक्षों पर अपनी विभिन्न कलाकृतियों का सौंदर्य प्रदर्शन करके मानव के मन को आकर्षक सचेत किया हो। हर किस्म के वृक्षों को काफी हानि पहुंची थी। खासकर चीड़ की विशाल टहनियां टूटकर ढलवानों में बिछी दिखायी देती थीं। इतनी बर्फ व बर्फानी ठंड में पर्वतीय जन अपने पशुओं के लिए चारा व ईंधन के लिए लकड़ी एकत्रित करने में व्यस्त थे।

एक साधारण सा पहनावा था उन ग्रामीण जनों का। पर्वतीय क्षेत्रों में कितनी भी मात्रा में हिमपात हो जाये परंतु ग्रामीण लोगों के व्यवसाय में एकरूपता बनी रहती है। वे ठंड के आदी होते हैं। प्राय-

देगा गया है कि पवतीय लाग हिमपात स घृणा करते हैं।

मोटर दीवा देवी के पवित्र स्थान पर पहुची तो देखा, स्यूसी से आने वाली मोटर सडक पर बची-गुची बफ का सफाया करती रामनगर की आर बढ़ती चली आ रही थी। मागे मोटर डेटियाला स भरी हुई थी। नपाली डाटी स्यूसी व बैजरा की आर अधिक सख्या में रहते हैं। य लाग अपना देश नपाल छाडकर भारत में मजदूरी कमाने के लिए आया करते हैं। इसलिए कुलिया म अधिक सख्या डाटिया की थी। मैं उन कुलिया का देखकर आश्चय में पड गया। य शरीर पर कुता व खद्दर का रेखदार पायजामा पहने हुए थे। पाव म गम बूट के स्थान पर एक साधारण सा जूता था। इतनी ठड में भी वे लाग बिना ठिठुराहट के सडक पर पड़ी बफ को हटाने म सलग्न थे। उन्हें ठड नहीं लगती थी। लगती थी सबस पहले ता गरीबी, जा धुरी बला है। दूसरा देश देश की चाल व रीति है यह भी हर प्राणी पर जलवायु का गहरा प्रभाव पडता है। उनम से कुछ कुली थे डाटी य डाटियाल, जा चौमास मे जगलो की दुगम कदराओ से चिरान के भारी भरकम शहतीरा को अपनी पीठ पर रखकर मोटर-मार्गों तक पहुचाते हैं।

मोटर मुश्किल से दीवा देवी के पवित्र स्थान स दो फर्लांग आगे बढी होगी तब तक गरूडा भेट के भयकर स्थान पर मोटर के इजन मे पेट्रोल सचारक नली की चूडिया घिसकर ढीली हो गयी। जस ही ड्राइवर महोदय मोटर (बस) का इजन चालू करते, इजन के जोर लगाने पर पेट्रोल नली से तेज धारा में बाहर बहने लगता और मोटर रुक जाती। यात्रिया के सम्मुख पुन एक बडी कठिनाइ उपस्थित हो गयी। मोटर बफ से घिरी पवतमालाओ के मध्य शात हो गयी। अकसर पवतीय क्षेत्रो मे मोटरा की यही दशा देखने म आती है। सब यात्रिया ने अपने दिमाग से पेट्रोल की नली का कसने मे एडी चोटी का जोर लगाया परतु नली से पेट्रोल का बाहर निकलना बद न हुआ। सब हिम्मत हार बैठे। आखिरकार मैंने एक बारीक कपडा सीने वाले धागे को पेट्रोल सचारक नली की घिसी चूडिया पर लपेटकर उसके ऊपर नट कसकर इजन मे पेट्रोल का सचार कराया। एक सूती बारीक धाग न मोटर के शक्तिमान इजन से

टक्कर ली, जो किसी ने सोचा तक न था।

यात्रियों का पतझड़ हृदय बसंत में बदल गया। कुछ विश्राम कर यात्रीगण मोटर में विराजमान हुए, तब मोटर स्यूंसी की ओर अग्रसर होने के लिए ठीक दशा में खड़ी थी किंतु तेज चलते बर्फीली हवाओं ने मोटर के शक्तिमान इंजन को जाम कर दिया। क्या मजाल कि मोटर को चालू करने पर इंजन घर-घर का शब्द तक कर दे। मैं स्वयं इस विचार में डूब गया कि यदि मोटर इसी हालत में खड़ी रह गयी और रात्रि में हिमपात हो गया तो सारे यात्रीगण मोटर समेत बर्फ से ढक जायेंगे।

यह एक बड़ी उलझन थी। भावविभोर होकर मैंने दूर दृष्टि दौड़ायी। देखा तो हिमालय पर्वत की उच्च श्रेणियों में से घोर हिमपात होने का संकेत मिल रहा था। दूर से निहारने पर नयनाभिराम हिम की श्वेतिमा मन को मोह रही थी। लगता था, हाथ पहुंचाकर छू लूं। मन में एक परलोक भावना का जागरण हुआ। शायद यही स्वर्ग है। मरकर सिद्ध पुरुषों की आत्माएं यति या देव बनकर हिमालय पर्वत में निवास करते होंगी। कुकर्मी की आत्मा हिमालय पर्वत में वास नहीं कर सकती है। यहीं शिवजी का कैलाश पर्वत है। भाव मन से विलीन हो चुका था। दीवा जंगल की चारों दिशाओं में दृष्टि दौड़ायी, प्राकृतिक सौंदर्य के अंतस्तल में मैंने ईश्वर के साक्षात दर्शन किये।

अंत में दीवा देवीजी के पवित्र चरणों की असीम कृपा से बस का इंजन चालू हुआ और मोटर स्यूंसी की ओर चल पड़ी। मोटर दीवा के मध्य सड़क के लंबे लंबे मोड़ों पर घूमती कतराती कुठिला ग्राम की ओर पहुंची। उस क्षेत्र में हर वस्तु की दुर्दशा देखने में आयी। बर्फ से लदे मकानों की छतें, पेड़, पशुओं का बाहरी स्थान, जलाशय, पनघट, लकड़ियों के कठघरे व खेत—सब बर्फ की चपेट से मुक्त न थे। यहां तक कि बर्फ लोगों के मकानों की छतों से खिसककर गिरती जान पड़ती थी। यह भी देखने में आया कि किसी मकान के अंदर बर्फ पिघलकर पानी के रूप में पसर रही थी।

मकानों की छतें ढलाऊ होने पर भी बर्फ छतों के मुंडेरों पर अधिक

जमी पडी थी। पवतीय क्षेत्रा म मकाना की छत ढलाननुमा इसलिए बनायी जाती हैं कि हिमपात काल में हिम मकानो की छता पर न ठहरे और जमीन पर जा गिरे।

इस क्षेत्र मे गोशालाओ स धुआ निकलता दिखायी दे रहा था। अक्सर शीतोष्ण भाग वाले ग्रामीण लोग हिमपातकालीन समय मे अपनी गोशालाओ मं रात दिन आग ज्वलत रखते हैं। आग के ताप से पालतू पशुआ का ठड मे बचाव हाता है। यदि गोशालाओ म आग न जलाई जाये तो पशुआ की दशा दखने योग्य हो जाती है और कमजोर पशु मर जाते है। एक कतार म बनाइ गयी गोशालाए उस काल इस प्रकार विराजती थी मानो स्टेशन पर मालगाडिया के इजन से धुआ निकल रहा हो।

इस क्षेत्र मे मोटर कुठिला ग्राम के मोटर-अड्डे पर रुकी। ठड अधिक सता रही थी। फिर भी मेरा मन हर्षातिरेक से उमगित था। तब अन्य यात्रीगण मोटर स उतरकर एक चाय की दुकान पर गम गम चाय का स्वाद लेने के लिए जा खडे हुए। अक्स्मात मेरी मुलाकात मेरे एक पुराने मित्र श्री तूफान स हुई जो उच्च लेखक व कलाकार है। मुझे दख-कर तूफान जी आश्चय म पड गये। वार्तालाप के मध्य मने सारी कहानी उन्ह सुनायी। इस मोटर अड्डे पर मोटर का कुछ ही देर तक रुकना था इसलिए श्री तूफान से विदा लेकर मैं मोटर मे बठ गया। तब मोटर का चलना स्वाभाविक था। जसे जसे मोटर आगे की ओर बढ्ती जा रही थी, धीर-धीर पर्वीनयार का सपाट भाग मुझे मोटर स दृष्टिगत हाने लगा। पर्वीनयार गढवाल की सबसे बडी नदी है। बर्फ स नयार की दुगम घाटिया श्वेत रूप म चमक रही थी। मेरा ग्राम का भावरी भाग जो प्राचीन काल म लोगा के लिए घुडदौड का स्थान था, अब वह अन्नोत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। वह स्थान ता सगमरमर के बन फन के रूप म बदल गया था। यही नही बजरा के गगनचुबी डाडे आर थैलीसेण की ऊची चोटिया तो हिमगिरि का रूप ले बैठे थे।

मुझे ता पणिडा के रमणीक स्थान म उतरना था और मोटर का

स्यूसी तक पहुचना था। मोटर पणिडा के डाकघर पर रुकी। मोटर से उतरकर दृष्टि नयार की अतलस्पर्शी जलराशि पर पडती है। नयार की अथाह जलराशि पहले हिमशिलाओ के साथ मृदगमय-से विलाल कर रही थी। उस काल नयार पर पुल का निर्माण नही हुआ था और मुझे नयार पार जाना था किंतु उस पार जाने के लिए नयार का बहता ठडा जल व हिमशिलाए मन को आगे बढने से रोकती थी। केवल तैरन घाट पर *नयार को निस्तरण किया जा सकता था। उस स्थान पर* पानी एक लबी बफ शिला के रूप म जम गया था। उसी शिला पर चढकर मन नयार को पार किया।

बदलता समय, ये लोग

यो तो छाट बडे शहरा म आप लोगा न छोटे बडे जादूगरा को सडका के किनारे या निम्न स्तर के क्वाटरा के आगे मजमा लगात या तमाशा दिखाते देखा होगा। जी हा आपने जादूगर को कहते भी सुना हागा— बाबू जी ठहरना ठहरना बाबू जी—ठहरना। देखो, मेरे हाथ की सफाई नजर का खेल चुरेंट ढ्यरी टेंट। जादूगर डुगडुगी बजाने लगता है डम डम डम। धूत कहकर जादूगर तमाशा देखने वाला के कान चौक न कर दता है और छोटे बडे सभी तमाशा देखने वाले गण खिलखिलाकर हस पडते है। फिर जादूगर खेल दिखाना शुरु करता है। एक हाथ से बासुरी की तान और दूसरे हाथ से डमरू की डमडमान, केवल जादूगर के हाथ की सफाई से कभी डिबिया गायब तो कभी गिलास गोल, कभी घडा खाली तो कभी घडे म पानी कभी चव नी तो कभी अठन्नी, कभी तालिया की गड-गडाहट तो कभी तोता मैना की फडफडाहट। इस तरह जादूगर तरह तरह के खेल जनता के सम्मुख प्रदर्शित करके अपनी आजीविका प्राप्त करता है—केवल हाथ सफाई, नजर का खेल, चुरेंट ढ्यरी टेंट स। यह भी एक विद्या है। ठग विद्या नही है और न मैं इसका ठग विद्या कहूगा। वास्तव में जादूगर अपने सीखे हुए जादू विद्या रुपी कला का प्रदशन करता है। हा है भी तो जादूगर एक महान कलाकार जो तमाशा देखने वालो की आखें बाध देता है और तमाशा देखने वाले एकचित्त होकर जादूगर के हाथ की सफाई वाले कला-कौशलों को विचित्र रूप से देखते रहते हैं। केवल हाथ की सफाई, नजर का खेल चुरेंट ढ्यरी

टंट स जादूगर थोडा बहुत पसा समेट लेता है। इस तरह पैसा कमाने मे न तो जादूगर को कोई आत्मग्लानि होती है, न किसी प्रकार की आपत्ति और न तमाशा देखकर पैसा फेंकने वाला को जादूगर के बिछे चौपाल पर। जादूगर मागकर नही खाता है और न छल कपट से पैसा कमाता है। दूसरी बात, जादूगर जबरदस्ती किसी भी दशक के साथ नही करता है—नही जी मैं तो एक रुपया से कम नही लूगा क्या देखा आपने मेरा हाथ की सफाई वाला दिलचस्प खेल। नही खडे होते तमाशा देखन, नहीं जी, आपको एक रुपया देना ही पडेगा। जादूगर के बिछे चौपाल पर कोइ दस्सी, कोई पजी और कोई भाग्यशाली चवन्नी या अठन्नी फक देता है और जादूगर सारा पैसा समेटकर दूसरी ओर तमाशा दिखान के लिए अग्रसर हो जाता है। परतु इस आधुनिक एव वैज्ञानिक युग म कुछ सालो स इन लागो के दशन करने बडे ही दुलभ हो गय है और न अब य लाग ही दिखायी दत ह आर न इनका कोई दिलचस्प खेल ही जिसक द्वारा य आजीविका प्राप्त किया करत थे।

जादूगरो की देखादेखी म न तो बदरो का नाच दिखाने वाले ही दिखायी देते हैं और न डुगडुगी बजाकर बदरो द्वारा प्रदर्शित दिलचस्प खेल ही जिन्ह बदर वाले सडको के किनारो या गलियो म दिखाते फिरते थे। बदर का रूठना बदरिया का विवाह, बदर का नाराज होकर ससुराल न जाना और कुछ नही तो बदर को जबरदस्ती डडे के बल दात दिखलाते हसाना कितना अच्छा लगता था। अब प्राय दखने मे आया है कि तमाशागीरियो ने इस तरह के मजमे प्रदर्शित करके आजीविका कमाना छोड दिया है शायद किसी कारणवश। यही हाल कठपुतलियो का खेल प्रदर्शित करने वालो का है जो काठ के बन निर्जीव कठपुतलो को अपनी कला द्वारा बारीक धागे के बल से एक नया जीवन प्रदान कर देते हैं। आपन देखा होगा, कठपुतलियो का मनमोहक नत्य, राजाओ की बैठक म नतकी को नाचते कितनी सुदर नाचती है काठ की कठपुतली, आपने सुना भी होगा, पल्लो लटके गोरि को पल्लो लटके, जरा टेढा होजा बालमा '' कठपुतली वाला कितना महान कलाकार है जो धागे के बल से काठ की कठपुतलियो को नचाकर आप जैस दशको क मन

को मत्रमुग्ध कर लेता है परन्तु फिर भी लोग उनकी कला की कीमत नहीं चुका पाते हैं। जो थोडी-बहुत कीमत उसका आप लोगों के सामने अपनी कला प्रदर्शित करके मिलती भी है उससे वह अपने परिवार का तो दूर रहा, अपना ही गुजारा नहीं कर पाता है और उसे हताश होना पडता है। मैं ज्यादा विस्तार में नहीं कहना चाहता हूँ, परन्तु देखने से विदित होता है कि ये लोग भी इस कला को जनता के सम्मुख प्रदर्शित करने में हिचकते हैं। हिचकने की तो बात है ही शायद इन लोगों ने यह धंधा छोड ही दिया है। वास्तव में इस धंधे को अपनाने से इनको कोई लाभ नहीं होता है क्योंकि न इस धंधे में कोई इज्जत है और न कमाई ही बदकिस्मत का मारा एवं आज कोई बिरला ही होगा जो इस धंधे के अलावा अन्य उद्यम करने में असमर्थ हो।

शायद इन लोगों ने कुछ धंधा करना शुरू कर दिया है जिसके द्वारा इन लोगों की आजीविका पूर्ण रूप से निभ रही है। इसमें हमें भी खुशी है। कुछ धंधा करके अपना पेट भी पाल सकते हैं और दूसरों की भी आर्थिक मदद कर सकते हैं। साथ ही देश के परोपकार में अपना हाथ बटा सकते हैं। इसमें हर व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढती है और अन्य लोगों की दृष्टि में वह प्रतिष्ठावान व्यक्ति आंका जाता है।

शायद आधुनिक एवं वैज्ञानिक यन्त्रीकरण युग को मद्देनजर रखते हुए इन लोगों ने स्वयं को समय के अनुसार ढाल दिया है और न अब कोई जादूगर ही नजर आता है और न उसका दिलचस्प खेल हाथ की सफाई वाला न बंदरों को जबरदस्ती डंडे के बल हंसाने वाले और न कठपुतलियों का मनमोहक नृत्य प्रदर्शित करने वाले ही। वास्तव में मनुष्य को बदलते समय के अनुसार अपना समस्त जीवन चक्र बदल देना जरूरी है। समय के अनुसार चलने वाला व्यक्ति अपने जीवन काल में धोखा नहीं खाता है और न किसी के आगे लाचार होता है। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग नहीं कर पाता है उस मनुष्य का जीवन निरर्थक है, सार्थक नहीं। इसका प्रमुख उदाहरण आप बेंत के पौधे में लें जो बहते पानी की तेज धारा के अनुसार अपना सीधा अकडपन ढाल देता है। अन्य पेड पौधों की अपेक्षा उसका कुछ भी नहीं बिगडता है। समय

को मध्यनजर रखते हुए प्रत्येक मनुष्य को, चाहे वह अमीर हो या गरीब, बेत के पौधे से शिक्षा लेनी जरूरी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश अवश्य गरीब रहा, इसमें कोई संदेह नहीं। देशवासियों पर भी गरीबी का पंजा जमा रहा। उस काल लोग कहते थे, सब कुछ तो अंग्रेज ले गये हैं, क्या करें, इसलिए उस समय अपनी आजीविका कमाने के लिए जिसके हाथ जो धंधा लगा, वह उसी धंधे को अपनाने लगा। कुछ लगनशील लोग तो उसी धंधे में अपना जीवन सफल बना गये और कुछ लोग रह गये। हुआ यही कुछ पास तो कुछ फेल। परंतु धीरे धीरे बदलते समय के अनुसार जन जागृति में चेतनपन आया, देश के नये कर्णधार आगे आये जिन्होंने देश की बागडोर अपने हाथों में ली। देश में बुद्धि बल से ज्ञान विज्ञान की प्रगति हुई। विज्ञान की प्रगति के साथ साथ देश में नये-नये कार्यकलापों का उद्गम हुआ जैसाकि आप आज के युग में देख रहे हैं।

गरीबी मिटाने के लिए देश के महान कर्णधारों ने भी काफी प्रयास किये हैं जो देशवासियों की दृष्टि में प्रगति की ज्योति बनकर फल रहे हैं और भविष्य में भी फलते रहेंगे। इस विषय के कई ज्वलंत उदाहरण आपके सम्मुख प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित हैं। देश को समृद्ध बनाने व देशवासियों के लिए सरकार क्या क्या नहीं कर रही है! सरकार ने आजकल बेरोजगारों के लिए ही नहीं अपितु प्रत्येक कर्मठ व्यक्ति के लिए अनेकों उद्योग धंधों का निर्माण किया है चाहे वह अमीर हो या गरीब, चाहे वह हाथ की सफाई वाला हो या जबरदस्ती डंडे के बल बंदर को हिलाने वाला हो और चाहे वह काठ की कठपुतलियों का मनमोहक नृत्य प्रदर्शित करने वाला 'लटके गोरिको' वाला हो। प्रत्येक को काम देने के लिए अनेक कुटीर उद्योग धंधों का विस्तार किया है।

सरकार ने छोटे-बड़े सभी प्रकार के सहकारी बैंक-समितियों व अन्य कई बैंकों का निर्माण करके विस्तार किया है जहां से प्रत्येक देशवासी अपना निजी व्यवसाय व छोटा-बड़ा धंधा खोलने के लिए कम ब्याज पर ऋण ले सकता है। भूमिहीनों को भूमि-वितरण के साथ साथ कृषि के उन्नत औजार प्रदान किये हैं ताकि प्रत्येक व्यक्ति कृषि से उत्पादन

करके अपनी गरीबी दूर करके देश को समृद्ध बनाने मे सरकार का हाथ बटाकर स्वर्गीय प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का वचन पूरा कर सकें। दूसरा, ताकि खाद्य समस्या के विषय मे हम किसी अन्य देश पर निर्भर न होना पडे। यही नही सरकार ने अशिक्षितो के लिए भी देश मे चाहे गाव हो या शहर, कई हजार प्रौढ शिक्षा केंद्र खोले है ताकि देश का हर नागरिक शिक्षित होकर स्वय को पहचानकर स्वावलबी बन सके और अज्ञानता, रूपी अधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश के मार्ग मे आकर अपने भविष्य का सही पथ प्रदर्शन कर सके ताकि कोई भी व्यक्ति परिवार पर बोझ बनकर और देश पर भार बनकर न रहे। इतना कुछ करने पर भी सरकार जनता के हित मे फिर भी अनेको महत्त्वपूर्ण कदम उठाकर उनको सफल बनाने का भरसक प्रयत्न कर रही है ताकि देश का जन जन फूले फले और बसत ऋतु जसी मनमोहक फूलो से लदी खूबसूरत बहार व सुगधित मलयाचली समीर प्रत्येक देशवासी के जीवन को स्पर्श करे। यह तभी सभव है जब प्रत्येक व्यक्ति कर्मठ निष्ठावान, साहसी, लगनशील व परोपकारी हो, उजाड व हताश हृदय वाला न हो। यही देश का प्रत्येक महान बुद्धि जीवी वर्ग चाहता है कि देश किस प्रकार उन्नति के शिखर पर पहुचे, ताकि कोई भी व्यक्ति अपना हाथ दूसरों के आगे फैलाने की कोशिश न करे।

परतु खेद है सरकार द्वारा उन्नत विकास करने पर भी देश के कई भागो मे ऐसे भी महारथी आसन जमाये बैठे है जो रत्तीभर काम करना नही चाहते हैं। काम का नाम लेने और करने मे उनकी हड्डियां दुखती है यदि उनको हराम का खाना मिल जाये तो वे आनद मनाते हैं। आनद तो देखिए उन मिजाजियो का भाग की चिलम की कश लग रही है भाग की पकौडिया चल रही हैं दूध की गाढी चाय का एक हाथ भर का गिलास तोता मुह पर लगाकर लबी लबी डकार लेकर सरबत का सी घूट मारते रहते हैं। इन लोगो को भिक्षा मागने की आदत पडी रहती है। यदि आप इन लोगो से कह, कुछ काम करोगे महाशय व सुनने म देर अवश्य करते हैं परतु जवाब देने म देर नही करते। छूटते

झी मुह फाडकर—दात दिखाकर कहते हैं, हम तो मागन का वरदान है, इसी मे आनद है। जनाव, हीग लगे न फिटकरी रग निकले चोखा, समझे बाबू जी! मागने का वरदान है जैसे कुम्हार को घडे पाथने का, तेली को तेल अटरने का, नाई को बाल बनाने का, कूटनी को कूटन का और पीसनी को पीसने का। हमे तो भिक्षा मागकर खाना अच्छा लगता है। भिक्षा मागने म हम भले ही भगीरथ परिश्रम कर लेते हैं, परतु काम के मौके पर हम 'हीग लगे न फिटकरी रग निकले चोखा' वाला हिसाब करते है। अब आप ही बताए कि इन लोगो को किस प्रकार समझाया जाय, किस प्रकार इनको सही माग पर लाया जाय।

हा, एक बात और भी तो है। अगर कभी इन लोगो को समझाने वाली बात कह भी दो तो ये लोग आख दिखाकर बिगड पडते है या धूत कहकर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। क्या करे, समझ समझ का अकाल है। यही लोग जो परिश्रम करने म जी चुराते ह, ठग विद्या म इतने माहिर होते हैं कि इनके आगे मुरादाबाद के मशहूर ठग भी नाको चने चबाते है और बहादुरी म ये तीसमारखा से कम नही होते है। इन लोगो की जीती जागती चलती फिरती तसवीर प्रस्तुत है। उत्तराखड मे भ्रमण करने वाले ये लोग जो स्वय को ज्योतिष विद्या के महान प्रकाड बताते है, जो इस युग मे भी उत्तराखड के गाव-गाव म भिक्षा मागते व लोगो का ठगते फिरते रहते हैं। इन लोगो को हुआ क्या, शायद आधुनिक एव वैज्ञानिक यत्रीकरण युग का सूय इन लोगो के लिए उदय नही हुआ है। शायद आप लोगो का इन लोगो से वास्ता नही पडा है। भगवान न करे कभी आपकी मुलाकात इन महाशयो से हो परतु क्या करें, गाव के बुजुग भी इस युग म कम अधविश्वासी नही है जो प्राय इनकी ठगी जबान का शिकार होते रहते हैं। ये लोग अपने को माघे पानी से धुले ज्योतिष विद्या के महान विद्वान बताते हैं। इनकी वेश-भूषा तो देखिए कि य जनाबेआली किस मिजाज म टरके रहते हैं। एक हाथ म लबा लठा सिर पर सफेद पगडी पट्टा शरीर पर लबा चोला व रेवदार पाजामा दूसरे हाथ म चादी का बडा लोटा पावो मे डाग का जूता और माथे पर त्रिशूलनुमा तिलक वह भी लाल-सफेद मिट्टी

का। हा, तो ये जनाबआली किस तरह लोगो को अपनी ठगी जबान का शिकार बनाते हैं। इनकी बोली के कुछ नमूने मैं आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हू ताकि आपको भी इनके बारे मे कुछ ज्ञान हो जाय। यदि भिक्षा मागते समय इन लोगो को घर म वृद्ध स्त्री के दर्शन हो जाय तो ये देखते ही कहते है, हा, माई, तेरा भाग्य देखू, तेरा लाख देखू, तू बडी भाग्य वाली, बुड्ढे की प्यारी, बेटे से प्यारी, बहू की प्यारी, नाती की दादी, दे माई, दे। पिछले साल तूने मुझे पाच रुपये दिये थे। कहा था जब तू फिर आयगा तो मैं नाती होने पर तुझे बीस रुपये दूगी। दे माई दे, बीस का लाल पत्ता तेरे मायके वाले तो राजा है राजा, मैं वहा भी गया था। उन्होंने मुझे बीस रुपये देकर कृताथ किया। मने उनके जन्म कुडले बनाये थे। अब तेरे घर आया हू। दे माई, दे। तेरे घर म लक्ष्मी आने वाली है। एक सप्ताह लगेगा फिर देखना, तेरे घर राजाओ के घर मोतियो का कल्याण होने वाला है, दे माइ, दे। क्या कहा जाय, लोगो की भी ऐसी मत कटती है कि इन लोगो की गलत बात के पीछे खुश होकर उसको पाच रुपये और पाच किलो गेहू देकर कृताथ कर देते है। ज्योतिष का प्रकाड भी ऐसा खिसक जाता है जैसे छुपकर दूध पीने वाली बिल्ली। और यदि इसी प्रकार दो चार इन लोगो का घर म भिक्षा मागने के लिए जमघट लग जाय तो सुनिए फिर इनकी लचकदार बोली के कुछ नमूने। खास कर बुढ़िया को देखकर बोल पडते है 'माई तेरा बुड्ढा जीता रहे, उसकी सौ साल की उम्र हो।' चाहे भले ही बूढ़ा तीन साल पहले ही मर गया हो, परन्तु फिर भी उसकी सौ साल की उम्र हो। तेरा नाती डिप्टी बने, बनने वाला है और बाप पहले से गवनर है। भले ही बुढ़िया का नाती किसी दफ्तर म चपरासी हो और लडके का बाप दफ्तर मे फ्रास हो। माई तू तो राजा की बेटी है। माई दूध की गाढ़ी चाय पिला दे बिना दूध की मत पिलाना, शक्कर वाली नहीं, चीनी वाली लपटदार। दूध की गाढ़ी चाय म चीनी इतनी डालना कि चाय पीते समय हाथ भर का गिलासी तोता मुह पर लग और दाना होठ चिपक जायें।' सुना ज्योतिष के प्रकाड क्या कह रहे है? भले ही ये लोग दस दिन से चाय पीने को तरस रहे हो, परन्तु शौक तो देखिए इन मिजाजियो

का ! क्योंकि हराम का मिल रहा है न, इसलिए बिना दूध व चीनी के अलावा शक्कर की चाय नहीं पीयेंगे। चाय भी ऐसी जिसके पीने से दोनों हाठ चिपक जायें। यदि उनको पूछ दिया जाय, महाशय, भोजन करोगे ? हां कहने में देर नहीं लगाते है। छूटते ही कहते हैं, 'चावल व दाल के सिवाय हम कुछ नहीं खाते है। कभी कभी रोटी भी, रोटी भी चुपड़ी हुई और साथ में साबुन उड़द की दाल।

दाल भी ऐसी बनी हो जिसको थाली से उठाकर दीवार पर फेंक दिया जाय तो दाल दीवार पर ही चिपक जाय। चाहे भले ही इन लोगों को भूख से लगड़ पड़े हों परन्तु ये लोग अपना बनाया गीला भात और दाल ऐसी, जिसमें इन लोगों की सूरत नजर आ जाय, उसको नहीं खायेंगे दूसरों का बनाया हुआ फरफरा भात और दीवार पर चिपकने वाली दाल खाते हैं, हराम का। अगर इन मिजाजियों को फिर पूछा, 'महाशय, प्याज खाओगे ?' कहते है, 'हरी हरी !' 'मांस खाओगे ?' कहते हैं सिरी सिरी।' यदि इनको भिक्षा देकर कृतार्थ भी कर दिया जाये तो ये द्वार से दो कदम चलकर फिर वापस दरवाजे के आगे खड़े हो जाते है कहते हैं माई हम भूल ही गये थे। हम चार चार जने एकसाथ भिक्षा मांग रहे हैं, उन तीनों के बदले की भिक्षा तू मुझे ही दे दे। समझ गए ? जबान के जादूगर क्या चालाकी खेल रहे हैं, सुनी इनकी बात ? ले गया न एक अन्य तीनों के बदले की भिक्षा भी ! यदि कुछ समय बाद दूसरा जबान का जादूगर द्वार पर आ पड़ा तो उसकी अमृतवाणी से आप यही शब्द दुहराते सुनेंगे। हां यदि कोई इनके ठगने में न आया तो द्वार को छोड़ते समय मालूम है ये क्या कहते है ? यदि ज्योतिष का प्रकांड अकेला हो तो 'माई सब कुछ तो ठीक है परन्तु तेरे से एक बात कहना भूल ही गया हूं। माई तेरे पीछे राहू हाथ धोकर, सिर मुंडाकर, नाखून कटाकर, बाल बिखराकर नजर लगाकर, घुटन उठाकर व तेरी धोती पकड़कर लगा हुआ है। माई देख लेना तू कुछ दिना बाद बड़े संकट में पड़ जायेगी या पेड़ से गिरकर तेरी टांग टूट जायेगी या तू नदी में बह जायेगी। मैं उत्तरकाशी, हरिद्वार व बद्रीनाथ का प्रकांड ज्योतिषी हूं। यदि तू इस राहू से बचना चाहती है तो बच सकती है। मैं ही

हू एक ऐसा गुरु, जो तेरे पीछे हाथ धोकर लगे राहू को उतार सकता हू। अगर उतरवाना चाहती है तो अभी उतरवा ले। इस समय न तो तेरा बूढा घर पर है और न तेरा बेटा। जल्दी कर राहू को अभी ठीक कर देता हू।'

पुराने खयालात के पुराने लोग अंधविश्वास की जड होते है। देखा, पड गयी बुढिया भ्रमत मे! चल गया उसकी ठगी जबान का जादू! कराने लगी बुढिया अपने धोती का पल्ला पकडे राहू को ठीक, रोक दिया न बुढिया न ज्योतिष के प्रकाड को! यदि बुढिया ने उसका पूछ दिया, 'माई, राहू को ठीक कराने के लिए क्या-क्या सामग्री चाहिए,' तो सुनिए, भ्रमणकारी ज्योतिष के प्रकाड के मुख से 'माई, मैं हू ज्योतिषविद्या का महान पडित प्रत्येक पर लगे राहू का करता हू खडित। सामान चाहिए। बुढिया जल्दी कर, जल्दी फिर देर हो जायगी कोई आ जायगा, यही समय है राहू को उतारने का, सुन—दस किलो गेहू, दस किलो चावल पाच किलो उडद की दाल एक किलो चीनी चायपत्तियो समेत दो किलो नमक, दस रुपये भी, एक परात व कासा की थाली और कोई बूढे की गरम सूट हो तो उसे दे दे। हा भूल गया था, चादी या सोने का कोई मामूली टुकडा हो तो सोने मे सुहागा। बुढिया ने शुरू किया सामान जोडना। सामान जुडा। ज्योतिष के महाप्रकाड ने गलत मत्र पढे और दस मिनट मे उतार दिया बुढिया पर लगे राहू को। सारा सामान लेकर ज्योतिष का प्रकाड चपत! जाते समय पता है ज्योतिष का महाप्रकाड क्या कहता है 'माई अभी आता हू। यदि बुड्ढा घर पर आये तो बुड्ढे को कहना, अभी आया ढूढने का कष्ट न करना।'

अब आप ही सोचिए, बुढिया पर लगा राहू उतर गया या बुढिया पर राहू लग गया? कितने ठग होते हैं ये भिक्षा मागने वाले स्वय को ज्योतिष के महान प्रकाड बताते लोग!

एक बार जब आपातकालीन समय के अतर्गत नसबदी का घूमचक्र चला था तो उस काल इन जबान के जादूगरो की कोठी कपचा गयी। तब इनकी सूरत देखनी नामुमकिन हो गयी थी। जसे ही आपातकाल व नसबन्दी का घूम चक्र समाप्त हुआ इन महारथियो का फिर से गाव-

गाव मे जमघट लग गया। इन लोगो का कहना है कि यदि हम भिक्षा नहीं मागेगे तो हम पर देवता का दोष लगता है। देवता का भडारा करने के लिए हम लोगो को भिक्षा मागनी पडती है। ठीक है, मानत भी है, परतु देवता यह तो नही कहता कि तुम झूठी ज्योतिष विद्या से बहकाकर लोगो को गाव गाव मे जाकर ठगो! ऐसा तो किसी भी धर्मशास्त्र मे नही लिखा है। इन लोगो के कहने पर मुझे एक बात याद आयी। उत्तराखड मे तैलियू डाडा के कुटरीनाल के अतगत एक गाव है जो चारो दिशाओ से सघन वन से घिरा है। प्राचीन काल म इस गाव के लोग बोक्साडी विद्या के प्रकाड हुआ करते थे। वे मत्र के बल से बक्सू बनकर हर चीज को खा जाते थे। कहते हैं उनको भी किसी देवता का वरदान था कि यदि तुम बोक्साडी विद्या नही सीखोगे तो तुम कोढी हो जाओगे। परतु आधुनिक एव वैज्ञानिक युग म उनकी भावी सतान ने बोक्साडी विद्या सीखनी ही छोड दी है तो वे लोग कोढी क्यो नही हुए? इस बात से स्पष्ट होता है कि ये लोग मागने व गावो म लोगो को ठगने के सिवाय कुछ उद्यम नही करना चाहत हैं और न सरकार द्वारा विकसित किये गये उद्योग धधो से ही लाभ उठाना चाहत हैं जबकि सरकार ने पर्वतीय क्षेत्रो म अनेक कुटीर उद्योग धधो का विस्तार किया है ताकि प्रत्येक पढा लिखा व अशिक्षित ग्रामीण व्यक्ति अपने ही क्षेत्र म अपनी आजीविका कमा सके।

आपको ज्ञात है कि पर्वतीय क्षेत्रो म वन विभाग के अतगत कई लोगो को काम-काज मिल रहा है। जल प्रभाग द्वारा जल नलो द्वारा ऊची-ऊची पहाडियो से नीची नीची घाटियो की तलहटी वाले ग्रामो म पहुचाया जा रहा है। इसके अतगत भी कई ग्रामीण लोग रोजगार प्राप्त कर रहे हैं और भूमि सरक्षण विभाग, उजाड व बजर भूमि की टूट फूट की मरम्मत के साथ वृक्षारोपण कर रहा है और वृक्षो के बचाव के लिए चारदीवारिया फेर रहा है। यही नही बल्कि सरकार से बैंको के माध्यम से लोगो को निजी व्यवसाय चलाने या व्यवसाय विस्तार के लिए ऋण मिल रहा है। सरकार बागवानी के लिए अनुदान भी दे रही है। पर्वतीय क्षेत्रो मे नये नये मोटर मार्गों का निर्माण हो रहा है। इसके

फलतः सैकड़ो लोगो को रोजगार मिल रहा है और मिलता रहेगा भविष्य म भी। इतना ही नही, सरकार पर्वतीय क्षेत्रा मे ही नही बल्कि देश के सपूण ग्रामीण क्षेत्रो के लिए नये-नये कुटीर-उद्योगो का निर्माण करके उनका भविष्य विस्तार कर रही है ताकि ग्रामीण क्षेत्रा का पिछडापन दूर हो सके और देश समद्धिशाली बनकर बदलते समय के अनुसार देशवासियो का भविष्य भी बदले, उज्ज्वल भविष्य की ओर।

विद्या की जडी

मुझे बचपन मे वयोवृद्धा के मुह से कहानी सुनने की गाढी चाह थी। विशेषत शीतकालीन ऋतु निशाकाल मे रात्रिभोज करने के पश्चात् अगीठी के पास बैठकर आग तापते समय वयोवृद्ध के मुह से नाना प्रकार की कहानिया सुनने से एक तो मन मे विशेष आनद का अनुभव होता, साथ ही मानसिक ज्ञान का विकास होता। शीतकालीन ऋतु थी। निशाकाल मे सब बच्चे रात्रिभोज करके अगीठी के समक्ष जमघट लगाये थे। रात्रिभोज करके वयोवृद्ध भी योगी व महात्माओ की कही कहानी सुना रहे थे "महात्माओ के पास सब प्रकार की विद्या होती है। महात्मा बडे विद्वान होते है। हमारे देश मे बडे बडे महात्मा हुए है।'

मैं मध्य मे बोल पडा 'दादा जी स्वामी विवेकानद के समान विद्वान तो कोई भी महात्मा न था।"

दादा जी बोले 'तुम्हे कैसे ज्ञात हुआ ?'

मैंने कहा, 'दादा जी मैंने अपनी पुस्तक म पढा है।"

फिर दादा जी बोले, क्या पढा है तुमने स्वामी जी के विषय म मुझे भी उनकी विद्वत्ता के विषय मे कुछ ज्ञात करा दो।"

मैंने बडी उत्सुकता से कहा 'अच्छा सब श्रोतागण ध्यान स सुनो। एक बार स्वामी विवेकानद जी पानी के जहाज द्वारा इग्लैंड जा रहे थे। उनके साथ एक अग्रेज उपन्यासकार भी विराजमान थे। अग्रेज उपन्यासकार के हाथ मे उसके लिखे उपन्यास की पाडुलिपि थी।

' स्वामी विवेकानद जी ने नम्रतापूर्वक पूछा, आपके हाथ म क्या

है ? अंग्रेज उप यासकार ने जवाब दिया मेरे हाथ म मेरे लिखे अंग्रेजी उप यास की पाडुलिपि है।

" अंग्रेज उप यासकार से स्वामी जी न उप यास की पाडुलिपि पढन को मागी। अंग्रेज उप यासकार ने स्वामी जी को पढने के लिए अपन उप यास की पाडुलिपि दे दी। स्वामी जी ने प ने पलटने शुरू किय और प ने पलटत समय सारा उप यास पढ डाला। कुछ देर म जसे ही स्वामी जी ने उप यास की पाडुलिपि अंग्रेज उप यासकार को देनी चाही, अकस्मात स्वामी जी के हाथा से पाडुलिपि छूटकर समुद्र म गिर गयी। अंग्रेज उप यासकार ने क्रोधवश होकर स्वामी जी से कहा— आप मेर उप यास की पाडुलिपि दे दो, नही तो ठाक नही हागा। अग्रज उप यासकार की बात सुनकर स्वामी जो मुसकरात हुए बोले, 'मा यवर, आप नाराज न हो। आपके पास कागज और कलम ह ?' स्वामी जी की यह बात सुन कर अंग्रेज उप यासकार न कहा, क्या क्या करना ह आपको कागज और कलम का ?'

स्वामी जी बोले म आपका उप यास वैसा ही लिख दूगा, जसा आपन लिखा था। यह सुनकर अंग्रेज उप यासकार को बडा आश्चय हुआ आर वह सोचने लगा, देखू इस भारतवासी की विद्वत्ता को। यह भगवान तो नही है। कह रहा ह आपका उप यास वसा लिख दूगा जैसा आपने लिखा था। अंग्रेज उप यासकार ने स्वामी जी का कागज और कलम दे दिया। उसस कुछ दूर जाकर स्वामी जी ने एक घटे म हूबहू लिखकर उप यास अग्रज उप यासकार के हाथ म द दिया। जब अंग्रेज उप यासकार न स्वामी जी द्वारा लिखे अपने उप यास की पाडु-लिपि पढी तो वह बडे आश्चय म पड गया। उस उप यासकार ने पूछा श्रीमान आपका शुभ नाम '

" स्वामी जी मुसकराते हुए बोल, भारतवासी स्वामी विवेकानद मेरा नाम है।

स्वामी विवेकानद नाम सुनत ही अंग्रेज उप यासकार ने स्वामी जी के चरणा मे अपना सिर झुका दिया।"

मैंने कहानी सुनानी समाप्त की और वयोवृद्ध दादा बोले, "यह तो

तुमने बडी ज्ञानवर्द्धक कहानी सुनायी। तुम्हें भी स्वामी जी की इस कहानी से शिक्षा लेनी चाहिए। हमारे देश में स्वामी जी के समान अन्य महात्मा भी हुए हैं।"

मैंने कहा "दादा जी, आपने कहा कि महात्माओं के पास हर प्रकार की विद्या होती है। वे कैसे प्राप्त करते हैं हर प्रकार की विद्या को? क्या विद्या की भी कोई जडी होती है जिसे खाने या अपने पास रखने से उनको हर प्रकार की विद्या आ जाती है?"

दादा जी ने हसकर कहा ' बेटा, मुझे तो ज्ञान नही। न किसी से यह जानने की कोशिश की कि विद्या की भी कोई जडी होती है परन्तु महात्माओं की माया न्यारी! हो सकता है उनके पास विद्या की कोई जडी हो! हा, याद आया। कहते हैं कि उस समय मैं तीसरी कक्षा का आठ वर्षीय छात्र था। तब मेरा ध्यान पढाई लिखाई की ओर न लगकर महात्माओं के दर्शन हेतु विचलित हो उठा था और महात्माओं की प्रतीक्षा मे रत रहता था। सोचता रहता था कि कब गाव मे महात्मा पधारेंगे।

" यह स्वाभाविक है, जब विद्यार्थी पुस्तक में लिखे पाठ का ध्यान से अध्ययन ही नही करता है तो उसे पाठ याद होगा कैसे? मैं पढाई मे कमजोर होता गया और पाठशाला मे अध्यापकों की डाट खाता रहता था। कभी कभी तो घर से पाठशाला जाने का बहाना बनाकर आधी राह मे ही छुप जाता था। कभी कभी तो एक सप्ताह तक पाठशाला से अनुपस्थित रहता था और जब पाठशाला जाता था तो फिर अध्यापक द्वारा दडित किया जाता था। मैं पढाई लिखाई में बिलकुल जीरो हो गया।

" ऐसा क्या क्योंकि मेरा ध्यान चला गया कि महात्माओं के पास विद्या की जडी होती है। इसी कारण से महात्मा लोग बडे ज्ञानी होते हैं। जब महात्मा भिक्षा मागने के लिए गाव मे आयेंगे तो मैं उनको अधिक भिक्षा देकर उनसे विद्या की जडी ले लूगा और फिर कक्षा मे पढाई-लिखाई मे प्रथम स्थान प्राप्त करूगा। आशा और विश्वास पर ही मानव जीवन आधारित है। काफी समय गुजर चुका था। एक दिन

अकस्मात पाँच महात्मा भिक्षा माँगने के लिए गाँव में भ्रमण करते हुए दिखायी दिये। उन्हें देखकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं प्रमुदित होकर महात्माओं के पीछे हाथ धोकर पड़ गया 'चलो मेरे घर। मैं तुम्हें अधिक भिक्षा दूँगा।' महात्मा द्वार-द्वार जाते और मैं उनके पीछे पीछे चलता यही दुहराता 'चलो मेरे घर में उनसे भी अधिक भिक्षा दूँगा।'

पहले तो महात्मा चुप रहे फिर मेरी आतुरता को निहारते हुए बोले 'वत्स चलते हैं तुम्हारे घर पर। तुम थाल में भिक्षा रखो जाओ अभी पधारते हैं तुम्हारे घर में।' मैंने बड़ी उत्सुकता से कहा, 'बाबा, मैं तुम्हें अधिक भिक्षा दूँगा तो तुम क्या दोगे?' महात्मा मुसकराते हुए बोले 'वत्स जो तुम्हारी अभिलाषा है उसे पूर्ण करेंगे।' मैंने कहा 'ठीक है महात्मा जी क्या आपके पास विद्या की जड़ी है?'

यह सुनकर पहले तो महात्मा मेरे मुँह की ओर एकटक होकर देखते रहे फिर बोले 'विद्या की जड़ी, वत्स यह तुम्हारी कैसी अभिलाषा! विद्या की जड़ी होती है क्या?' कुछ उलझन में पड़कर मुझे प्रोत्साहित करते हुए महात्मा बोले 'हाँ वत्स हमारे पास विद्या की जड़ी है। जिन ग्रामों से हम लोग भ्रमण करते हुए आ रहे हैं, उन ग्रामों के छोटे छोटे तुम-जैसे पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विद्या की जड़ी बाँटते आ रहे हैं। तुम्हें भी विद्या प्राप्ति की जड़ी दे देंगे। चलो तुम्हारे द्वारे चलें।'

' मैं खुश होकर आगे आगे चलता और महात्मा मेरे पीछे पीछे। घर के द्वार पर पहुँचकर महात्माओं ने अलख जगाया। घर में बैठे वयोवृद्ध दादा बोले, 'बाबा सिद्धांत या भ्रमण?'

महात्मा बोले, 'बाबा जैसा आप समझते हो बालक जिद करके हमें अपने द्वारे लाया है। हमसे विद्या की जड़ी माँगता है।'

मैंने दादा जी से कहा, 'आप ही ने तो कहा था कि महात्माओं की माया न्यारी! हो सकता है, उनके पास विद्या की कोई जड़ी हो! हाँ याद आया। कहते हैं महात्माओं के पास विद्या की जड़ी होती है। भिक्षा देकर मैं भी महात्माओं से विद्या की जड़ी लेना चाहता हूँ।'

' अज्ञानतावश मैंने चुपके से भिक्षा के रूप में महात्माओं को चावल

आटा, दाल व घी दिया। तब मैंने कहा, 'महात्मन् अब आप मुझे विद्या की जडी दो।'

"महात्माओं के पास मोर की पूछ का एक लबा पख था। एक महात्मा ने उसी पख म से एक सुनहरा रेशा तोडकर मुझे दे दिया और कहा, 'वत्स, इसको अपनी पाठय पुस्तक के अदर रख दो। फिर देखो, तुम बहुत बडे विद्वान बन जाओगे।' मैंने बडी उत्सुकता से पूछा, 'महात्मन केवल पुस्तक के अदर इस पख के रेशे को रखकर मैं विद्वान् बन जाऊगा या अन्य उपाय भी करना पडेगा ?'

" महात्मा बोले 'हा, याद आया, प्रात काल उठकर हाथ मुह धोना, फिर बत्ती जलाकर जिस पाठ को तुम याद करना चाहते हो उसे दो या तीन बार पढना। शाम को भी हाथ-मुह धोकर बत्ती जलाकर अलग कमरे मे पुस्तक पढना। वत्स, तुम्हे सब आ जायेगा।' इतना कहकर महात्मा भिक्षा मागने के लिए ग्रामो की ओर अग्रसर हो गये।

"मैंने विद्या अध्ययन के लिए महात्माओं द्वारा बताया मार्ग अपनाया। धीरे धीरे मैं पढाई म बडा निपुण हो गया और कक्षा म प्रथम स्थान प्राप्त किया। सभी को ज्ञान है, विद्यार्थियो म कुछ विद्यार्थी बडे शरारती, जलनशील और उद्दड होते हैं। पाठशाला के विद्यार्थियो मे यह सनसनी फैल गयी कि उसने भिक्षा देकर महात्माओ से विद्या की जडी ले रखी है इसलिए पढ़ाई मे सबसे होशियार हो गया है। कल तक जीरो था। अब ऐसा काय करो कि उसकी पुस्तक से उस विद्या की जड को चुरा दो। फिर वह पढाई मे जीरो हो जायेगा और कक्षा म अध्यापक की मार खाता रहेगा।

पाठशाला स छुट्टी मिल जाने के पश्चात एक दिन मेरे कुछ सहपाठियो ने मुझसे कहा, 'तुम्हारे पास विद्या की जडी है दिखाना हम भी देखे महात्माओ की तुम्हे दी हुई विद्या की जडी। जब फिर कभी महात्मा गाव म आयेगे तो हम भी खूब भिक्षा देकर विद्या की जडी लेंगे।

"मैंने नि स्वार्थ भाव से उनको पुस्तक के अदर रखे मोर की पूछ का एक सुनहरा रेशा दिखाकर पुस्तक बद कर दी। तब स मेरे सहपाठी-

गण ताक म लग गय, कब मैं बस्ता छोडकर कक्षा स बाहर जाऊ और कब व विद्या की जडी निकाले। इस प्रकार वे ताक मे रहत और समय निहारते रहते थे। मुझे इस बात का ज्ञान न था कि मेरे कुछ सहपाठी मेरी विद्या की जडी चुराने का ताक मे ह।

' एक दिन पाठशाला के अर्द्धविश्राम काल म किसी काय हेतु अध्यापक ने मुझे पाठशाला स बाहर भेज दिया। लडके ताक म थे। समय न उनका साथ दिया। उन्होने मेरी पुस्तक से वही मोर की पूछ का सुनहरा रेशा निकालकर अपन पास न रखकर फेंक दिया। फेंका इसलिए कि कभी वह देख ले तो अध्यापक से हमारी पिटाई करवा देगा। नित्य की तरह मैंने विद्या अध्ययन के लिए शाम को हाथ-मुह धोकर वही पुस्तक खोली। देखा तो विद्या की जडी गायब थी। मुझे अपने सहपाठियो पर सदेह हो गया कि उन्होंने ही मेरी विद्या की जडी चुरायी है। उम्र मे आठ साल का था इसलिए बालक ही था।

" मैं जोर-जोर स रोने लगा। मुझे रोते हुए देखकर दादा जी न पूछा, अरे क्या रो रहे हो ? किसने मारा है तुम्हे ?'

' मैंने रोते हुए दादा जी से कहा, 'मेरे कुछ सहपाठियो न मेरी पुस्तक के अदर से विद्या की जडी चुरा दी है। अब मुझे विद्या कैसे आयेगी ?

' मेरे रोने म प्रबलता थी। मुझे शात करने के लिए दादा जी बोले, 'कल मैं महात्माओ की खोज म जाऊगा और तुम्हारे लिए वही विद्या की जडी उनके पास से ले आऊगा।'

दादा जी की बात सुनकर मेरा रोना तो बद हो गया लेकिन हृदय न माना। मैंने दादा जी से कहा, जब तक तुम विद्या की जडी लाते हो तब तक मैं क्या करू ?' दादा जी बोले, जैसा तुम्हे महात्माओ ने बताया है, जैसा तुम आज तक करते आये हो, वैसा ही सुबह शाम पुस्तक पढ़ते रहो।' मैंने पूछा, फिर मुझे वैसे ही विद्या आयेगी ?' दादाजी ने कहा, हा।

" मैं नित्य की तरह सुबह और शाम पढाई म जुट गया परतु दूसरे दिन दादा जी विद्या की जडी लेने के लिए महात्माओ की खोज म नही गये।

" मैंने कहा, 'दादा जी, कब जाओगे तुम विद्या की जड़ी के लिए ?'
" दादा जी बोले 'मूर्ख, उनके पास कोई विद्या की जड़ी नहीं होती है। वे तुम्हें बेवकूफ बना गये। तुम रोज की तरह अपनी पढ़ाई किया करो। फिर देखो, कैसे तुम्हें विद्या नहीं आती ?'
' मैं दुविधा में पड़ गया। मन में कुछ विश्वास और कुछ अविश्वास। फिर एक बार मेरा मन पढ़ाई में विचलित हो गया और मैं धीरे-धीरे पढ़ाई में निम्न स्तर की ओर बढ़ने लगा। बालक बड़े हठी होते हैं। इसलिए दादा जी की बात पर मैंने विश्वास नहीं किया। "

उत्तराखंड देवभूमि के नाम से विश्वविख्यात है। समय-समय पर बड़े-बड़े महात्माओं का उत्तराखंड के तीर्थस्थानों में आवागमन हुआ करता था। उत्तराखंड में सल्ड का महादेव एक बहुत प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। इस स्थान में प्राचीन काल का बना भगवान शिवजी का मंदिर है। शिव मंदिर में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यदि कोई ढोंगी महात्मा रात्रि काल में शिव मंदिर में निशा-निवारण करना चाहे तो वह पलभर भी वहां ठहर नहीं सकता है। जो असली योगी और शिवभक्त होगा, वही रात्रि को मंदिर में निशा काल व्यतीत कर सकता है वह भी केवल दस या पंद्रह दिन तक।
मेरी उम्र नौ साल की रही होगी। मैंने सुना कि सल्ड महादेव के शिव मंदिर में ऐसे एक महात्मा निवास कर रहे हैं जिनका शारीरिक रूप बड़ा विशाल और भयंकर है। कोई भी व्यक्ति उनके पास जाने का साहस नहीं करता। मैंने मन में सोचा, महात्मा के दर्शन करना हित-कर होगा परंतु वहां जाने के लिए किसी ने भी मुझे प्रोत्साहित नहीं किया। अकस्मात् एक दिन किसी कार्य हेतु कुछ गांव वालों के साथ मैं सल्ड महादेव जा पहुंचा। सल्ड महादेव पहुंचते ही मेरा मन महात्मा के दर्शन हेतु आतुर हो उठा। मैंने एक वयोवृद्ध से कहा, 'मैं बाजार-भ्रमण पर जा रहा हूं। कुछ समय पश्चात् लौट आऊंगा।' वयोवृद्ध मेरी बात से सहमत हो गये और मैं मन की लालसा लेकर शिव मंदिर में जा पहुंचा।

वास्तव मे जैसा मैंने सुना था, महात्मा का वही रूप देखा। महात्मा को प्रणाम करते हुए जब मैंने महात्मा के नेत्रो मे अपनी नेत्र ज्योति डाली तो मुझे ऐसा दिखायी दिया मानो सारा ससार महात्मा की आखो मे बसा हो। बालक होने के नाते महात्मा का शारीरिक वण निहारते हुए मैंने पूछा, "बाबा, तुम नगे क्यो ? तुम्हे ठड नही लग रही है ?" ऋतु शीतकालीन थी।

महात्मा मुसकराते हुए बोले, "नही वत्स।"

मैंने फिर पूछा, "बाबा, तुम क्या खाते हो ?"

महात्मा ने मुसकराते हुए उत्तर दिया, "वत्स, मैं कुछ नही खाता और न किसी का दिया हुआ खाता हू।"

मेंन फिर पूछा, "कब खात हो बाबा ? यहा तो घास की जडो के अलावा कुछ नही है।"

'पीने के लिए शिव कुड म पानी है और खाने के लिए घास की जडें ही विद्यमान है,' महात्मा बोले 'रात के बारह बजे घास की ही जडें खाता हू और प्यास बुझाने के लिए शिव कुड से पानी पीता हू।"

मैं महात्मा से बातो मे उलझ गया। मेरी बात काटत हुए महात्मा बोले, 'वत्स, मागो तुम क्या खाना चाहते हो ?"

मैंन कहा, 'बाबा, तुम कह रहे हो, मैं किसी का दिया किसी भी चीज को ग्रहण नही करता हू और न खाता हू तो आप मुझे कहा से दोगे ? तुम्हारे पास तो खाने के लिए कुछ भी नही है।"

महात्मा बोले, "वत्स मेरे पास सब कुछ है। तुम क्या खाना चाहते हो, गुड खाओगे ?'

बालक होन के नात मरा मन गुड खान के लिए ललच पडा।

मैंन कहा 'हा।"

महात्मा ने खाली थैले स गुड निकाला और मुझे द दिया। कुछ देर तक आश्चय म पडा मैं महात्मा को निहारता रहा। मरा अवलोकनावस्था का दखकर महात्मा न कहा, "वत्स चले जाओ। मुझे देर पर तुम्हे डर नही लग रहा है।"

मन कहा महात्मन आपक दशन हनु म यहा आ पहुचा और

आप कह रहे हैं कि तुम चले जाओ।"

महात्मा बोले, "तो ठीक है, वत्स, पपीता खाओगे?"

मैंने कहा, "हां।"

महात्मा जी ने अपने पास में पड़े राख के ढेर पर चिमटा मारा और एक पका हुआ छोटा पपीता राख के ढेर से बाहर निकला। महात्मा ने चाकू से पपीता के दो टुकड़े किये। खाने को एक मुझे दिया और दूसरा टुकड़ा स्वयं खाया।

मैंने महात्मा से कहा, 'आप तो कहते हो कि मैं किसी की दी हुई किसी भी खाद्य वस्तु को ग्रहण नहीं करता हूं तो फिर आपके पास यह पपीता और गुड़ कहां से आया है?"

महात्मा मुसकराते हुए बोले, "वत्स, मैं सब सिद्धि-साधक हूं। मैं सब विद्याओं का ज्ञाता हूं। मैंने हर प्रकार की विद्या को अपने मन-योग साधना के बल से सिद्ध किया है। कहो, तुम्हें क्या चाहिए?"

मैंने नम्रतापूर्वक कहा, 'महात्मन यदि आप मुझे देना चाहते हो तो मुझे एक अनमोल चीज दे दो। है आपके पास?'

अनमोल चीज सुनकर महात्मा मेरे मुंह की ओर एकटक होकर देखते हुए बोले, "वत्स, वह अनमोल वस्तु कौन सी है, जिसकी तुम्हें इतनी अभिलाषा है? उसका नाम बताओ अवश्य दूंगा।"

मैंने फिर नम्रतापूर्वक कहा विद्या की जड़ी।"

विद्या की जड़ी सुनते ही महात्मा नेत्र बंद करके शांतविलोकन होकर बड़ी देर बाद बोले, अच्छा, तो तुम्हें सरस्वती से अगाध मोह है? रुपये पैसों से नहीं? पैसे मांगते तो मैं तुम्हें पैसे देता, बाजार में जाकर चने खरीदकर चने चबाते।'

मैंने कहा "महात्मन् चने खरीदने के लिए मेरी जेब में चार आने है। उनसे चने खरीद लूंगा आप मुझे विद्या की जड़ी दो, पैसे नहीं।"

महात्मा मुसकराते हुए बोले, तुम कैसे बालक हो विद्या की जड़ी मांगते हो!"

मैंने नम्रता से कहा, "महात्मन, आप ही ने तो कहा कि 'वत्स, मांगो, तुम्हें क्या चाहिए। मुझे तो विद्या की जड़ी चाहिए।"

अनायास ही मेरे कण देश म दादा के कहे वाक्य गूजने लगे कि 'महात्माओ की माया न्यारी ! हो सकता है, उनके पास विद्या की कोई जडी हो ! हा, याद आया। कहते हैं, महात्माओ के पास विद्या की जडी होती है।'

मेरी बातो का सुनकर महात्मा ने मन ही मन म कुछ विचार किया। वे मेरे मन को सवत्र सकल पदार्थों के माग के लिए विचलित कर रहे थे परतु मैं एक बात पर अटल रहा, 'मुझे विद्या की जडी दो।' मैं महात्मा से जिद कर बैठा और महात्मा न भी मुझे अपना असली रूप दिखा दिया। महात्मा ने नेत्र बद करके कहा " वत्स, मैं तुम्हे विद्या की जडी दे रहा हू। जो खाने की नही है बल्कि ध्यान से सुनने की है। बिना साधन के तुम कैसे विद्या की जडी प्राप्त कराग ? वत्स साधना गुरु से बढकर है और गुरु साधना का दास है। वत्स तुम्हे भी साधना करनी होगी। विद्या प्राप्ति के लिए तुम्ह किसकी साधना करनी होगी, ध्यान से सुनो ! वत्स, मन से काम वासना और माया मोह का परित्याग कर भगीरथ प्रयास से विचलित मन को एकाग्र करके उस लक्ष्य स जोडो जिसकी तुम्हें लालसा है। तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी। इस योग साधना के प्रताप स हृदय मे ज्ञान की एक दिव्य ज्योति उत्पन्न होती है जो मानव को चराचर म परमारथ बना देता है। वत्स, जो ससार म बडे बडे सिद्ध पुरुष हुए हैं, उन्होने इसी योग साधना के बल से हर प्रकार की विद्या का जाप कर सिद्धिया प्राप्त की हैं। विद्यार्थी तभी विद्या प्राप्त कर सकता है जब वह अपने हृदय स काम वासना और माया मोह का परित्याग कर कठोर प्रयास से मन को एकाग्र करके विद्या अध्ययन म समर्पित करें। जो विद्यार्थी मन म काम वासना सजन कर अपनी ज्ञान इन्द्रिया को सुखमय जीवन स जोडते हैं व विद्या प्राप्त नही कर सकते ह।

" वत्स अज्ञान का सागर निशाकाल और ज्ञान का सागर अरुणोदय के समान है। मेरी मानो, विद्या की कोई जडी नही होती है। तुम मेरे बताये माग पर चलो जिस मैं तुम्ह बता चुका हू। विद्या प्राप्ति के लिए माग को अपनाने के लिए अन्य विद्यार्थियो का भी प्रोत्साहित करो वत्स यही विद्या की जडी है।'

अपना घर

जब कभी मैं कालू के कोल्हू घर से गुजरता तो कालू को कोल्हू पर जोते बैल को कुछ-न-कुछ कहता सुनता "चल बे चल, चल बे लल्ले, चल निठल्ले, चल चकाचक, ठेल धकाधक, चल हरियाणे के सडे, नही चलेगा तो खायेगा डडे, धत्तेरी की, ऐसी तसी सूरत है मरियल जसी।"

तभी मैं कहता 'अरे कालू, तेरी सूरत लडकी-जैसी धत्तेरी की ऐसी-तसी।" तभी कालू भाई बिगडकर बोलता 'लेखक साहब, आप हमेशा उल्टी बात बोलते हो।' मैं कहता, "ठीक तो कह रहा हू उचक्के, लुटेरा-लफगा कही का!" और काफी समय बाद जब कभी मैं उसके कोल्हू घर से गुजरता तो वही शब्द कालू के मुह से सुनता, "चल बे चक्के, चल निठुले।" तभी मैं फिर रुककर कहता, 'कालू भाई, कोल्हू चलाने मे बडे मस्त नजर आ रहे हो! लगता है, बूढा बैल बेच दिया है।"

कालू हसकर कहता, "लेखक साहब, आपने घाघ की कहावत पढी है? बूढा बैल और टाट पुराना बेच लिया तो वही सियाना'। भाड लाया हू साड! साड क्या है कि मसरी गाडी का इजन।' जब कभी मैं जानबूझकर कालू भाई के कोल्हू घर से गुजरता तो वह कहता 'देखा नही आपने मेरा डीजल इजन? लेखक साहब, जसे ही आप कोल्हू के तख्त पर बैठोगे तो लगेगा कि मैं दाडती मसरी गाडी की छत पर बैठा हू।' कालू ऐसा ही कहा करता था।

एक दिन मैंने कालू से कहा, 'देखू तेरे हरियाणा के साड को।'

कोल्हू घर के अदर जाकर देखा तो एक तिफुटा ठिगना बैल बेचारा कधे को तान तानकर कोल्हू को खीच रहा था। बैल की दीन दशा को निहारते हुए मैंने कहा, "कालू तेरे कम खोटे हैं। अरे मूक जीव के साथ कभी भी ऐसा नही करना चाहिए। तुझे इसका फल अवश्य मिलेगा। सुन ले कालू इसी बैल की बदौलत तू घर म चैन की वशी बजा रहा है। क्या, जैसी करनी, वैसी भरनी।"

मैं लिखन और सोचने मे व्यस्त रहता था, इसलिए मुझे घर से बाहर जाने का कम ही मौका मिलता था और जब कभी मौका मिलता था तो ग्राम सुधार के विषय म लोगो को ज्ञान बोध करवाता व स्कूल के बच्चो को पढाई लिखाइ के लिए प्रोत्साहित करता। कभी कभी अपने घर मे बच्चो को नि शुल्क शिक्षा भी प्रदान करता था। उनके लिए देश विकास व समाज सुधार के छोटे छोटे नाटक लिखकर उन्ही के द्वारा रगमच पर प्रदर्शित करवाता था। समय के अनुसार उनको फुटबाल व क्रिकेट का खेल खेलन को प्रोत्साहित करता था।

बच्चे बहुत खुश रहते थे। जब कभी म किसी काय हेतु गाव से बाहर जाता था तो बच्चे बेचैन हो जाते थे। गाव के सभी ग्रामवासी ग्राम-सुधार मे भाग लेते थे, परतु कालू भाई को अपने घर परिवार व कोल्हू के काय स फुसत नही मिलती थी। पूछो तो कहता था, 'अपना घर तो घर ही है, हमे क्या मतलब किसी से। मैं अपने बल को कष्ट देता हू तो किसी का क्या करता हू ?" बैल की ओर देखकर बोलता, "चल बे धक्के, चल निठुले।" फिर मुझसे कहता, लेखक साहब, आप बडे अजीब आदमी हो। अगर हम ग्राम सुधार मे भाग नही लेग तो क्या ग्राम-सुधार नही होगा। आप समाज-सुधार की बात ।

समय के अनुसार जब कभी मैं कालू को देखता तो वह कोल्हू के तख्त पर बैठा गीत गाता दीखता। कभी तख्त पर बैठकर जोर-जोर से बूढे बैल को डडे मारता। कभी भारी भारी पत्थरो को कोल्हू के तख्त पर रखता। कभी छोटे छोटे बच्चो को कोल्हू के तख्त पर बठाता। कभी तिफुटे बैल की पूछ मरोडता। कभी बैल का गोबर साफ करता। मुझे देखकर कहता, 'लेखक साहब, देख क्या रहे हो! बैल क्या है

कि तूफान एक्सप्रेस है।" इतना कहकर फिर तिकुटे बैल को जोर-जोर से डंडा मारता और बेचारा बैल टेढ़ी पीठ करके तेजी से घूमने लगता था।

एक बार मुझे पास में खड़ा देखकर कहने लगा, "[illegible], अगर मैं कोल्हू घर में मौजूद न भी रहूं तो बिना हांक दिये बैल [illegible] आप घूमता रहेगा।" तभी मैं कहता, "तू है कुकर्मी, [illegible] कुछ न कुछ कुकर्म किया होगा जिसके कारण बिना हांक दिये बैल [illegible] आप कोल्हू पर घूमता रहता है।" वह कहता, "अच्छा, देखो। [illegible] उतर जाता हूं। बैल बिना हांक दिये घूमता रहेगा।" [illegible] देखता रहा। जैसे बैल कोल्हू पर घूमता हुआ [illegible] से कोल्हू का तख्त बैल के पिछले पांव के घुटने पर [illegible] से घूमने लगता।

मैं नहीं समझ सका, तख्त बैल के पांव में [illegible] घूमने लगता है। बहुत देर तक मैं सोचता [illegible] मैंने जब कोल्हू के तख्त का निरीक्षण किया तो देखा [illegible] के तख्त की आखिरी नोक पर एक नवी [illegible] जब बैल कोल्हू पर घूमते घूमते थक जाता [illegible] तो तख्त [illegible] से बैल के पिछले पांव के [illegible] घूमने से बेचारा बैल तेजी से घूमने लगता।

कालू के बाप-दादा [illegible] कुकर्मी। उसे दुनियादारी से कोई सम्बन्ध नहीं है। [illegible] में जाय दुनिया। उसके लिए तो [illegible]

ऐसा देखा गया है कि जब [illegible] वस्तुएं साधारण रूप में उपलब्ध हों तो [illegible] दासता समझता है।

वास्तव में अपना घर स्वर्ग [illegible] से कोई मतलब नहीं था। ये [illegible] तीसरा वह कोल्हू का काम करता था और [illegible] लेता था। इसीलिए वह घमंडी भी था। [illegible]

और एक हाथ का नाकाम भी था। दु ख इस बात का था कि उसकी रुक रुककर बोलने की भाषा भी विचित्र थी। इसलिए तीनो भाइयो की पत्नियां उस लगड़े से जलती थी। उसे धक्का देकर गिरा देना तो उनका रोज का धंधा ही बन गया था। समय ऐसा आया कि इसी कारण तीनो भाइयो की पत्नियो मे आपस मे झगडा हो गया। वे अलग अलग परिवार बनाकर रहने लगे। बटवारा करते समय कालू के हिस्से म काल्हू नही आया। काल्हू लगडे को दिया गया ताकि अपग होने के नाते वह अपनी आजीविका कमा सके।

कालू के चेहरे पर उदासीनता की झलक बिखर चुकी थी मानो उसका सुखमय घर उसके लिए दु खमय बन गया हो। फिर भी वह गाववालो के साथ काम काज करके अपने अलग परिवार के साथ आनदमय जीवन व्यतीत करता था। उन लोगो के काम काज करने म विशेष आनद का अनुभव होता था। खेतो मे हल चलाने का तो वह 'मास्टर' था, इसलिए गाववाले उससे खुश रहते थे। बिना कहे किसी का काम कर देना और बाद मे काम के बदले मजदूरी लेना तो उसकी दिनचर्या ही बन गया था। कभी कभी मे उसको देखकर सोचता था, वास्तव मे परदेश से तो अपना घर प्यारा लगता है।

समय और भाग्य एक दूसरे के पहलू हैं। एक दिन कालू भाई मेरे पास आकर उदासीन स्वर म कहने लगा, "लेखक साहब आपको क्या बताऊ, मैं तो घर परिवार से परेशान हू।"

मैंने पूछा, "क्यो क्या बात है ? तुम तो सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हो। पहले से भी अच्छा कमा लेते हो। स्वतत्र जीवन व्यतीत कर रहे हो। किसी की ताबेदारी भी नही कर रहे हो तो फिर कौन सी ऐसी परेशानी है जो तुम्हे दु ख दे रही है ?"

कालू कहने लगा, ' लेखक साहब, मेरी पत्नी मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी है कि तुम नौकरी करने के लिए दिल्ली चले जाओ। गाव म बढ-कर सुखमय जीवन तो मनुष्य शहरो मे व्यतीत करता है। है न औरतो का दिमाग खराब ! अच्छा भला यहा पर अपना और बच्चो का पालन-पोषण हो रहा है और वह कह रही है, दिल्ली चले जाओ।'

एक सप्ताह बाद दिल्ली से कुछ नौकर चाकर ठाट बाट के साथ गाव मे आये। उनकी शहरी वेश-भूषा देखकर कालू का मन भरमा गया। कहने लगा "वास्तव म दिल्ली जाकर नौकरी करनी चाहिए। ठीक ही कह रही है पत्नी। दिल्ली के लाग ऐसे लग रहे हैं मानो गवनर हो।"

मैंने कहा, 'कालू भाई, तुम भी दिल्ली चले जाओ और बन जाओ गवनर ! पर काल, तू गवनर नही बन सकता है। अतपढ़ भला गवनर बन सकता है ! हा, मन से, पद से नही।

'मैं तो आठवी पास हू लेखक साहब !'

मैंने उस चिढाते हुए कहा 'कालू तेरा और इन लोगो का होगा मेल कैसा ?"

"लेखक साहब आप हमेशा उलटी वात कहते हो। भाग्य और समय—करायेगा मेल जसा।'

समय आया। कालू एक मित्र के साथ दिल्ली चला आया। दिन म दिल्ली की सुदरता और रात म बिजली की चकाचौध ने कालू का मन मोह लिया। शायद तब उसन मन म सोचा होगा पत्नी न ठीक ही कहा था, 'दिल्ली ता अपने सुखमय घर से भी बढकर है।

अक्सर मैं देखता, कालू अपने मित्र के साथ दिल्ली की ऊची ऊची इमारतो का निहारता रहता। कभी मदारी का खेल देखता, और कभी कठपुतलियो का खेल निहारकर भौचक्का रह जाता। कभी सर्कस के कलाकारो के अनाखे करतबा का देखकर दातो तले अगुली दबाता। कभी बदरो का नाच देखता। इस प्रकार के मनमोहक दृश्य दखकर कालू अपना सुखमय घर, जिसे वह दु खमय समभने लगा था, भूल गया। शहरी युवतिया के खूबसूरत चेहरो पर उसका मन इतना रीझ गया कि बेचारा अपनी पत्नी को भी भूल गया और जब कभी वह अकेलापन महसूस करता था ता उसे बच्चो व पत्नी की याद उसके मन से होकर उसकी आखो के आगे उनकी तसवीर उतारकर लोप हा जाती।

उसे बहुत कुछ करने को सूझती थी परतु भाग्य उसके विपरीत था। फिर भी उसने हिम्मत न हारी। नौकरी की तलाश म कालू

दिल्ली मे भ्रमण करता परंतु सब व्यर्थ। कभी बहुत दुखी होकर सोचता, 'मुझे दिल्ली म काफी समय बीत चुका है। पत्नी और बच्चे मेरे विषय मे क्या सोच रहे होगे।' यह सोचकर उसका मन दुःख से बेचैन हो उठता।

समय के साथ कालू भी बहता चला गया। एक दिन वह अकस्मात मुझे मिला। कहने लगा "लेखक साहब, घर से मेरी पत्नी का पत्र आया है। लिखा है, तुम पैसे भेजते हो या नही। मेरा और बच्चा का भूख से बुरा हाल हो रहा है। पेट पालने के लिए यदि मैने कोई कदम बढाया तो तब मुझे कुछ न कहना या तुम घर आओ और अपने बच्चा को सभालो। मैं जा रही हू।" कालू दुविधा में पड गया, मैं स्वय इस समस्या पर कुछ सोच न सका।

वास्तव मैं भगवान के सिवाय कोई भी व्यक्ति किसी की परिस्थिति नही जानता है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के पीछे-पीछे किन किन परिस्थितिया से गुजरता है इस विषय मे मनुष्य ज्ञान नही कर सकता है और अज्ञानवश एक दूसरे के प्रति मन म गलत धारणा ले बैठता है। अपने से दूर अपने पति की स्थिति को ठीक से न जानकर कई पत्निया अपने पति के विरुद्ध गलत कदम उठा लेती है।

प्राय ऐसा देखा गया है कि दूसरे लोगो के बहकावे मे आकर पति की वास्तविक स्थिति को न जानकर बहुत सी पत्निया ऐसा गलत व्यवहार या कदम उठा लेती हैं जिसके कारण पुरुष को अपना सुखमय घर हमेशा के लिए त्यागना पडता है जबकि संगिनी के लिए यह कार्य उसके पति धर्म के विरुद्ध है। और साथ ही ऐसा भी देखा गया है कि कई पत्निया कठिन से कठिन परिस्थिति म पुरुष को धैर्य देती है और डटकर कठिन परिस्थिति का मुकाबला करती हैं।

कुछ समय बाद मैं दिल्ली से दूर चला गया और लबे समय के बाद फिर दिल्ली वापस आया। कालू मुझे मिला, रोते हुए बोला, 'लेखक साहब कल एक भाई गांव से आया है। उसने कहा कि मेरी पत्नी ने मेरे विषय म कुछ ऐसी चर्चा की है कि जिसे सुनकर मेरा दिन का जागना और रात का विश्राम भय भ्रम से बेचैन हो जायेगा। सुनूगा

तो मेरी मानसिक और शारीरिक अवस्था पर उन बातो का गहरा कुप्रभाव पडेगा और चौबीस घटे सोचता रहूगा—यह क्या हो गया, ऐसा क्या ?"

मैंने पूछा, "क्या कहा तुम्हारे विषय मे ?"

कालू कहने लगा, "भाई, सुनोगे तो दु ख के साथ भयभीत हो जाओगे।"

उसकी कही बातो को सुनकर मेरा हृदय भय-भ्रम से काप उठा।

कालू की बात सुनकर मेरी तो रात की नीद और दिन का जागना भय-भ्रम से बेचैन हो गया। सोचा ऐसा सुनकर इतना बुरा हाल तो मेरा हो गया, बेचारे इस कालू भैया के मन मे क्या गुजर रही होगी। वास्तव में सही कहा है—'जिस पर गुजरती है, वही जानता है।'

उसके हृदय मे भरा दु ख उसके शरीर पर झलक रहा था। दु ख-मय जीवन के साथ साथ वह मौत का भी पग पग पर सामना कर रहा था। उसका दिमागी सतुलन इतना बिगड चुका था कि कई बार तो वह सडक पर चलते समय दुर्घटनाग्रस्त होने से बच जाता, शायद सोचते-सोचते—'क्या करू, कहा जाऊ, घर जाऊ या न जाऊ ! या कही दूर चला जाऊ या अपना लापता कर दू या और कुछ।'

कालू उठकर चला गया। उसकी कही बातें मेरे हृदय मे घर कर गयी और जब कभी मैं उसकी कही बातो को भुलाने का प्रयास करता तो वही बातें मेरे कर्ण देश म रुक-रुक गूजने लगती—उसे तू । उसके जीवन के दिन । मैं तुम्हारे लिए । उस मैं अब वह कितने दिन '

समय अधिक गुजर गया था। एक दिन राह चलत समय अचानक कालू मुझे मिला। कहने लगा, "लेखक साहब, दिल्ली मे सब देखा परतु हवाई जहाज का मैदान नही देखा। देखने की लालसा है। देखना चाहता हू, कसे हवाई जहाज उडत है और कसे उतरत ह। म अवश्य एयर पोट देखने जाऊगा।"

कुछ समय पहले मैंन समाचारपत्र म पढा था कि एयर पोट पर कोई चोरी हुई थी। मैंन कालू स कहा, 'यदि तू हवाइ अड्डा देखने

जायेगा तो किसी भी चीज की ओर अगुली स इशारा न करना।"

दूसरे दिन कालू भाई हवाई अड्डा देखने चला गया। उडते और उतरत जहाज कालू को बहुत भाये। शायद खुश होकर बेचारे ने जहाजो की ओर अगुली से इशारा कर दिया। पुलिस न उसे चोर समझकर मारा और बाद मे तिहाड जेल भेज दिया। कुछ महानो तक मुझे कालू के विषय मे कुछ भी ज्ञात न हुआ कि बेचारा समय के साथ कहा और कैसे जीवन व्यतीत कर रहा है।

काफी समय गुजर चुका था। सर्दिया का मौसम था। एक बार एयर पोट पर वाइलोन मेले का आयोजन हुआ। लेखक व सपादक होने क नाते मैं भी मेले म शामिल हुआ। देखन वालो की भारी भीड थी। अचानक एक नवजवान युवक ने अपने देहाती मित्र से कहा, "भाई, *किसी भी वस्तु की ओर अगली स इशारा न करो।* दो माह पहले इसी तरह अगुली के इशार पर पुलिस ने चोर समझकर एक युवक को पकड-कर जेल भेज दिया।'

यह सुनकर मेरा ध्यान कालू की तरफ खिच गया। बहुत पहले उसन मुझे कहा था, एयर पोट जाकर उतरते और उडते हवाई जहाजो को देखन जाऊगा। शायद कालू वहा गया और अगुली के इशारे पर पकडा गया हो।

कुछ दिना पश्चात पूछताछ करके मैंने कालू का पता लगा लिया। देखा तो *कालू का घर कारागार था।* पास जाकर मैंन कालू से पूछा, "क्या हाल है भैया, यहा कैसे पहुच?'

मुझे देखकर कालू फूट फूटकर रोते हुए कहा लगा, "लेखक साहब, परदेश मे एक छोटी सी गलती मनुष्य को क्या क्या भोगने को मजबूर कर देती है! मै कितना दुर्भाग्यशाली हू जो पत्नी के कहने पर घर का अच्छा-भला धधा छोडकर नौकरी करने के लिए दिल्ली आया। घर-परिवार वाले तो सोच रहे होंगे' नौकरी कर रहा होगा और मैं यहा "

वास्तव म समय देखकर मानव को चलना चाहिए, तभी मानव का जीवन सुखमय और सार्थक बन सकता है।

फिर सिसकियां लेते हुए वह कहने लगा, "लेखक साहब, कौन मुझे इस नरक कुंड से मुक्त करायेगा ?" मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा, "मैं तुम्हें यहां से मुक्त कराने आया हूं।" मेरे ये शब्द सुनकर कालू के उदासीन चेहरे पर खुशी की विचित्र लहर दौड़ पड़ी। उसके नयनों से अपनत्व का नीर छलकने लगा।

कालू स्वतंत्र था। विह्वल होकर कहने लगा, "लेखक साहब, वास्तव में ऐसी परिस्थिति में गैर मनुष्य भी जो किसी की सहायता करता है, वह उसका सच्चा मित्र कहलाता है।"

फिर कालू नौकरी की तलाश में जुट गया। इस कर्मयोग में उसने काफी समय बिता दिया। परंतु कालू को नौकरी न मिली, इसी परेशानी से कालू एक लंबे समय तक नदारद रहा।

समाचारपत्रों के कार्यालयों व संपादकों से मेरा संबंध था और अब भी है। एक बार मैं 'दैनिक हिंदुस्तान' समाचारपत्र में अपना लेख प्रकाशित कराने के लिए जा रहा था। कार्यालय के बाहर अचानक मेरी भेंट संपादक जी से हो गयी। मैं बातों में संपादक जी से गुथा हुआ था। अनायास ही मैंने निकटतम होटल के बाहर कालू को एक प्लेट में दाल व बासी रोटी खाते देखा। उसकी शारीरिक अवस्था बिगड़ चुकी थी। शरीर पर मैला कुर्ता पाजामा व पांव में टूटी चप्पल उसकी दीन दशा का परिचय दे रही थी। संपादक जी से बातें समाप्त कर जैसे ही मैं जाने लगा, कालू मेरे पास आकर कहने लगा, "लेखक साहब, नमस्ते। क्या मुझे भूल गये हो ? मेरे तो कुहाल हो गये हैं। सुबह के चार बजे उठना पड़ता है और रात के बारह बजे सोना पड़ता है। आराम का नाम ही नहीं। जूठे बर्तन मांजते-मांजते तो मेरे हाथ सड़ गये हैं। देखो, मेरे हाथ कैसे हो गये हैं ! क्या करूं ?" यह कहकर फिर फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी हीन दशा को देखकर मेरा हृदय भर आया। मैंने कहा, "भाई, घर चले जाओ।" फिर उसने रोते हुए कहा, "मुझे एक भाई ने कहा कि मेरा घर की हर चीज से संबंध विच्छेद कर दिया जा रहा है।" यह सुनकर मैं चौंक गया, पूछा, "ऐसा क्या किया है तुमने ?

कुछ समय पश्चात मैं घर चला गया।

काफी दिनों बाद मैं दिल्ली आ गया। घर के समाचार मालूम करने के लिए कालू मेरे पास आकर कहने लगा, "क्या हाल है मेरे परिवार का?"

कई बातों को काटते हुए मैं उसे समझाने लगा। मुझे ऐसा लगा कि उसकी आखो मे उसके सुखमय घर का हृदय तसवीर के रूप मे उभरकर विलीन होता जा रहा हो और वह सोचता चला जा रहा हो।

काफी समय गुजर चुका था। एक दिन मैं 'नवभारत टाइम्स' समाचारपत्र के दफ्तर म जा रहा था। फुटपाथ पर अखबार बेचते हुए मुझे कालू की आवाज सुनायी पडी, "बाबू जी, ले लो 'अपना घर' पढ लो। अपना घर' खरीद लो बाबू जी, 'अपना घर।'"

मै उसी की ओर चल पडा। देखा तो कालू खुश नजर आ रहा था। नमस्ते कहते हुए कहने लगा, "लेखक साहब, आज तो मैंने बहुत अखबार बेच दिये हैं, पूरी गाडी। आपकी कहानी अपना घर' लोगो को बहुत पसद आयी। मैंने काफी पसा कमा लिया है। अब मैं घर जाना चाहता हू।"

मैने पूछा, 'कितना पैसा कमा लिया है? घर जाकर पल जायेंगे बच्चे?"

कमाने की बात सुनकर कालू हसने लगा और कहने लगा, "पाच सौ रुपये।"

उस काल उसकी खुशी अनमोल था और मेरी उदासीनता उसकी मुनीपन से बेजोड थी।

समय पलट गया। काल चक्र मेरे आगे पीछे भौंरे की तरह मड राने लगा। सब कुछ होते भी मेरे पास कुछ न रहा। कभी कार्यालय काय से आगे पीछे दो दो कारें घूमा करती थी, अब काल चक्र उनका स्थान ले बैठा था। फुटपाथ पर खडा म सोच रहा था कि जिस प्राकृतिक सौंदय से मुझे अगाध मोह था वही प्राकृतिक सौन्दयमय गाद मेरे लिए मौत का घर बन गयी। कारण था 'अपना घर'। क्या करता, प्रकृति का सुखमय जीवन मेरे लिए दु खमय बन गया था। भाग्य मुझको दुखान नाटक

खेल रहा था और मैं मानव की ममता और प्रकृति की सौन्दर्यमय गोद से बिछुड गया।

इसके बाद समय के साथ मैं संघर्ष करता रहा। परन्तु भाग्य मुझे अजीब खेल खिला रहा था। अनायास ही मुझे काल्हू बाग में मिला। उसके चेहरे पर उदासीनता झलक रही थी। ध्यान एकाग्रचित्त करके भाव विभोर होकर उदासीन स्वर में बोला "लेखक साहब हम कितने भाग्यशाली हैं जो हमारा जन्म देवभूमि में हुआ है! हमारा घर स्वर्गधाम है। हम बुरुंश और फूलों की घाटी कितनी अच्छी लगती है! बहते नदियों की कल कल निनाद व ऊँचे गिरि-कन्दराओं से गिरते झरनों की झर झर ध्वनि प्राकृतिक सौन्दर्य को कैसा विचित्र मर्मातमय करती है! सावन व भादो मास के दोपहर में नदी-तटों व वन कन्दराओं के मध्य गूंजती कुक्कू की सुरीली आवाज किसका मन नहीं मोह लेती है! असूज माह में खलिहानों में कृषकों की चहल पहल व मोहिनी हरित घाटियों में गीत गाते घसियारियों की सुरीली लय, ग्रीष्मकालीन ऋतु में ऊंची ऊंची वन चोटियों व नदी-तटों को छूते मानसूनी बादल कितने अच्छे लगते हैं!

ग्रीष्म व शीतकालीन ऋतु में जंगलों में वन्य जीवों का विचरण, घरों में बच्चों की किलकारियां, चरागाहों में पशुओं का चरना, भेड़ बकरियों का सियार से बचाना, सियार के पीछे कुत्ते दौडाना, कुत्तों को परस्पर लडाकर उनकी हार जीत देखना, चोरी छिप एक दूसरे के मुर्गों में लड़ाई कराना, खेतों से बालियों में गाफले लाना, फागुन माह में खेतों में हल चलाना व बसंत ऋतु में प्रकृति का यौवन कितना भाता है मानो वह सब कुछ स्वप्न में देखा हो!

फिर भाव विभोर होकर उसका ध्यान काल्हू के बैल की ओर खिंच गया मानो कोल्हू के बैल के साथ किये श्रम कांड उसकी आंखों के आगे तसवीर के रूप में उभरते चले आ रहे हों और उसके दुःखी हृदय को कोसकर विलीन होते जा रहे हों! विचलित मन से फिर कहने लगा "लेखक साहब कर्म तो मेरे खराब रहे। मेरी करनी मेरे आगे आयी। इस कर्महीन को दुःख के सिवाय सुख कहां से प्राप्त होगा!

"जो मनुष्य दूसरों को दुख देता है, उसे सुख की प्राप्ति कभी भी नहीं हो सकती है। यह प्रकृति का नियम है अब मुझे इस बात का ज्ञान हुआ है। कुछ दिनों बाद मैं घर चला जाऊंगा।

बहुत समय बाद समय देखकर मैं भी गांव चला गया। अकस्मात् एक दिन मैं कालू के कोल्हू घर से गुजर रहा था। मुझे कालू की आवाज सुनायी पड़ी चल बे चकव चल निठल्ले, धत तेरी ऐसी की तैसी सूरत है मरियल जैसी।

मैंने कदम रोकते हुए विस्मय से कालू की ओर देखा, कालू मुसकरा रहा था। देखते ही कहने लगा, लेखक साहब अब मैं भ्रम-मुक्त, सुखमय हूं। *अब परदेश जाने का कभी भी नाम न लूंगा।* नाक रगड़ता हूं। न बैल को सताऊंगा। घर तो अपना ही प्यारा लगता है। है न सबसे सुखमय अपना घर?

□□

शुद्धि पत्र

पृ० सं०	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
2	22	खेत्रपाल	छेत्रपाल
4	21	लडके दु ख	लडके वे दु ख
5	10	मैंने	मैं
6	9	चल	चर
10	8	आ आये	आ जाये
12	23	बाघ से	बाघ के
25	1	भालू	मालू
29	15	चौडे	चौड
42	3	काम	काल
42	15	काठी	कोठी
60	3	झियार	झिमार
60	17	कुठिजा	कुठिला
61	8	प्रभावित	प्रवाहित
64	21, 22	पर्वीनयार	पूर्वीनयार
65	3	पहले	बहते
71	27	लठा	लट्ठा
92	13	पीछे-पीछे	पीठ-पीछे
94	12	दस्यु	वस्तु
96	6	हृदय	दृश्य
97	14	ग्रीष्मकालीन	सगरकालीन

नोट प्रेस की असावधानी के कारण पुस्तक में कुछ अशुद्धियाँ रह गयी हैं, अत पाठकों से अनुरोध है कि पढ़ने से पहले शुद्धि पत्र से अशुद्धियों को शुद्ध करके पढ़ें।

हमारे कुछ नये प्रकाशन

□ **उपन्यास**

अपने लोग	रामदरश मिश्र	100
हीरामन हाई स्कूल	कुसुम कुमार	100
आहों की बैसाखियां	दिनेशनंदिनी डालमिया	65
उम्र एक गलियारे की	*शशिप्रभा शास्त्री*	75
प्रत्यक्षदर्शी	जितेन्द्र भाटिया	40
सपन राग	राकेश वत्स	42
नीलोफर	कृष्णा अग्निहोत्री	42
आगे के पीछे	बटरोही	40
आगे और आगे	*डॉ हरिदत्त भट्ट शैलेश*	*30*
देश के दुश्मन	*मोहन लाल भास्कर*	*24*
छत पर अपर्णा	इला डालमिया	31
मान्या गति	प्रेम लाल भट्ट	55
प्रीति	प्रेम लाल भट्ट	40
मन ने जो देखा	सतीश दत्त पांडेय	30

□ **कहानी-संग्रह**

पगला बाबा	गोविन्द मिश्र	20
यात्रा-मुक्त	राजी सेठ	26
महानगर की मैथिली	सुधा अरोड़ा	25
दहलीज पर न्याय	चंद्रकांता	30
तमाशबीन	नरेन्द्र नागदेव	30
सारलादास कथा-सागर	सं शंकरलाल पुरोहित	35
मेघना का निर्णय	मिथिलेश्वर	22
बंद रास्तों के बीच	मिथिलेश्वर	30
बाबू जी	मिथिलेश्वर	32
माटी की महक धरती गांव की	मिथिलेश्वर	42
कब तक	कमलेश बख्शी	30